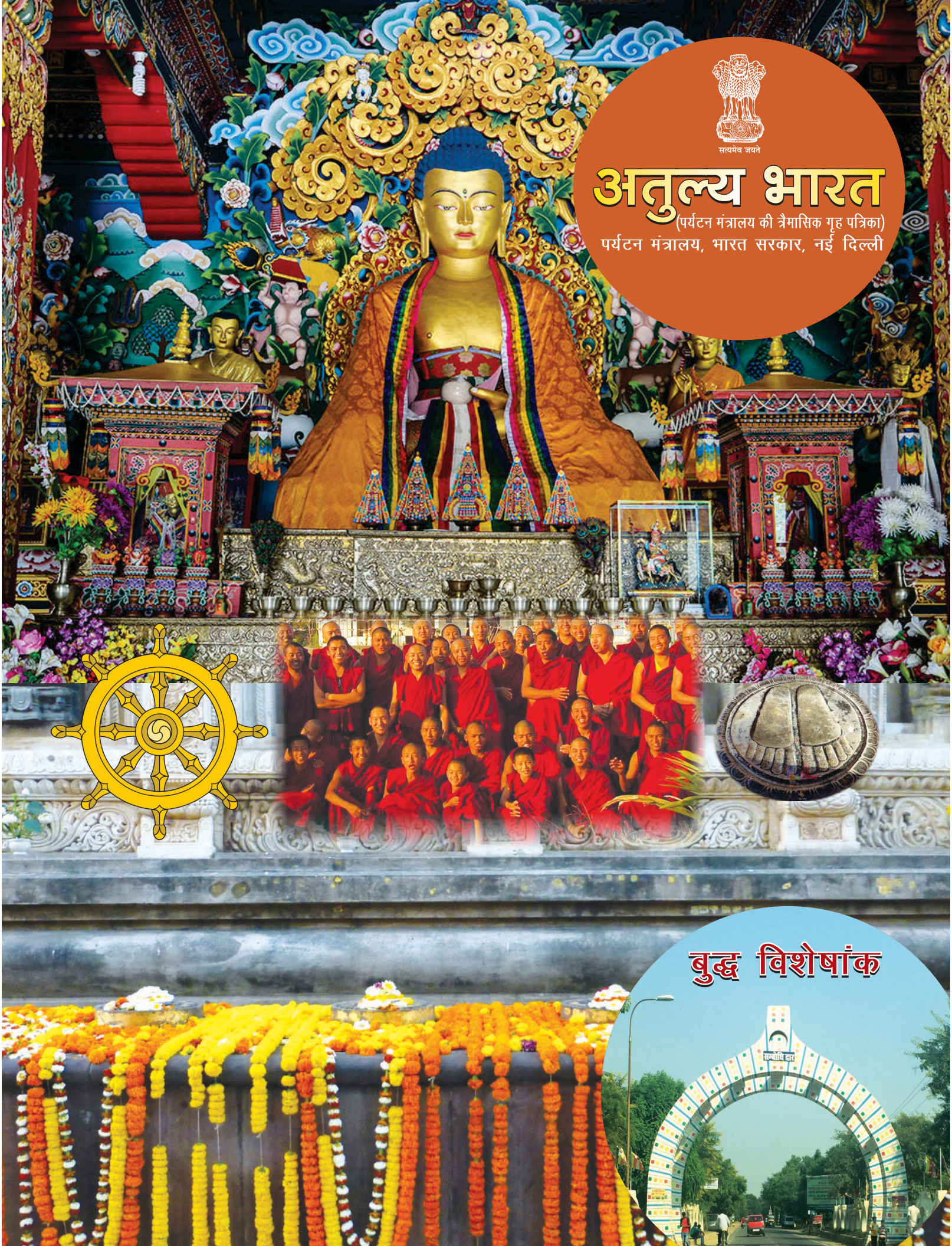

सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

बुद्ध विशेषांक

बच्चो, आज हम सभी गया के इस महाबोधि वृक्ष के पास खड़े है और मैं तुम्हें इस वृक्ष की विशेषता बताता हूं।

यह एक विशाल पीपल का वृक्ष है। महाबोधि मंदिर के ठीक पीछे, यानि मंदिर के पृष्ठ भाग की दीवार के पास यह बोधि वृक्ष है, जिसके नीचे महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। वर्तमान में जो बोधि वृक्ष है यह पुराने बोधि वृक्ष की पांचवीं पीढ़ी है।

पिंकी–सर हमें भगवान बुद्ध के उपदेशों के बारे में कुछ बताएं।
सर–हां बिल्कुल। मैं तुम सभी को भगवान बुद्ध के पांच उपदेशों के बारे में बताऊंगा

बच्चो यह भगवान बुद्ध की प्रतिमा है। अब मैं तुम्हें इनके उपदेशों के बारे में बताता हूं जो तुम्हारे दैनिक जीवन में काम आएंगे।

1. क्रोध : आपको क्रोध की सजा नहीं मिलती है बल्कि आपको क्रोध से सजा मिलती है।
2. सच नहीं छिपता : दुनिया में तीन चीजों को कभी नहीं छिपा सकते– सूर्य, चन्द्र और सच।
3. लक्ष्य : मंजिल या लक्ष्य को पाने से अच्छा है यात्रा अच्छी हो। हज़ारों शब्दों से अच्छा वह एक शब्द है जो शांति लाता हो।

4. बुराई : बुराई से बुराई को कभी ख़त्म नहीं किया जा सकता। बुराई हमेशा प्रेम को समाप्त कराती है।
5. क्रोध : क्रोधित होने का मतलब है जलता हुआ कोयला किसी दूसरे पर फेंकना। जो सबसे पहले आप को ही जलाता है।
प्रस्तुति- विश्वरंजन
सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर
पर्यटन मंत्रालय नई दिल्ली
ईमेल- vishwranjan@yahoo.com

सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

- संरक्षक : **श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : **ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- संपादक : **श्रीमती सन्तोष सिल्पोकर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रबंध–संपादक : **मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय**
- अन्य सहयोगी : **राज कुमार, राम बाबू**

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक,
अतुल्य भारत
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली – 110011
ई–मेल– editor.atulyabharat@gmail.com
दूरभाष 011–23015594, 23793858

निःशुल्क वितरण के लिए

डॉलफिन प्रिन्टो–ग्राफिक्स
झण्डेवालान एक्सटेंशन
नई दिल्ली से मुद्रित
011–23593541–42

इस बार पढ़िए.......

o"k 3 vd 12 viy&tu] 2018

प्रधान संपादक की कलम से... v

2 ओडिशा में बौद्ध धर्म और धौलिगिरी

मानवता का मूल मंत्र–अतिथि देवो भवः 8

11 बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग–एक परिचय

राजस्थान
यहां मुस्कुराए थे बुद्ध 14

हरियाणा
यहां भी मुस्कुराए थे बुद्ध 20

केरल में भी मुस्कुराए थे बुद्ध 27

जब देश में बुद्ध मुस्कुराए! 33

भगवान बुद्ध और कुशीनगर 38

कविताएं
मेरे सपने में अतुल्य भारत 41
तुम्हारी याद में
चाकरी 42
बीस बरस पहले की फोटो

जातक कथा

43

भारत की एक अनोखी पहचान

45

57 कौआ डोल पहाड़ी के प्राचीन मंदिर अवशेष

महात्मा बुद्ध के शिक्षाप्रद वचन 63

64 रणथम्भौर नेशनल पार्क

70 रसगुल्ला बंगाल का

73 देव का सूर्य मंदिर

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां एवं समाचार 79

सुघ (हरियाणा) में प्राप्त भगवान बुद्ध की आकृतियां

↓

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

iz èkku laiknd dh dye ls---

पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका 'अतुल्य भारत' के बौद्ध विशेषांक के रूप में 12वां अंक आपके सामने है । पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और ''अतुल्य भारत'' पत्रिका भी इसकी एक कड़ी है। इसके माध्यम से मंत्रालय के कार्मिकों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर मिल रहा है । इसे साथ ही भारतीय पर्यटन के बारे में जानकारी प्रदान की जा रही है ।

इस बार आप देखेंगे कि अतुल्य भारत पत्रिका में भगवान बुद्ध और उनसे संबंधित विषयों पर अच्छी सामग्री का संकलन किया जा सका है। ओडिशा में बौद्धधर्म के अवशेषों में मुख्यतः धौलीगिरी के बारे में हम सभी जानते हैं लेकिन मुख्य मार्ग से हटकर रत्नागिरी, ललितागिरि की ओर कम लोगों का ध्यान जाता है, इसके बारे में अबिनाश दाश ने अपने लेख 'ओड़ीशा में बौद्ध धर्म और धौलिगिरि' में बताया है। सुश्री रोमिका राज ने 'बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग' से पाठकों का परिचय कराया है। बौद्ध अध्ययन के विद्वान डॉ. कौलेश कुमार ने कहानी के रूप में 'अतिथि देवो भवः' में समाज का एक परिचय दिया है। इसी कड़ी में बुद्ध धर्म के प्रचार और उनके स्मारकों के बारे में सामग्री संकलित की गई है। 'राजस्थान में मुस्कुराए बुद्ध' में सुधीर कुमार ने राजस्थान में बुद्धधर्म के स्मारकों पर प्रकाश डाला है। 'हरियाणा में भी मुस्कुराए थे बुद्ध' में आदित्य मोहन ने हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में बौद्ध धर्म के विकास और मौजूद स्मारकों के बारे में बताया है। केरल, जिसे हम भगवान की अपनी धरती के नाम से जानते हैं, में भी बुद्ध धर्म का प्रचार प्रसार हुआ था। इस पर प्रो. के.के.नम्बूदिरी ने अपने लेख 'केरल में भी मुस्कुराए थे बुद्ध' के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है।

इतना ही नहीं देश में भी 'बुद्ध मुस्कुराए थे', जब भारत ने परमाणु परीक्षण किया था। मोहन सिंह ने इस विषय पर अपने संस्मरणों में बताया है। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर के बारे में विश्वरंजन ने रोचक जानकारी प्रस्तुत की है। श्रीमति स्नहेल पाटिल तूपे ने बौद्ध परिपथ का सचित्र परिचय दिया है। बौद्धकालीन अवशेषों पर एक और लेख 'कौवा डोल और बराबर गुफाएं' के बारे में श्री शंकर शर्मा ने जानकारी दी है। इनके

अलावा, राजस्थान के पर्यटन स्थल 'रणथम्भौर' के अभ्यारण्य के बारे में विनीत सोनी तथा बिहार के 'सूर्य मंदिर' के बारे में कप्तान प्राण रंजन के सूचनापरक लेख पाठकों के लिए बहुत उपयोगी रहेंगे। सर्वश्री जी. डी.बैरवा, विश्वरंजन, सुशांत सुप्रिय तथा श्रीमती रेखा द्विवेदी की कविताएं भी शामिल की गई हैं। स्थायी स्तम्भ के रूप में पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और रिपोर्टें भी देखी जा सकती हैं।

पर्यटन क्षेत्र पिछले वर्ष की तुलना में माह दर माह निरंतर वृद्धि दर्ज कर रहा है। भारत में ई–पर्यटक वीज़ा पर विदेशी पर्यटक आगमन गत वर्ष के इसी अवधि में 1,14,469 की तुलना में 37.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाते हुए 1,57,094 रहा। अप्रैल, 2018 के दौरान विदेशी मुद्रा आय गत वर्ष के इसी अवधि में 14,260 करोड़ रु. की तुलना में 10.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाते हुए 15,713 करोड़ रु. रही।

इस वृद्धि में भारत सरकार द्वारा पर्यटन अवसंरचना विकसित करना, पर्यटकों के लिए प्रवेश औपचारिकताएं सरल बनाने की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी कड़ी में मंत्रालय ने गूगल इंडिया के सहयोग से 26 अप्रैल,2018 को अतुल्य भारत पर 360 डिग्री वर्चुअल रियलिटी (वीआर) अनुभव वीडियो लांच किया है। जिसमें दर्शाया गया है कि भारत विविध अनुभवों का एक ऐसा गंतव्य स्थल है, जो जलवायु, भूगोल, संस्कृति, कला, साहित्य एवं खानपान के अनूठे अनुभव प्रस्तुत करता है।

मैं आशा करता हूं कि आप सभी के निरंतर सहयोग से यह पत्रिका और अधिक ज्ञानवर्धक, रोचक एवं रोचक सामग्री तथा सूचना प्रदान कर पाठकों को भारत के पर्यटन के विभिन्न पहलुओं एवं पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने में सार्थक हो सकेगी ।

आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदया और महानिदेशक (पर्यटन) देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में उनके सहयोग के लिए भी हम उनके आभारी हैं।

अंत में, उन सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण)
प्रधान संपादक

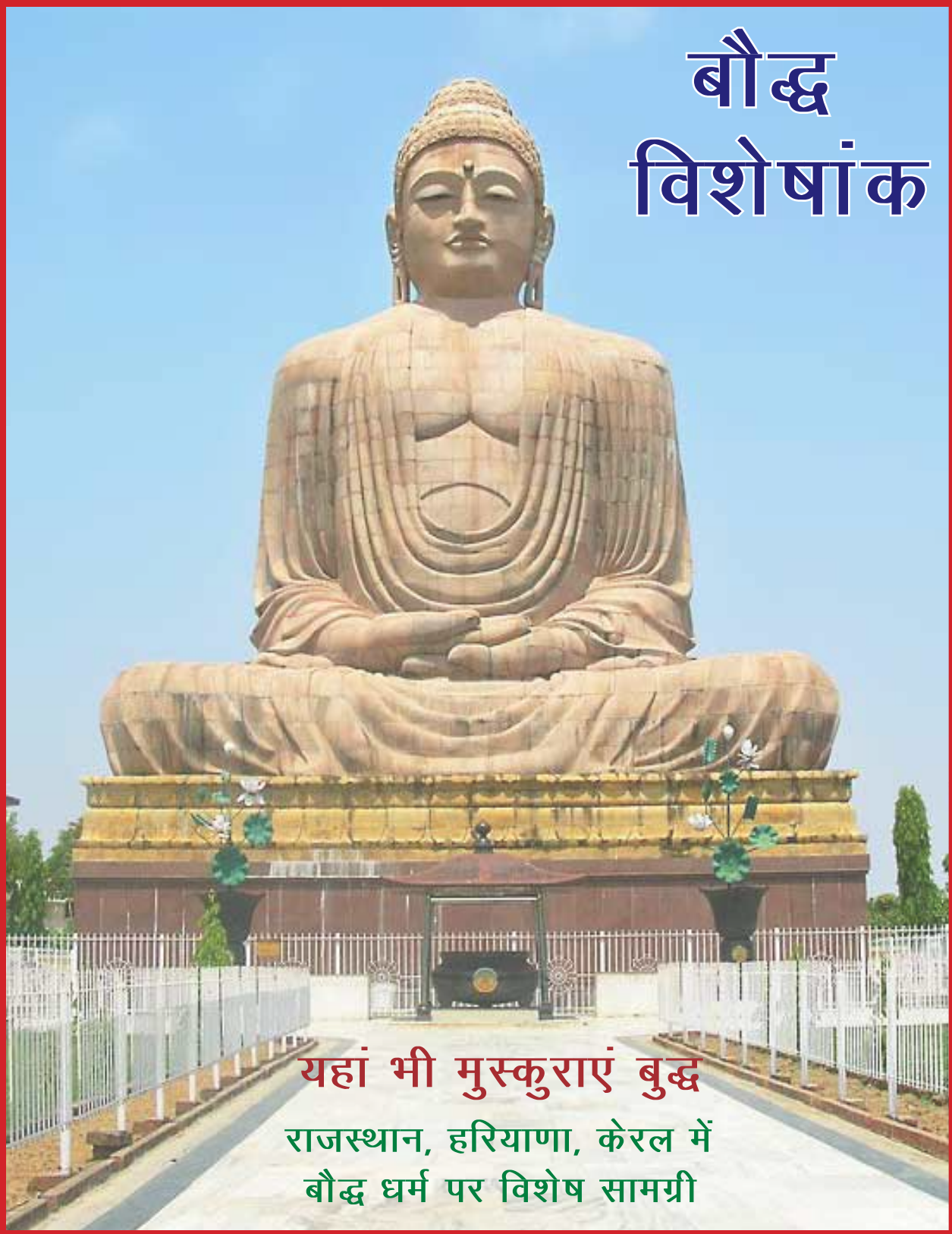
बौद्ध
विशेषांक
यहां भी मुस्कुराएं बुद्ध
राजस्थान, हरियाणा, केरल में
बौद्ध धर्म पर विशेष सामग्री

बौध पर्यटन

ओडिशा में बौद्ध धर्म और धौलिगिरि

–अबिनाश दाश

''भारत पंकज दल मिद्दम उत्कल मंडलमिति यात्त'' –(राधानाथ राय)

उपरोक्त पंक्तियों का अर्थ है भारत वर्ष अगर विश्व रूपी सरोवर का सुशोभित कमल पुष्प है तो उत्कल (ओड़िशा का प्राचीन नाम कलिंग और उत्कल) इस कमल पुष्प का मंडल या केशर है। इसीलिए ओड़ीशा पर्यटन को अतुल्य भारत की आत्मा भी कहते हैं।

ओड़िशा में प्रकृति के चमत्कारों के अलावा बौद्ध धर्म से जुड़े अवशेष भी मौजूद हैं। जिस तरह कपिलवस्तु, बोधगया व सारनाथ का संबंध भगवान बुद्ध के जीवन से है, वैसे ही ओडिशा का संबंध बौद्ध धर्म के दर्शन से है। ओडिशा के लगभग हर हिस्से से बौद्ध दर्शन से जुड़ी चीजें मिल चुकी हैं। ओडिशा में बौद्ध शिल्प व दस्तावेजों का बड़ा खजाना रत्नगिरि, ललितगिरि और उदयगिरि में है। इनसे जुड़ी लांगुडी की पहाडियों में भी हाल ही में कुछ चित्र मिले हैं।

रत्नगिरि:

भुवनेश्वर से करीब एक सौ किलोमीटर दूर स्थित यह पहाड़ी ब्राह्मणी, किम्हिरिया और बिरुपा नदियों से घिरी है। सन 1985 में हुई खुदाई के दौरान यहां से एक विशाल स्तूप, दो बड़े मठ, एक छोटा मठ,

*पुस्तकालयाध्यक्ष, होटल प्रबंध संस्थान, भुवनेश्वर

कई छोटे–छोटे स्तूप, शिलालेख, कांसे की प्रतिमाओं और टेराकोटा मुद्राओं के अलावा कई अवशेष पाए गए थे। यहां ईटों से बने विशाल स्तूप के अवशेषों से पता चलता है कि कभी श्री रत्नगिरि महाविहार आर्य भिक्षु संघ यहीं था।

यहां पाई गई 5वीं से 13वीं शताब्दी के बीच की मुद्राओं से भी स्पष्ट होता है कि उस समय यहां बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव था। यहां पत्थर के स्तूपों पर वज्रयान के प्रतीक भी खुदे हैं, जिनसे यहां तांत्रिक बौद्धों के प्रभाव की पुष्टि होती है। इससे जुड़े संग्रहालय में कई अभिलेख, कलाकृतियां व दस्तावेज सुरक्षित हैं।

ललितगिरि:

रत्नगिरि के पास मौजूद ललितगिरि का महत्व 1985 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा की गई खुदाई के बाद पता चला। यहां बौद्ध धर्म के देवी–देवताओं की मूर्तियों समेत सैकड़ों कलाकृतियां मिली थीं। अपने अनुभवों तथा रीति–रिवाजों को संरक्षित रखने के लिए ओडिशा के लोगों ने अनूठी विधियां निकाली हैं। यह जानकारी एक स्तूप पर लगे शिलालेखों से मिली। खांडोली पत्थर पर बने इस शिलापत्र पर भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़ी कथाएं चित्रित हैं। यहां पत्थरों व पक्की ईटों से बने तीन बौद्ध विहार पाए गए हैं।

उदयगिरि:

रत्नगिरि से मात्र पांच कि.मी. और भुवनेश्वर से करीब 90 किलोमीटर की दूरी पर मौजूद उदयगिरि कभी बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था। यहां दो बौद्ध मठ तथा एक विशाल स्तूप के अवशेष मिल चुके हैं। स्तूप के चारों कोनों पर ध्यान मुद्रा में भगवान बुद्ध की

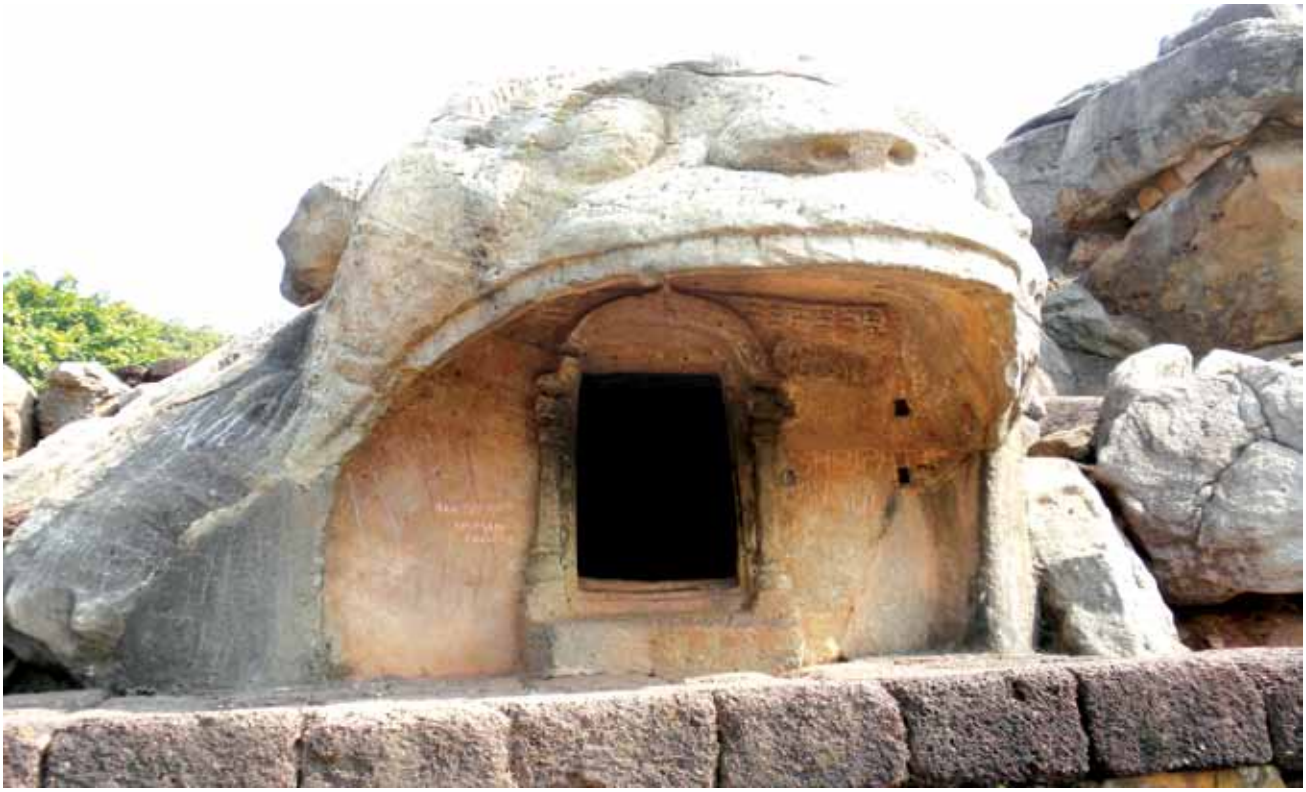

प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। इसमें भूमिस्पर्श, धर्मचक्र, अभय, वरद तथा ध्यान मुद्रा में भगवान बुद्ध की छवियां भी बनी हैं। यहां मिली चीजों में मिट्टी की अभिलिखित मुद्राएं अति महत्वपूर्ण हैं। ओडिशा के उदयागिरी में जिसे 'सनराइज हिल' भी कहते हैं, एक बड़ा बौद्ध काम्प्लेक्स है। यहाँ पर ईंटों से बना स्तूप, दो ईंट की दीवार से निर्मित मठ, एक पत्थर जिसमें अभिलेख हैं और पत्थरों पर तराशी गई बौद्ध मूर्तियां हैं। उदयागिरी का दूसरा आकर्षण है एक गैलरी जिसमें पत्थर से तराशी कई बौद्ध मूर्तियां हैं जिसके ऊपर से बिरुपा नदी दिखती है। यहाँ पर पांच मूर्तियां हैं जिसमें एक बड़े आकार के खड़े बोधिसत्व हैं, एक खड़े बुद्ध की मूर्ति है, एक स्तूप पर बैठी देवी की मूर्ति है, एक और खड़े बोधिसत्व और एक बैठे हुए बोधिसत्व की मूर्ति है।

धौलिगिरि :

आठ किलो मीटर दूर, दया नदी के किनारे पर स्थित है धौली। इसके आसपास विशाल खुली जगह के साथ एक पहाड़ी है और पहाड़ी के शिखर पर एक बड़े चट्टान में अशोक के शिलालेख उत्कीर्ण है। धौली पहाड़ी को कलिंग–युद्ध क्षेत्र माना जाता है। यहां पाए गए चट्टान शिलालेखों नंबर I & X, XIV में दो अलग–अलग कलिंग शिलालेख शामिल हैं। कलिंग फ़र्मान के छठे शिलालेख में उन्होंने, पूरी दुनिया के कल्याण के लिए अपनी चिंता व्यक्त की है। शिलालेखों से ऊपर चट्टानों को काटकर जो हाथी बना है, वह ओडिशा की पुरानी बौद्ध मूर्तियों में से एक है।

कहा जाता है कि कलिंग युद्ध (अशोक और कलिंग) के समय दया नदी का जल मृतकों के खून से लाल हो गया था जिसे देख कर सम्राट अशोक को युद्ध के साथ जुड़े आतंक की भयावहता का एहसास हुआ और उन्होंने जीवन में कभी युद्ध न करने की शपथ के साथ ही युद्ध बंदी की घोषणा कर दी थी। कुछ सालों बाद धौली बौद्ध गतिविधियों का एक

महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। उन्होंने वहां कई चैतिय, स्तूपों और स्तंभों का निर्माण कराया। पहाड़ी के शीर्ष पर, एक चमकदार सफेद शांति शिवालय 1970 के दशक में जापान बुद्ध संघ और कलिंग निप्पॉन बुद्ध संघ द्वारा बनाया गया है। आस–पास के क्षेत्र में भी संभवतः अशोक के कई शिलालेख पाए गए हैं और विद्वानों के मतानुसार टंकपाणी सड़क पर भास्करेश्वर मंदिर में भी एक स्तूप पाया गया है। धौलीगिरि पहाड़ियों में एक प्राचीन शिव मंदिर है। यहां शिवरात्रि समारोह के अवसर पर न केवल ओडिशा बल्कि आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के निकटवर्ती क्षेत्रों से बड़ी संख्या में शिवभक्त एकत्रित होते हैं।

सम्राट अशोक शिलालेख – अशोक के शिलालेख खंभे पूरे भारतीय में फैले स्तंभों की एक श्रृंखला हैं।

स्तंभ शिलालेख

- **प्रमुख स्तंभ शिलालेख** : **14 शिलालेख** (1 से 14वें स्थान पर) और ओडिशा में 2 अलग–अलग पाए गए।
- **प्रमुख शिलालेख** : माइनर रॉक एडिक्ट्स **(शिलालेख)**, रानी शिलालेख, बरबर गुफा शिलालेख और कंधार द्विभाषी शिलालेख।

धौलिगिरि मैं स्थित सम्राट अशोक के चार शिलालेखों का वर्णन –

- **शिलालेख क्रमांक 1** – अशोक ने धीरे–धीरे जानवरों की हत्या को अपने रसोईघर में इस्तेमाल करने के लिए प्रतिबंधित कर दिया था आखिर में उन्होंने हर तरह के जानवरों की हत्या पर रोक लगाई थी।
- **शिलालेख क्रमांक 2** –लोगों और गोधन के लिए, उन्होंने अपने पूरे राज्य के भीतर,पड़ोस के राज्य में तथा पड़ोसी राज्यों और ग्रीक लोगों द्वारा कब्जे वाले राज्यों मे मुक्त इलाज

का वितरण किया था।

- **शिलालेख क्रमांक 3** – अशोक ने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि कम से कम हर पांच साल के अंतराल पर उन्हें धर्म पर शिक्षण के लिए पूरे राज्य में जाना होगा।
- **शिलालेख क्रमांक 4** – प्रियदर्शी अशोक ने नागरिकों के चरित्र तथा व्यवहार में सुधार की अपर्याप्तता के लिए विभिन्न साधनों और तरीकों का वर्णन किया है। वह आशा व्यक्त करते है कि उनकी आने वाली पीढ़ी, अहिंसा धर्म का पालन करेंगे।
- **शिलालेख क्रमांक 5** – राजा के रूप में सिंहासन आरोहण के 13वें वर्ष पर, अशोक ने कर्मचारियों की अलग–अलग श्रेणी नियुक्त की जिस मे ''धर्म महामात्र'' को नियुक्त किया जो धार्मिक कार्यक्रमों और अनुष्ठानों के कामकाज के लिए राज्य के साथ–साथ पड़ोसी राज्यों में लोगों की सहायता करते थे।
- **शिलालेख क्रमांक 6** – अशोक ने अपने समाचार संवाददाता कर्मचारियों को आदेश दिया था कि वे किसी भी समय और किसी भी स्थान पर प्रशासन और लोगों के मामलों पर संदेश देने के लिए उनसे मिल सकते हैं।
- **शिलालेख क्रमांक 7** – अशोक चाहते थे कि किसी भी धर्म या संस्कृति के लोग राज्य में कहीं भी रह सकें, उनके पास एक दूसरे के साथ अच्छा रवैया और सहयोग होना चाहिए।
- **शिलालेख क्रमांक 8** – अपने साम्राज्य के दौरे के दौरान वह गरीबों और जरूरतमंद लोगों की मदद करने और बुद्ध के विचारों का प्रचार करने वाले उपहारों के साथ ब्राह्मणों और श्रमिकों से मिलते थे।
- **शिलालेख क्रमांक 9** – अशोक ने दासों और नौकरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार पर जोर दिया, बुजुर्गों को सम्मान और मानव जाति के प्रति अहिंसा धर्म पालन के प्रति गुरुत्व दिया।
- **शिलालेख क्रमांक 10** – अशोक ने घोषणा की थी कि इस दुनिया में हर व्यक्ति महिमा तथा समृद्धि प्राप्त कर सकता है और कड़ी मेहनत से शाश्वत क्षेत्र प्राप्त कर सकता है बस अच्छे नैतिक मूल्य के साथ धार्मिक कर्मों एवं लक्ष्य प्राप्त की इच्छा शक्ति होने की जरूरत है।
- **शिलालेख क्रमांक 11, 12, तथा 13** धौलिगिरी में नहीं है
- **शिलालेख क्रमांक 14** – अशोक ने प्रशासन और धार्मिक विचारों को, पर्याप्त स्थान होने के बावजूद, सम्पूर्ण राज्य में चट्टानों पर ही अंकित कराया है।

प्रियदर्शी सम्राट अशोक के कार्यान्वित 14 शिलालेखों के कुछ अंशों की झलक भारतीय संवैधानिक व्यवस्था में भी प्रतिबिंबित होती है।

बौद्ध अवशेष सघनता में तीन जगहों पर पाये जा सकते हैं– रत्नागिरी, उदयगिरी और ललितगिरी जिनको 'डायमंड ट्रायंगल' के नाम से भी जाना जाता है। इन जगहों पर कई मठ, मंदिर, स्तूप और सुन्दर मूर्तियां हैं जो बौद्ध धर्म की प्रतीक हैं। उनका ग्रामीण वातावरण जो पहाड़ियों और धान के उपजाऊ खेतों के बीच बसा है देखने में सुन्दर भी है और शांत भी। ओडिशा के रत्नागिरी में जिसे 'हिल ऑफ़ ज्वेल्स' भी कहते हैं व्यापक रूप से बौद्ध अवशेष देखे जा सकते

हैं। एक बौद्ध स्थल की तरह यह काफी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहाँ पर सुन्दर मूर्तियां तो स्थित हैं हीं साथ ही साथ यह बौद्ध शिक्षण का केंद्र है। विश्व का पहला बौद्ध विश्वविद्यालय जिसकी तुलना बिहार के नालंदा से की जा सकती है, रत्नागिरी में स्थित है। भगवान बुद्ध के सिर की पत्थर की विशाल मूर्ति वास्तव में ही आपको विस्मय में डाल सकती है। यहाँ पर भगवान बुद्ध के दो दर्जन से भी ज्यादा कई आकार के सिर देखे जा सकते हैं जिनमें उनके शांत और ध्यान में लीन हावभाव हैं और इन्हें खुदाई के दौरान पाया गया था। यह कला का अद्भूत नमूना पेश करते हैं।

इतिहास साक्षी है कि प्राचीन कलिंग सेना की बहादुरी तथा उनकी बहादुरी की वास्तविकता ललितगिरी के अवशेष रत्नागिरी और उदयागिरी जैसे क्षेत्र में दिखाई नहीं देती, यहां ओडिशा के प्राचीन बौद्ध बस्ती और भगवान बुद्ध के विचार ही व्यापक हैं। सन् 1985 से 1992 में जब खुदाई हुई तो यह पता चला कि इसे ईसापूर्व दूसरी शताब्दी से 13वीं शताब्दी तक लगातार अधिकृत किया गया।

इन प्रमुख बौद्ध स्थलों पर कैसे जाएँ ?

ओडिशा का बौद्ध स्थलों का 'डायमंड ट्रायंगल' (रत्नागिरी, उदयागिरी और ललितगिरी) एशिया हिल में बसा है जो भुवनेश्वर से उत्तर दिशा की ओर दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। निकटतम हवाई अड्डा **भुवनेश्वर** है जबकि निकटतम रेलवे स्टेशन **कटक** है। जो पर्यटक खुद से यहाँ आना चाहते हैं वह रत्नागिरी के तोशाली होटल में रुक सकते हैं। यह पुरातत्विक संग्रहालय के दूसरी ओर है और रत्नागिरी के बौद्ध आकर्षण से काफी पास है। रत्नागिरी से 10 किलोमीटर से भी कम की दूरी पर बसा है उदयागिरी है जबकि ललितगिरी करीबन 20 किलोमीटर दूर है।

सभी बुद्ध शाक्यमुनियों ने अस्सी हजार शिक्षाएं दीं। बौद्ध धर्म की स्थापना में उनका उद्देश्य जीवित प्राणियों को पीड़ा से स्थायी मुक्ति के लिए नेतृत्व करना था। उन्होंने महसूस किया कि पीड़ा और कठिनाइयों से अस्थायी मुक्ति पर्याप्त नहीं है। प्यार और करुणा से प्रेरित उनका उद्देश्य जीवित प्राणियों को स्थायी शांति या निर्वाण खोजने में मदद करना था। आधुनिक जीवन की तेज गति और उच्च तनाव के साथ कई लोग बौद्ध धर्म के शांतिपूर्ण दर्शन में रुचि ले रहे हैं। विशेष रूप से तनाव और चिंता से मुक्ति और किसी के आध्यात्मिक अनुभव को गहरा बनाने के लिए, ध्यान करने के तरीके सीखने में बहुत गहरी दिलचस्पी है।

धौलिगिरि ही वो जगह जहां बुद्ध की शिक्षाएं मनुष्य को चिरस्थायी सुख के लिए रास्ता दिखाती हैं। इस मार्ग का पालन करके कोई भी बुद्ध के आनंदमय विचारों से अपने वर्तमान भ्रमित और आत्म केंद्रित अवस्था को स्वयं ही धीरे–धीरे बदल सकता है।

बौद्ध दर्शन से एक कथा

मानवता का मूल मंत्र-अतिथि देवो भव:

– डॉ. कौलेश कुमार

मगध के प्रतापी राजा अजातशत्रु का वैशाली से विवाद के कारण कई बार युद्ध हो चुका था और हर बार उन्हें मुँहकी खानी पड़ती थी। वह किसी भी तरह से वैशाली को अपने अधीन करना चाहते थे। ज्ञातव्य हो कि वैशाली विश्व का प्रथम गणतंत्र राज्य था। आखिरकार एक दिन अजातशत्रु ने अपने प्रिय मंत्री वर्षकार को बुलाया कहा आप भगवान बुद्ध के पास जाईये और उनसे वैशाली को परास्त करने का उपाय पूछिए। वह जो भी बोलते हैं सत्य बोलते हैं, उनकी बातों को ध्यान से सुनना।

कहानी अत्यंत प्राचीन होते हुए भी इसका सारांश प्रतिदिन विश्व में उपयोग होता रहता है, और क्यों न हो। महामानव भगवान बुद्ध के अनमोल सूत्रों में से एक एवं अंतिम ''महापरिनिर्वाण सूत्र'' का है, जिसमें यह बताया गया है कि किस प्रकार एक व्यक्ति (राजा) अपनी इच्छापूर्ति के लिए, क्रोध मिटाने के लिए अपना वर्चस्व दिखाने हेतु, न्याय–अन्याय, सही–गलत, अच्छा–बुरा, भविष्य के परिणाम–दुष्परिणाम को अनदेखी करते हुए अहंकारवश दूसरे को बर्बाद या विनाश करने में लग जाता है।

एक दिन भगवान बुद्ध राजगृह के गृद्धकूट पर्वत पर ध्यानमग्न थे और उनके प्रिय शिष्य आनन्द उन्हें पंखा झल रहे थे। वर्षकार वहां पहुंचे और भगवान को दण्डवत प्रणाम करने के बाद उनके चरणों के पास बैठ गए। भगवान ने उनसे वहां पधारने का आशय पूछा तो वर्षकार ने सरल शब्दों में बता दिया – हे भगवान! मगध के प्रतापी राजा अजातशत्रु ने मुझे आपके पास सलाह लेने के लिए भेजा है।.... राजा अजातशत्रु अपने अथक प्रयास के बाद भी वैशाली गणराज्य पर विजयश्री प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इतने आक्रमण करने के बाद भी वैशाली को परास्त नहीं कर सके हैं। हमारे राजा ऐसा क्या करें जिससे कि वैशाली गणराज्य को जीतकर मगध में मिलाया जा सके।

दुनिया को सत्य अहिंसा, करूणा, मानवता एवं मध्यम मार्ग दिखाने वाले महामानव से इस तरह का प्रश्न पूछा गया। एक बार तो भगवान भी विस्मय में पड़ गए कि कैसा अटपटा प्रश्न पूछा जा रहा था।

खैर, उन्हें उत्तर तो देना था और भगवान वैशाली गणराज्य के पक्षधर थे।

भगवान मंत्री वर्षकार की ओर न देखकर आनन्द की ओर देखते हुए कहते हैं –

(1) आनन्द ! सुना है, वैशाली के लोग किसी भी कार्य को करने के पहले आपस में विचार विमर्श, सलाह–मशविरा करते हैं। कुछ भी करते हैं उसमें लगभग सबकी सहमति और सहभागिता होती है।

आनन्द उत्तर देते हैं –

हाँ भगवन। आपने सही सुना है। वैशाली के लोग गणराज्य के विकास के लिए जो भी करते हैं,

* डॉ. कौलेश कुमार, एम.ए.एपी.एच.डी (बुद्धिस्ट स्टडीज), महासचिव, एसोशिएसन ऑफ बुद्धिस्ट टूर ऑपरेटर्स (एबीटीओ) द प्लेटफार्म आफ टूरिज्म विथ टूरिज्म

उसमें लगभग सभी की सहमति होती है।

भगवान इस पर कहते हैं –अगर ऐसा है तब वैशाली का विकास ही होगा, विनाश नहीं।।

(2) आनन्द ! सुना है वैशाली के लोग, कार्य करने के पहले बुर्जुगों, ज्ञानियों से राय लेते हैं।

आनन्द कहते हैं – हाँ भगवन! आपने सही सुना है। वैशाली के विकास हेतु किसी भी कार्य को करने के पहले बुर्जुगों एवं ज्ञानियों के विचार को प्राथमिकता देते हैं।

भगवान बोलते हैं –अगर ऐसा है तब वैशाली विकास करेगा, उसका विनाश सम्भव नहीं है।।

(3) भगवान अगला प्रश्न पूछते हैं – आनन्द ! सुना है कि वैशाली के लोग स्त्रियों, महिलाओं का भी बहुत सम्मान करते हैं।

आनन्द उत्तर देते हैं –जी भगवन! आपने सही ही सुना है। वैशाली के लोग स्त्रियों का चाहे वह माँ, बहन, बेटी हों बहुत सम्मान करते हैं।

भगवान बोलते हैं –अगर ऐसा है, तब वैशाली उन्नति करेगा अवन्ति नहीं।।

(4) भगवान बोलते हैं–

आनन्द ! सुना है कि वैशाली के लोग आये हुए अतिथियों, पर्यटकों, मुसाफिरों का भी बहुत आदर सत्कार करते हैं।

आनन्द जबाव देते हैं –हाँ भगवन! आपने सही ही सुना है। अपने गणराज्य में आने वाले अतिथियों, पर्यटकों, व्यापारियों का बहुत ही मैत्री भाव से सत्कार करते हैं।

भगवान बोलते हैं–अगर यह सही है तो समझना कि वैशाली प्रगति के पथ पर बढ़ता ही जायेगा, नीचे नहीं फिसलेगा।।

(5) भगवान बोलते हैं – आनन्द! सुना है कि वैशाली के राजा–प्रजा सभी साधु–संत, ऋषि–मुनियों, अरहत–उपासकों, ज्ञानी एवं विद्वानों को बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, सम्मान करते हैं।।

आनन्द कहते हैं:–

जी भगवन! आपने सही सुना है। वैशाली के लोग हमेशा साधु–संतों, महापुरूषों, ज्ञानियों से ससम्मान पेश आते हैं। सभी अत्यन्त आदरणीय के पात्र होते हैं वैशाली गणराज्य में।

भगवान कहते हैं –

अगर ऐसा है आनन्द! तो इस गणराज्य का विकास ही होगा, विनाश नहीं।।

इतना सुनते ही महामंत्री वर्षकार भगवान बुद्ध को दण्डवत कर वहाँ से चले गए और राजा को सारी कहानी सुना देते हैं।

एक दिन घायल अवस्था में वैशाली के सीमा पर एक व्यक्ति पड़ा हुआ था। लोगों ने देखा कि बहुत ही बुरी तरह घायल अवस्था में मगध के महामंत्री वर्षकार है। जरूर ही मगध के राजा ने इन्हें किसी बात पर क्रोधित होकर घायल कर दिया है और निर्वासित कर वैशाली की ओर फैंका है। इन्हें अपने राज्य में ले चलते हैं और वहीं इनका इलाज करवाते हैं।

किसी ने कहा– नहीं, नहीं। यह जरूर राजा अजातशत्रु का कोई षड़यंत्र होगा, इन्हें यहीं छोड़ दो।

कुछ लोगों ने कहा– अरे भाई, मानवता के नाते तो इनकी सहायता करो। हमारे राज्य में दुखियों, घायलों, लाचारों की सहायता करना धर्म है। अंततः इन्हें राज्य चिकित्सालय में ले जाकर ईलाज कराया

गया और कुछ दिनों में वर्षकार ठीक हो गया।

क्योंकि वह मगध के विशाल साम्राज्य के विद्वान महामंत्री थे, इसलिए वैशाली में इन्हें मंत्री का पद दिया गया। धीरे–धीरे पूरे गणराज्य के राजा प्रजा सभी लोगों के साथ इनका व्यवहार बहुत ही अच्छा होता गया। लोग मंत्री वर्षकार की सार गर्भित बातें सुनते और उनका पालन करते थे।

धीरे–धीरे वर्षकार ने अपने कुछ विश्वसनीय तैयार कर लिए जो गुप्त सभाओं में नगरवासियों में फूट डालने, एक दूसरे के प्रति नफरत, अविश्वास, अंधविश्वास फैलाने लगे। वैशाली आने का जो इनका मुख्य उद्देश्य था, उनमें वे सफल होते गये।

कुछ साल बाद, जब वर्षकार को लगा कि यहाँ के लोग बिना विचारे, बिना सोचे समझे, बिना एक दूसरे से विचार विमर्श किये कार्य करने लगे हैं। साधु–संतों का आदर करना, आये हुए अतिथियों को सम्मान करना आदि सभी भूल से गये हैं और वैशाली में अब सिर्फ नफरत ही नफरत पनप रही थी। तब वर्षकार धीरे से राजा अजातशत्रु को समाचार भिजवा देता है कि हे राजन, जिस उद्देश्य के लिए आपने हमें वैशाली में भेजा था, उसमें हम सफल हो गये हैं। अतः अब आप इस पर आक्रमण कर इसे जीत सकते हैं और ऐसा ही हुआ। अजातशत्रु ने योजनाबद्ध तरीके से आक्रमण किया और वैशाली गणराज्य को परास्त कर अंततः मगध में मिला लिया।

जब मैं बौद्ध अध्ययन विषय से स्नात्तकोतर कर रहा था, तभी मैंने इस सूत्र को पहली बार पढ़ा था। मेरे इस कहानी की चर्चा करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि इससे हमें फूट डालो और शासन करो वाली बात चरितार्थ हो रही है अर्थात् अंग्रेजों से पहले ही इस तरह की घटना हमारे इतिहास में हो चुकी है। फिर भी हम कुछ नहीं सीखें और अंग्रेजों ने इसी सूत्र का उपयोग कर हमें गुलाम बना लिया।

आज भी हम सभी मनुष्यों को उनके भविष्य के लिए, उनके अस्तित्व के लिए, मानवता के लिए उसे बनाने वाले के प्रति कृतज्ञता के लिए जिन्होंने इतना सुन्दर संसार बनाया, मनुष्य को सबसे विकसित बनाया, सभी की भलाई के लिए आपसी द्वेष, नफरत घृणा, जात–पात, धर्म–अधर्म, नफरत को छोड़कर एवं एक दूसरे से राय मशविरा कर, एक दूसरे के प्रति प्रेम बीज बोकर, अतिथियों को सत्कार कर, ज्ञानियों, ऋषियों, मुनियों, साधु संतों को सम्मान दे कर मानवता के विकास के लिए आगे बढ़कर चलना होगा, तभी मानव समाज का विकास होगा और यही विकास का आधार भी है।

भगवान कहते हैं –

कभी पापों को नहीं करना।
अच्छे कर्मो के द्वारा पुण्य अर्जिन करना।
यही बुद्ध का शासन है। धम्म है।।

भवतु सब्ब मंगलम्!

सभी चीजें अस्थायी हैं वे परिवर्तन, मृत्यु और क्षय के अधीन है।

–महात्मा बुद्ध

बौद्ध दर्शन

बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग- एक परिचय

–रोमिका राज

बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध हैं। बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ, माता का नाम महामाया और पिता का नाम शुद्धोद्यन था। जो शाक्य वंश के राजा थे। इसलिए बुद्ध को शाक्य मुनि भी कहते हैं। सिद्धार्थ की माता की मृत्यु के पश्चात इनका पालन पोषण इनकी मौसी गौतमी ने की। महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक ग्राम में हुआ था। बुद्ध का विवाह यशोधरा से हुआ था। जिससे उन्हें एक पुत्र भी हुआ जिसका नाम राहुल था। कहा जाता है कि एक बार सिद्धार्थ राज्य भ्रमण के लिए महल से बाहर निकले तो उन्होंने चार चीजों को देखा। पहली बार एक वृद्ध व्यक्ति को देखा। दूसरी बार एक बीमार व्यक्ति को देखा, तीसरी बार एक मृत व्यक्ति को देखा और अंतिम चौथी अवस्था में वे एक सन्यासी को देखा। इस सन्यासी को देखकर सिद्धार्थ के मन में यह आया कि यह संसार दुःखों से पीड़ित है तथा मनुष्य खुद ही इन दुःखों का कारण है। दुःखों से मुक्ति पाने हेतु सिद्ध ार्थ ने निरंतर छः वर्षो तक तपस्या कर ज्ञान अर्जित किया, उसके बाद वह बुद्ध के नाम से जाने गये। मध्यम मार्ग महात्मा बुद्ध की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है जो दुःखों से मुक्ति पाने एवं आत्म ज्ञान के साधन के रूप में अपनाया गया है। मध्यम मार्ग के सभी मार्ग 'सम्यक' शब्द से आरम्भ होते हैं। 'सम्यक' जिसका शाब्दिक अर्थ होता है– अच्छी या सही। बौद्ध प्रतीकों में मध्यम मार्ग को प्रायः आठ ताडियों द्वारा निरूपित किया जाता है।

भगवान बुद्ध के समस्त उपदेशों का एकमात्र उद्देश्य दुःखी जनों को दुःख से मुक्ति दिलाना है।

1. भगवान बुद्ध ने छह वर्ष की कठोर तपस्या के बाद चार बातों को उजागर किया। इन्हीं चार बातों को बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्य कहा जाता है। बौद्ध धर्म के अनुसार चार आर्य सत्य है– दुःख आर्य सत्य, दुःख समुदय आर्य सत्य, दुःख निरोध आर्य सत्य तथा दुःख निरोध गणिनि प्रतिपदा आर्य सत्य। किन्तु बुद्ध ने इनमें से चौथे आर्य सत्य को आर्य अष्टांगिक मार्ग के रूप में भी जाना जाता है; जो आठ अंगों वाला है। इसलिए इसे आर्य अष्टांगिक मार्ग के नाम से जाना जाता है। भगवान बुद्ध ने इन्हीं अष्टांगिक मार्ग को मध्यम मार्ग भी बताएं हैं। भगवान बुद्ध के अनुसार मनुष्य के दुःखों का कारण तृष्णा है। तृष्णा को नष्ट करने के लिए भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग का ज्ञान दिया। इस मार्ग को मध्यम मार्ग इसलिए कहा गया है कि इसमें मनुष्य को न तो अपने शरीर को कठोर तपस्या कर गलाना चाहिए और ना ही अधिक सुख–सुविधा में ही रहना चाहिए।

2. मध्यम मार्ग जिसे अष्टांगिक मार्ग के नाम से भी जाना जाता है।

ये अष्टांगिक मार्ग में आठ कड़ियाँ हैं, जो इस प्रकार है–

(क) सम्मादिट्ठि

(ख) सम्मासंकप्पो — प्रज्ञा

(ग) सम्मावाचा

*शोध छात्रा, पालि विभाग, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा

(घ) सम्माकम्मन्तो

(ङ) सम्माआजीवो शील

(च) सम्मात्यायो

(छ) सम्मासति समाधि

(ज) सम्मासमाधि

अष्टांगिक मार्ग को भी तीन भागों में विभाजित किया गया है। ये हैं शील, समाधि तथा प्रज्ञा।

शील के अन्तर्गत सम्यक वचन, सम्यक कर्म तथा सम्यक आजीविका आते हैं।

समाधि के अन्तर्गत सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि जाते हैं।

प्रज्ञा के अन्तर्गत सम्यक दृष्टि तथा सम्यक संकल्प आते हैं।

अष्टांगिक मार्ग का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

(क) सम्मादिट्ठि अर्थात सम्यकदृष्टि – यहाँ दृष्टि का अर्थ ज्ञान है। मनुष्य को सही और गलत की परख ज्ञान से ही होती है। जो व्यक्ति कुशल तथा अकुशल को जानता हो, वहीं सम्यक दृष्टि है। कुशल अर्थात कुशलमूल को जानना है इसके अन्तर्गत, अलोम, अदीष तथा अमीह आते है। अकुशल अर्थात अकुशल मूल को जानना इसके अन्तर्गत लोभ, दोष तथा मोह आते है। मनुष्य जब इन तीनों अकुशल मूलों का परित्याग कर दें, तो वह सम्यक दृष्टि अर्थात सम्यक ज्ञान के रूप में जाना जाता है।

(ख) सम्मासंकप्पो अर्थात सम्यक संकल्प– यहाँ सम्यक संकल्प से तात्पर्य है, सम्यक निश्चय। सम्यक ज्ञान होने पर ही यह सम्भव है। मनुष्य जब किसी कार्य को करने के लिए लोभ, दोष तथा मोह का परित्याग कर वह कार्य सम्पादित करता है तो वह कार्य निश्चय है अर्थात जब मनुष्य दूसरे मनुष्य के अहित का परित्याग कर वह कार्य करता है इस तरह के कार्य करने का संकल्प ही सम्यक संकल्प है। (3)

(ग) सम्मावाचा अर्थात सम्यक वचन–यानि ठीक भाषण। असत्य, कटू वचन को छोड़कर बोला गया हर वचन सम्यक वचन है। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। इस बात को धम्मपद के यमकवग्ग के इस गाथा से पुष्टि होती है।

न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो।।

अर्थात जिन वचनों से दूसरे के हृदय को चोट पहुंचे, जो वचन कटु हो, जिनसे दूसरों की निन्दा होती हो, व्यर्थ की बकवास हो, उन्हें कभी नहीं कहना चाहिए। वैर की शांति कटु वचन से नहीं होती अवैर से ही सम्भव है। (4)

(घ) सम्माकम्मन्तो अर्थात सम्यक कर्म– हिन्दु धर्म के समान बौद्ध धर्म में भी कर्म–सिद्धांत पर सबसे अधिक बल दिया गया है। मनुष्य की सदगति या दुर्गति का कारण उसका कर्म ही होता है। कर्म के ही कारण मनुष्य इस लोक में सुख या दुःख को भोगता है तथा परलोक में भी स्वर्ग या नरक का खुद ही उत्तरदायी होता है। मनुष्य को अच्छे कर्म करने हेतु हिंसा, चोरी, झूठ, सुरापान इन सभी का त्याग करना चाहिए। (5)

(ङ) सम्माआजीवो अर्थात सम्यक आजीव– सम्यक आजीव अर्थात ठीक जीविका। झूठी जीविका को छोड़कर सच्ची जीविका के द्वारा शरीर का पोषण करना। बिना जीविका के जीवन धारण करना असम्भव है। मानवमात्र को शरीर रक्षाण के लिए कोई न कोई जीविका

ग्रहण करनी ही पड़ती है, परन्तु यह जीविका सच्ची होनी चाहिए जिससे दूसरे प्राणियों को न तो किसी प्रकार का क्लेश पहूँचे और न ही उसकी हिंसा के अवसर आये। समाज व्यक्तियों के समुदाय से बनता है। यदि व्यक्ति पारस्परिक क्ल्याणकी भावना से प्रेरित होकर अपनी जीविका अर्जन करने में लगे तो समाज का वास्तविक मंगल होता है। (6)

सम्यक आजीविका के अन्तर्गत भगवान बुद्ध ने पंचशील पर जोर दिया है जो इस प्रकार हैं:

(1) सत्य वणिज्जा अर्थात शस्त्र (हथियार) का व्यापार न करना।

(2) सत्तवणिज्जा अर्थात प्राणि का व्यापार न करना।

(3 मंसवणिज्जा अर्थात मांस का व्यापार न करना।

(4) मज्जवणिज्जा अर्थात मदिरा का व्यापार न करना।

(5) विसवणिज्जा अर्थात विष का व्यापार न करना।

(च) सम्यक व्यायाम सम्यक व्यायाम अर्थात ठीक प्रयत्न। सत्कर्म को करने के लिए मनुष्य का प्रयत्न भी सही दिशा में होना चाहिए। अविद्या को नष्ट करने के प्रयास की प्रथम पीढ़ी सम्यक व्यायाम है।(8)

इन्द्रियों पर संयम, बुरी भावनाओं को रोकने और अच्छी भावनाएं उत्पन्न करने का प्रयत्न अच्छी भावनाओं के कायम रखने का प्रयत्न ही सम्यक व्यायाम है।

(छ) सम्यक स्मृति– इसका विस्तृत वर्णन दीघनिकाय के महासतिपट्ठान सुत्त में किया गया है। जिसमें चार स्मृति प्रस्थान हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. कायानुपश्यान अर्थात काय के वास्तविक स्वरूप को जानना और उसकी स्मृति सदा बनाये रखना।

2. वेदनानुपश्यना अर्थात वेदना के वास्तविक स्वरूप को जानना और उसकी स्मृति सदा बनाये रखना।

3 चित्रानुपश्यना अर्थात चित्त के वास्तविक स्वरूप को जानना और उसकी स्मृति सदा बनाये रखना।

4. धर्मानुपश्यना अर्थात धर्म के वास्तविक स्वरूप को मानना और उसकी स्मृति सदा बनाये रखना। (9)

(ज) सम्यक समाधि– सम्यक समाधि का तात्पर्य है कुशल मन। सम्यक समाधि मन को कुशल और हमेशा दूसरे मनुष्य की भलाई करने की ओर प्रेरित करता है। सम्यक समाधि मन को वह अपेक्षित भक्ति देती है, जिससे कल्याणरत रह सके। इस प्रकार कुशल चित्त की एकाग्रता ही सम्यक समाधि है।

इस प्रकार भगवान बुद्ध आर्य अष्टांगिक मार्ग को समझाते हुए मध्यम मार्ग को स्थापित करते हैं। बुद्ध के उपदेशों में मध्यम मार्ग का उपदेश सबसे महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि बुद्ध के उपदेशों का सार है। कोई भी मनुष्य मध्यम मार्ग को अपनाकर अपने जीवन को सफल बना सकता है तथा दुःखों से मुक्ति पा सकता है। इसे हम यह भी कह सकते हैं कि मनुष्य को दुःखों से छुटकारा पाने का मार्ग मध्यम मार्ग है। इस मार्ग की अपनाकर हर मनुष्य अपना सर्वागीण विकास के साथ–साथ मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। बौद्ध धर्म में इसे निर्वाण के रूप में जाना जाता है।

राजस्थान

यहां मुस्कुराए थे बुद्ध

—सुधीर कुमार

राजस्थान में किलों और महलों के अस्तित्व में आने से पहले ही चार स्थानों पर बौद्ध मठ या बौद्ध परिसर मौजूद थे । जयपुर में बैराठ, झालावाड़ में कोल्वी, दौसा में भंदरेज और टोंक में रामागांव में बौद्ध स्तूपों के अवशेष देखे जा सकते हैं। पुरातत्व विभाग द्वारा उपलब्ध सूचना के अनुसार भंदरेज स्थित भंडान माता के मन्दिर के प्रांगण में ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी की यक्ष प्रतिमाएं तथा गुप्तकालीन देवालयों के अवशेष देखे जा सकते हैं, जो यहाँ की प्राचीनता के द्योतक हैं।

बैराठ (विराट नगर)

राजस्थान के जयपुर जिले में शाहपुरा के अलवर–जयपुर रोड के उत्तर–पूर्व की तरफ 52 किलोमीटर दूर अरावली की पहाडियों के मध्य में बसा बैराठ यानि विराट नगर कस्बा, आज भी अपनी पौराणिक ऐतिहासिक विरासत को समेटे हुए हैं। विराट नगर का यह कस्बा प्राचीन मत्स्यराज की राजधानी रहा था। चारों और सुरम्य पर्वतों से घिरे इस क्षेत्र में प्राचीन महत्वपूर्ण पुरातात्विक अवशेषों की सम्पदा बिखरी पड़ी है।

बैराठ में बुद्ध के टीले का एक विहंगम दृश्य

*सेवानिवृत सहायक महानिदेशक, पर्यटन मंत्रालय

विराटनगर नाम से प्रायः लोगों को नेपाल का भ्रम हो जाता है जो भारत और नेपाल की सीमा में हैं। लेकिन नेपाल का विराट नगर, महाभारत कालीन विराटनगर नहीं है।

बैराठ का स्तूप

यह बौद्ध धर्म की सबसे शुरुआती संरचनाओं में से एक है और इनकी शैली पश्चिमी और पूर्वी भारत के कई रॉक–कट मंदिरों की तरह किसी सुसज्जित मॉडल के समान है । इसमें केवल एक ही भिक्षु या भिक्षुणी द्वारा उपयोग करने योग्य पर्याप्त कक्ष बनाए गए थे मंदिर निचले मंच पर स्थित है और इसमें एक चक्करदार पथ है। यह पकी हुई ईंटों से बना है । यहां बनाए गए खंभे अशोक युग के समकालीन हैं।

इतिहास

राजा विराट के मत्स्य प्रदेश की राजधानी के रूप में विख्यात यह वही विराट नगर है जहाँ महाभारत काल में पांडवों ने अपना अज्ञातवास व्यतीत किया था। विराट नगर की स्थापना यादव राजाओं ने की थी। यह हमेशा से ही यादवों द्वारा शासित राज्य रहा है। इसके दक्षिण की ओर बीजक पहाड़ी है। स्थल पर महाभारत कालीन स्मृतियों के भौतिक अवशेष तो अब यहां नहीं रहे किंतु यहां ऐसे अनेक चिन्ह हैं जिनसे पता चलता है कि यहां पर कभी बौद्ध एवं जैन सम्प्रदाय के अनुयायियों का विशेष प्रभाव था।

राजस्थान विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की प्रोफेसर डॉ. निकी चतुर्वेदी ने 'रिविजिटिंग इंडियाज़' पास्ट्' शीर्षक से राजस्थाभन के बौद्ध स्थलों पर अपनी शोध रिपोर्ट तैयार की है। चतुर्वेदी ने दावा किया है कि यह बौद्ध संरचनाएं सम्राट अशोक के समय के आसपास और बाद 300 ईस्वी और 900 ईस्वी के बीच की हैं। इससे पता चलता है कि यह क्षेत्र वास्तव में प्रारंभ से ही बौद्ध धर्म की गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण स्थान था, जो सदियों से धीरे–धीरे लुप्त हो गई हैं। उनके अध्ययन में कहा गया है कि जयपुर से 52 मील की दूर बैराठ में एक गोलाकार मंदिर, मठ और सम्राट अशोक युग के कई अवशेष हैं। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्यूएन–त्सांग ने भी अपने यात्रा वृतांत में इस स्थल का उल्लेख किया था।

इस के ऊपर दो समतल मैदान हैं जहां पर व्यवस्थित तरीके से पथ बनाया गया है। इस मैदान के मध्य में एक गोलाकार परिक्रमायुक्त ईंटों का मन्दिर था जो आयताकार चार दीवारी से घिरा हुआ था। इस मन्दिर के गोलाकार भीतरी द्वार पर 27 लकड़ी के खम्भे बने हुए थे। यह अवशेष एक बौद्ध स्तूप के हैं जिसे सांची व सारनाथ के बौद्ध स्तूपों की तरह गुम्बदाकार बनाया गया था। यह बौद्ध मंदिर पक्की ईंटों की दीवार से बना हुआ था, जिसके चारों तरफ सात फुट चौड़ी गैलरी है। इस गोलाकार मंदिर का छः फुट चौड़ा प्रवेश द्वार पूर्व की तरफ खुलता हुआ है। बाहर की दीवार एक फुट चौड़ी ईंटों की बनी हुई है। इसी प्लेटफार्म पर बौद्ध भिक्षु एवं भिक्षुणियों आदि के चिंतन–मनन करने हेतु श्रावक गृह बने हुए थे।

यहां बनी 12 कक्षों/कोठरियों के अलावा अन्य कई कोठरियों के अवशेष भी चारों तरफ देखे जा सकते हैं। यह कोठरियां साधारण वर्गाकार रूप में बनाई गई थीं। इन पर किए गए निर्माण कार्यों पर सुंदर आकर्षक प्लास्टर किया जाता था। इस प्लेटफार्म के बीच में पश्चिम की तरफ शिलाखण्डों को काटकर गुफा–गृह बनाया गया था जो दो तरफ से खुलता था। इसमें भी भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के निवास का प्रबंध किया गया था। इस गुफा–गृह के नीचे एक चट्टान काटकर कुंड अर्थात् छोटा तालाब बनाया गया है जिसमें पीने के लिए पानी इकट्ठा किया जाता था।

भाबरू शिलालेख

विराट नगर की बुद्ध–धाम बीजक पहाड़ी पर स्थित इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक चट्टान है जिस पर भाबरू बैराठ शिलालेख उत्कीर्ण है। इसे बौद्ध भिक्षु एवं भिक्षुणियों के अलावा आम लोग भी पढ़ सकते थे। इस शिलालेख को "भाबरू शिलालेख" के नाम से भी जाना जाता था। यह शिलालेख पाली व ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ था, जो अशोक युग की कला का एक श्रेष्ठ उदाहरण हैं। इस प्रकार, उस समय बौद्ध भिक्षुओं की एक महत्वपूर्ण उपस्थिति को दर्ज करता है। यह अब जीर्ण अवस्था में है। आज इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म या संस्कृति का उल्लेख नहीं मिलता है, इससे ज्ञात होता है कि समय के साथ साथ बौद्ध संस्कृति और उसकी गतिविधियां धीरे–धीरे लुप्त हो गईं।

भाबरू शिलालेख

झालावाड़

राजस्थान में दूसरा स्थान है झालावाड़ जहां बुद्धकालीन अन्य महत्वपूर्ण संरचनाएं लगभग 20 कि. मी. के क्षेत्र में टोंक जिले के सीमावर्ती इलाकों तक फैली हुई हैं। इस क्षेत्र में बहु–संरचना संरचनाओं में कुल 50 गुफाएं हैं जो 700–900 ईस्वी से पहले की हैं। शोधकर्ता के अनुसार यह गुफाएं व्यापक रूप से चार परिसरों में विभाजित है– झलवाड़ में कोल्वी, हथियागोड, बिन्नायागा – जिसे प्राचीन काल में सम्भवतः विनायक कहा जाता था और टोंक में रामागांव।

कोल्वी की गुफाएं

झालावाड़ शहर से 90 कि.मी. दूर बौद्ध गुफाएं और बौद्ध स्तूप झालावाड़ के मुख्य आकर्षण हैं। चट्टानों में ही काटी गई यह मौलिक गुफाएं कोल्वी, गाँव में खुदाई के दौरान मिली थीं। पुरातत्व और इतिहास की दृष्टि से यह गुफाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं। भगवान बुद्ध की गजरूप संरचना और स्तूप पर सुंदर नक्काशी गुफाओं की सुंदरता को और बढ़ाते हैं। इस स्थान के मूल निवासियों में बौद्ध संस्कृति की कुछ छाप देखी जा सकती है।

झालावाड़ जिले के कोल्वी में, 64 भिक्षु कक्षों के खंडहर एक बड़े परिसर में स्थित हैं जिन्हें परिक्रमा पथ की तरह घुमावदार बनाया गया है। इस स्थल पर बुद्ध की प्रतिकृति की मूर्तियां हैं। यहीं पर प्रचार मुद्रा में 12 फीट खड़े बुद्ध हैं। लेकिन इतिहास की किसी पाठ्यपुस्तक में इन स्थानों के बारे में कोई उल्लेख नहीं है।

झालावाड़ कैसे पहुंचे :

वायु मार्ग – निकटतम हवाई अड्डा कोटा (87 किलोमीटर) में है।

सड़क मार्ग– राजस्थान परिवहन की बसों से दिल्ली, जयपुर आदि से झालावाड़ पहुंचा जा सकता है।

कहां ठहरें:

आर.टी.डी.सी. होटल चंद्रावती, द्वारिका होटल, पूर्वज होटल, सूर्य होटल आदि। सर्किट हाउस।

के आकार में हैं। आवड़ गांव के पूर्व में भी पहाड़ी को काटकर बुद्ध की गुफाएं बनाई गई है। गुफाओं की अतिरिक्त चट्टानों को काटकर यहां मंदिर बनाए गए हैं। ये भिन्न–भिन्न आकार के हैं। इसमें सभी की छतें सीधी हैं। पगड़िया ग्राम के दक्षिण में हाथिया गौड़ पहाड़ी पर भी पांच गुफाएं हैं जिनकी छतें गोलाकर हैं। इसी प्रकार गुनाई नामक ग्राम के नजदीक दक्षिण दिशा में चार बौद्धकालीन गुफाएं हैं, जो कोल्वी और

बौद्धकालीन कोल्वी गुफाएं

झालावाड़ के दक्षिण में स्थित डग पंचायत समिति क्षेत्र में कई स्थानों पर पत्थरों के विशाल खण्डों को काटकर बनाई गई गुफाएं और स्तूप हैं। क्यासरा गांव से पांच किलोमीटर उत्तर–पश्चिम की ओर पहाड़ की चोटी पर 35 कोलवी गुफाएं बनी हैं। इनमें से अधिकांश गुफाएं अब खत्म सी हो गई हैं। अब यहां पांच खंड हैं जिनमें तीन स्तूप और दो मंदिर विनायक के समकालीन मानी गई हैं।

यहां सम्राट अशोक का एक शिलालेख पाया गया था। जिसके बारे में कहा जहां है कि इसे सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया था ताकि जनसाधारण उसे पढ़कर तदनुसार आचरण कर सके। कालान्तर में 1840 में ब्रिटिश सेनाधिकारी कैप्टन बर्ट ने इस शिलालेख को कटवा कर कलकत्ता

के संग्रहालय में रखवा दिया था। आज भी विराटनगर का यह शिलालेख वहां सुरक्षित रखा हुआ है। इसी प्रकार एक और शिलालेख भीमसेन डूंगरी के पास आज भी स्थित है। यह उस समय मुख्य राजमार्ग था। बीजक की पहाड़ी पर बने गोलाकार मन्दिर के प्लेटफार्म के समतल मैदान से कुछ मीटर ऊंचाई पर पश्चिम की तरफ एक चबूतरा है जिसके सामने भिक्षु बैठकर चिन्तन–मनन करते थे। यहीं पर एक स्वर्ण मंजूषा थी जिसमें भगवान बुद्ध के दो दांत एवं उनकी अस्थियां रखी हुई थीं। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, सम्राट अशोक स्वयं बैराठ में आए थे। यहां आने के पहले वे 255 स्थानों पर बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार कर चुके थे। बैराठ वर्षो तक ''बुद्धम् शरणम् गच्छामी, धम्मम् शरणम् गच्छामी, संघम् शरणम् गच्छामी'' के मंत्र से गुंजायमान रहा है।

यह स्थल बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार का केंद्र रहा था। कालान्तर में जैन समाज के विमल सूरी नामक संत यहां आए और उन्हों ने यहीं पर रहकर वर्षो तपस्या की थी। ऐसी भी मान्यता है कि उन्हीं के प्रभाव में आकर सम्राट अकबर ने सम्पूर्ण मुगल राज्य में वर्ष में एक सौ छः दिन के लिए जीव हत्या बंद करवा दी थी।

टोंक में रामागांव

पगड़िया गांव से पांच कि.मी.दूर हथियागोड में पांच गुफाओं की खोज की गई है। यह स्थल दो पहाड़ियों के बीच की तलहटी में फैला हुआ है। दोनों पहाड़ियों के बीच थोड़ी गहरी घाटी है। यहां की संरचनाओं में एक गुंबददार छत और ठोस पत्थर के खंभे हैं। बिन्नयागा पहाड़ियों में, जो हथियागोड से 16 कि.मी. दूर हैं, स्तूप के आकार में एक गुफा है और इसकी छत की संरचना अजंता में गुफाओं की तरह एक चैत्य के रूप में है। यह संरचनाएं अशोक के काल के काफी बाद की लगती हैं ।

दौसा में भंदारेज

भंडारेज की साइट जयपुर से 65 कि.मी. दूर दौसा जिले के लालसोंट में स्थित है। यहां 50 फीट की ऊंचाई पर एक बड़े परिसर के खंडहर स्थित हैं। यह स्थान एक बड़े बौद्ध परिसर की उपस्थिति को इंगित करता है। हालांकि, इसके आस–पास घनी आबादी के कारण यहां खुदाई और खोज की संभावनाओं पर विराम–सा ही लग गया है।

दौसा शहर दिल्ली– रेवाड़ी– अलवर–दौसा रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। सड़क मार्ग से भी दौसा के लिए विभिन्न शहरों से सीधी बस सेवा उपलब्ध है।

यह सभी संरचनाएं इस तथ्य का संकेत देती हैं कि राजस्थान भी बौद्ध धर्म की लहर से अछूता नहीं रहा था । इस तरह के विस्तृत स्थलों की उपस्थिति इस बात का प्रमाण हैं कि बौद्ध धर्म अपने प्रारंभिक काल में राजस्थान में विकसित रूप में मौजूद था। डॉ. चतुर्वेदी के अनुसार इन स्थलों को पर्यटन मानचित्र पर नहीं दर्शाया गया है । इन स्थलों के बारे में शोध करने के बारे में तभी से सोचने लगी जब वह स्कूल की छात्रा थी और यहां घूमने आती थी। उन्होंने क्षेत्र में सांस्कृतिक प्रथाओं पर इन संरचनाओं पर प्रभाव का अध्ययन करने का मन बनाया लेकिन अभी तक वह इन क्षेत्रों में किसी भी बौद्ध परिवार का पता लगाने में नाकाम रही है।

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पहले महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा खोजे गए इन ऐतिहासिक स्थलों के बचाने की आवश्यकता है।

विराटनगर में अन्य दर्शनीय/पर्यटन स्थल

श्रीकेशवराय मंदिर

महाभारतकालीन गौरव में आराध्यदेव भगवान श्री केशवराय का प्रसिद्ध मंदिर, जिसमें श्रीकृष्ण की तीन तथा भगवान श्रीविष्णु की तीन प्रतिमाएं स्थापित हैं । 64 खम्बे और आठ ड्योढी हैं । केशवराय मंदिर विश्व के पर्यटकों के साथ ही श्रृद्धालु भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है जिसमे भगवान केशव एवम् विष्णु के साथ कोई शक्ति (देवी) नहीं है। भगवान केशव का जो रूप महाभारत में था, उसी स्वरूप में श्रीकृष्ण का मंदिर विद्यमान है। श्रीकेशवराय मंदिर नगर के मध्य आकर्षक का केंद्र है। इसीलिए विराटनगर पर्यटन नगरी में सुविख्यात है।

विराटनगर पौराणिक, प्रगैतिहासिक महाभारतकालीन तथा गुप्तकालीन ही नहीं मुगलकालीन महत्वपूर्ण घटनाओ को भी अपने में समेटे हुए है। राजस्थान के जयपुर और अलवर जिले की सीमा पर स्थित विराटनगर में पौराणिक शक्तिपीठ, गुफा चित्रों के अवशेष, बौद्ध मठों के भग्नावशेष, अशोक का शिला लेख और मुगलकालीन भवन विद्यमान है। प्राकृतिक शोभा से परिपूर्ण में अनेक जलाशय और कुंड इस क्षेत्र की शोभा बढाते हैं । विराटनगर के निकट सरिस्का राष्ट्रीय व्याघ्र अभ्यारण, भर्तृहरी का तपोवन, पाण्डुपोल नाल्देश्वर और सिलिसेढ़ जैसे रमणीय तथा दर्शनीय स्थल लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करते है। यहाँ के दर्शय दर्शनीय स्थलो में प्रसिद्ध श्रीकेश्वराय मंदिर नगर के मध्य आकर्षक का केंद्र है।

पावन धाम

महान हिन्दू संत, महात्मा रामचन्द्र वीर की जन्मभूमि भी है। उनके द्वारा स्थापित पावन धाम पंचखंड पर्वत पर वज्रांग मंदिर है। इस मंदिर के विषय में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यहां श्री हनुमान को वानर नहीं माना जाता बल्कि तन से उनको मानव सामान दिखाया गया है। विराट नगर के उत्तर पश्चिम मैं स्थित गोगेरा पर्वत है जो विराट नगर से 90 कि०मी० की दूरी पर जयपुर और 60 कि०मी० पर अलवर और 40 कि०मी० पर शाहपुरा स्थित है।

चमत्कारिक भैरू बाबा का मन्दिर विराट नगर के पूर्व में स्थित है मान्यता के अनुसार यह मन्दिर महाभारत काल का है और भक्तों द्वारा भैरू बाबा को मदिरा का भोग लगाने से हर मन्नत पूरी होती है ।

विराट नगर के उत्तर में नसिया में जैन समाज का संगमरमर का भव्य मंदिर है। इस मन्दिर की भव्यता देखते ही बनती है। पहाड़ की तलहटी में स्थित यह मन्दिर अपनी धवल आभा के कारण प्रत्येक आगन्तुक को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ पर पंचखंड पर्वत पर भीम तालाब और इसके ही निकट जैन मंदिर और अकबर की छतरी है जहाँ अकबर शिकार के समय विश्राम करते थे ।

नसिया के पास ही मुगल गेट भी बना हुआ है। इस इमारत को अकबर ने बनवाया था। वह यहां पर शिकार के लिए आया करता था। यहीं पर अकबर ने राज्य के लिए सोने चांदी एवं तांबे की टकसाल स्थापित की थी, जो औरंगजेब के समय तक चलती रही।

(डॉ. निकी चतुर्वेदी को आभार व्यक्त करते हुए विशेष धन्यवाद सहित)

हरियाणा में बौद्ध विरासत

यहाँ भी मुस्कुराए थे बुद्ध

—आदित्य मोहन

कुरुक्षेत्र हरियाणा राज्य का एक प्रमुख जिला है। इसका शहरी इलाका एक अन्य ऐतिहासिक स्थल स्थानेश्वर (आज कल थाणेसर के नाम से प्रचलित) से मिला हुआ है। यह एक महत्वपूर्ण हिन्दू तीर्थस्थल है। माना जाता है कि यहीं महाभारत की लड़ाई हुई थी। यहीं ज्योतिसर नामक स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था।

कुरूक्षेत्र बौद्ध धर्म का भी तीर्थ स्थल है। यद्यपि ऐसा माना जाता है कि भगवान बुद्ध का प्रभाव उत्तर प्रदेश और बिहार में है, लेकिन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा कराई गई खुदाई से ज्ञात हुआ है कि हरियाणा में भी कई स्थानों पर बौद्ध विरासत स्थल मौजूद हैं। कुरूक्षेत्र, असंध, अग्रोहा (हिसार) तथा यमुनानगर में सुघ और चिन्हेती ऐसे नगर/कस्बे हैं। इनमें से कुछ स्मारकों के बारे में काफी समय बाद पता चल पाया था, जहां शांतिदूत महात्मा बुद्ध स्वयं इन स्थानों पर आए थे और लोगों को शांति एवं करूणा का संदेश दिया था

हरियाणा के कुरुक्षेत्र में स्तूप तथा एक मठ है। यमुनागर जिले में चिन्हेती बुद्ध स्तूप, सुघ बुद्ध विहार और आदि बद्री मंदिर हैं। करनाल जिले के असंध में बुद्ध स्तूप और हिसार में अग्रोहा में एक स्तूप और एक मठ तथा बुद्ध से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण स्थान हैं।

भारत सरकार, पर्यटन मंत्रलय ने हरियाणा को देश के उन 12 चुनिंदा राज्यों में शामिल किया है, जहां बौद्ध परिपथ स्थापित करने की योजना है। केंद्र सरकार की इस परियोजना से ब्रह्मसरोवर तट पर स्थित बौद्ध स्तूप का विकास किया जाएगा।

श्रीकृष्ण के गीता संदेश, बौद्ध की अमर वाणी और आठ सिख गुरुओं के आगमन के साक्षी कुरुभूमि का अब बुद्धिस्ट परिपथ रुप में भी विकास किया जाएगा।

कुरुक्षेत्र के बारे में...

लगभग 1500 ईसा पूर्व के आरंभिक दौर में आर्यो के भारत में आने तथा यहीं पर बसने का क्षेत्र भी कुरुक्षेत्र को माना जाता है। यह महाभारत काल से जुड़ा एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसका वर्णन भगवद्गीता के पहले श्लोक में मिलता है। इसलिए इस क्षेत्र को धर्म क्षेत्र कहा गया है। स्थानेश्वर नगर राजा हर्ष की राजधानी (606–647) था। पौराणिक काल में कुरुक्षेत्र को ब्रह्म की यज्ञिय वेदी कहा जाता था। कालान्तर में यह भूमि कुरुक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध हुई जब कि संवरण के पुत्र राजा कुरु ने सोने के हल से सात कोस भूमि जोत डाली थी। कहा जाता है कि महाकाव्य महाभारत में वर्णित कौरवों और पांडवों के पूर्वज राजा कुरु ने यहाँ एक विशाल तालाब का निर्माण करवाया था। इसलिए कुरुक्षेत्र नाम 'कुरु के क्षेत्र' का प्रतीक है।

2600 ईसा पूर्व पड़े थे बुद्ध के चरण

2600 ईसा पूर्व महात्मा बुद्ध के पवित्र चरण कुरुभूमि पर भी पड़े थे। उन्होंने यहां अनोत्ता झील (कमल के फूलों के कुंड) पर प्रवचन दिए थे। महाकवि कालीदास ने भी

*सम्प्रतिः स्वतंत्र ब्लागर, नई दिल्ली

मेघदूत में कुरुक्षेत्र का वर्णन किया है,' जिसमें लिखा है कि जब आप कुरुक्षेत्र के ऊपर आकाश से गमन करोगे तो नीचे जगह–जगह कमल कुंज दिखेंगे।' कुछ विद्वानों के मुताबिक प्राचीन समय में संभव है कि कुरुक्षेत्र में ऐसी कोई जगह रही होगी जहां कमल के फूल होंगे और इन्हीं में किसी एक को अनोत्ता झील कहा जाता होगा। वर्तमान में अनोत्ता झील कुरुक्षेत्र में कहां है, यह शोध का विषय हो सकता है।

बौद्ध और कुरु धम्म में थी काफी समानता

बौद्ध धर्म की प्रचार यात्रा के लिए महात्मा बुद्ध विश्व के अनेक स्थानों पर घूमे और इसी में शामिल है उनकी कुरु धम्म यात्रा। श्रीकृष्ण संग्रहालय के प्रभारी के अनुसार जब महात्मा बुद्ध कुरु प्रदेश आए थे। यहां उन्होंने बौद्ध धम्म से काफी हद तक समानता रखने वाले कुरु धम्म को देखा। इसी वजह से उन्हें इस क्षेत्र के वासियों को बौद्ध धर्म की ओर लाने के लिए सारगर्भित प्रवचन और संदेश दिए। उन्होंने इस क्षेत्र के लोगों की भाषा और व्यवहार को श्रेष्ठ बताया, जिसका उल्लेख धर्मग्रंथों में है।

कुरूक्षेत्र के इस प्राचीन क्षेत्र में महात्मा बुद्ध ने जहां प्रवचन किए, उनमें कमासधम और ठुलकोठित शामिल हैं। कुछ इतिहासकार बुद्ध के विशेष संदेश स्थलों में ठुलकोठित को वर्तमान में जिला कुरुक्षेत्र के ठोल और कुरड़ी गांव को मानते हैं, जिसका प्राचीन नाम ठुलकोठित रहा होगा।

बौद्ध परिपथ स्थापित करने की योजना विश्व के विभिन्न देशों में बसे बौद्ध अनुयायियों को आकर्षित करने के लिए बनाई गई है। उत्तर प्रदेश और बिहार में पहले से ही बौद्ध परिपथ हैं, जहां पूरे वर्ष विश्व से श्रृद्धालु पर्यटक आते हैं। अब भारत सरकार का पर्यटन मंत्रालय देश के उन राज्यों में भी बौद्ध परिपथ बनाने जा रहा है, जहां पर महात्मा गौतम बुद्ध के चरण पड़े और जहां आज भी बौद्ध स्तूप मौजूद हैं। ध र्मनगरी कुरुक्षेत्र के ऐतिहासिक बौद्ध स्तूप का वर्णन कई ग्रंथों में पाया जाता है। स्थानेश्वर के तत्कालीन शासक हर्षवर्धन के शासनकाल में यहां आए चीनी यात्री हुएनसांग ने भी कुरुभूमि के स्तूप का वर्णन किया है।

तक्षशिला और मथुरा के बीच व्यापार के प्राचीन मार्ग पर स्थित होने के कारण, सम्राट अशोक के काल से 13वीं ई. तक की अवधि में इसे कृषि और राजनीतिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र माना

कुरुक्षेत्र स्थित ब्रह्म सरोवर के शेरों वाले घाट के सामने वर्तमान में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की परिधि में स्थित प्राचीन बौद्ध स्तूप कुछ साल पहले तक लुप्त प्रायः ही थे। लेकिन बौद्ध धर्म के अनुयायी पिछले कुछ वर्षों से लगातार विशेष अवसरों पर यहां आयोजन कर रहे हैं। अब इस स्तूप के जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है।

केंद्र सरकार की परियोजना पर एक साल पहले हरियाणा पुरातत्व विभाग ने कुरुक्षेत्र स्थित बौद्ध स्तूप स्थल के जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण का कार्य हरियाणा पर्यटन निगम को दिया है। कुरुक्षेत्र के बौद्ध स्तूप स्थल को विकसित करना है, जिसमें पथ (टीले तक जाने का रास्ता), चारदीवारी, पार्किंग, स्वागत कक्ष, टायलेट ब्लॉक और पर्यटकों के बैठने का स्थान तैयार होगा।

जाता था।

सड़क मार्ग: यह राष्ट्रीय राजमार्ग–I पर स्थित है। हरियाणा रोडवेज और अन्य राज्य निगमों की बसों से कुरुक्षेत्र पहुंचा जा सकता हैं।

रेल मार्ग: कुरुक्षेत्र में रेलवे जंक्शन है, जो देश के सभी महत्वपूर्ण शहरों के साथ दिल्ली से सीधा जुड़ा है।

हवाई मार्ग: कुरुक्षेत्र आने के लिए दिल्ली तथा चंडीगढ़ निकटम हवाई अड्डे हैं।

कहां ठहरें: कुरुक्षेत्र में अच्छे बजट तथा स्टार होटल उपलब्ध है। इनके अलावा धर्मशालाएं भी उपलब्ध हैं।

भारत वर्ष के महान सम्राट अशोक के शासनकाल में कुरुक्षेत्र के स्तूप बनाए जाने की बात पुरातत्वविद् मानते हैं। वर्तमान में ब्रह्म सरोवर के प्राचीन शेरों वाले घाट के ठीक सामने पुरातत्व महत्व के एक स्थल पर आज भी जीर्णशीर्ण हालत में एक बौद्ध स्तूप मौजूद हैं। पिछले कुछ समय से इस स्तूप स्थल के जीर्णोद्धार का कार्य काफी धीमी गति से चल रहा है। अब पर्यटन मंत्रालय की इस नई परियोजना के बाद आशा की जाती है कि इसके आसपास के क्षेत्रा को भव्य रुप मिल सकेगा।

असंध

असंध करनाल से यह लगभग 45 कि. मी. करनाल जिले का एक कस्बा है। असंध में 2000 वर्षो से अधिक पुराने बौद्ध स्तूप हैं। मिट्टी के प्लेटफार्म पर ईंट से बना स्तूप 25 मीटर ऊंचा और 75 मीटर चौड़ा है। कुशाण द्वारा निर्मित, असंध स्तूप को भारत में सबसे ऊंचा स्तूप माना जा सकता है।

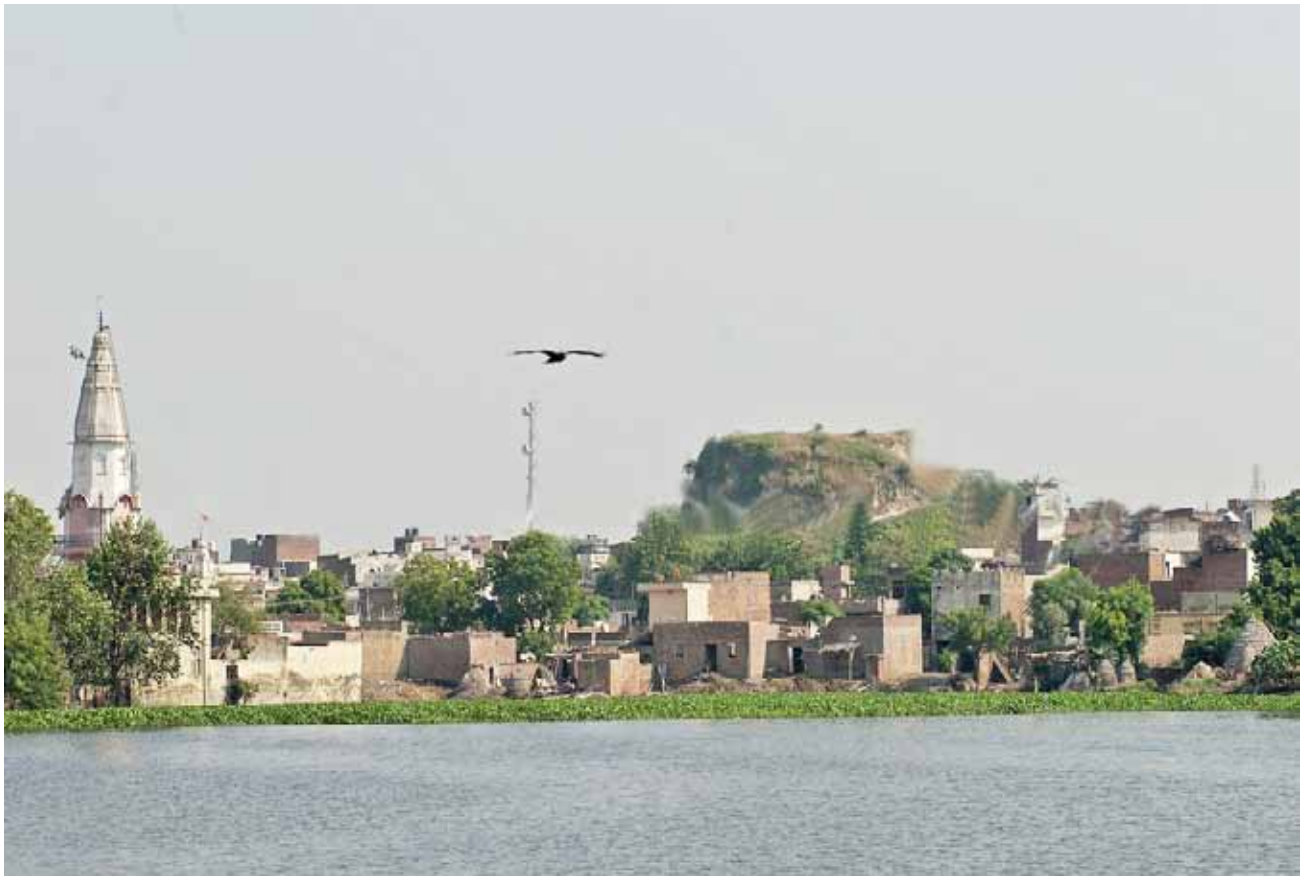

असंध के टीले का दृश्य

हर्ष के समय का टीला

इतिहासकार चार्ल्स एलन का अनुमान है कि इस नगर का संबंध भारत के महान चक्रवर्ती सम्राट अशोक की अग्रमहिषी (महारानी) असंधमित्ता से है। असंध के स्तूप को वह इसका प्रमाण मानते हैं।

अग्रोहा

हरियाणा के हिसार जिले में है अग्रोहा। पुरातात्विक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि 5वीं सदी ईसापूर्व से पहले इस नगर को स्थापित किया गया था। यहां अन्वेषण हेतु की गई खुदाई में कुशाण कालीन सिक्के, बर्तन, मोहरें, बालकों की मूर्तियां, टेराकोटा सील, और मानव कपालों के साथ डिजाइनदार पक्की ईंटें आदि मिली हुई हैं। अग्रोहा पौराणिक सम्राट अग्रसेन की राजधानी थी। इसे अग्रहारी और अग्रवाल समुदायों का मूल स्थान भी माना जाता है।

पहली खुदाई में इसका प्राचीन नाम 'अग्रोडका' और जनपद का मुख्यालय होने की संभावना जताई गई है।

सड़क मार्ग: हिसार और अग्रोहा के लिए नई दिल्ली, रोहतक तथा चंडीगढ़ से हरियाणा रोडवेज की बसों से पहुंचा जा सकता है।

रेल मार्ग: निकटतम रेलवे स्टेशन हिसार है।

कहां ठहरें : हिसार में अच्छे बजट होटल तथा गेस्ट हाउस मिल जाते हैं।

अग्रोहा में बौद्ध स्तूप

अग्रोहा का स्तूप तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का माना जाता है और यहां खुदाई में हड़प्पा कालीन सिक्के, पत्थर की मूर्तियां, टेराकोटा सील, लोहे और तांबे के औजार, गोले और कई अन्य चीजें मिली हैं ।

हिसार के अग्रोहा गांव में, खुदाई के दौरान एक प्राचीन बौद्ध मठ और स्तूप की खोज की गई है। यहां पाए गए इन बौद्ध स्मारकों को 1,500 साल पहले बनाया गया था। यहां स्तूप का आयताकार आधार दर्शनीय है। ऊपरी भाग को गुंबद जैसा आकार दिया गया है। स्तूप के शीर्ष पर, बुद्ध के अवशेषों को रखने के लिए एक गहरा गड्ढा बनाया गया था जिसे साफ तौर पर देखा जा सकता है। इसके चारों ओर एक चक्कंरदार रास्ता है। खुदाई से पता चला कि यहां मठ के निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग किया गया था।

तीन हजार साल पहले, यहां अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन का राज्य था। अग्रोहा का टीला या 'थेर' (ढेर) वर्तमान अग्रोहा गांव से लगभग डेढ कि.मी. दूर है। इस टीले के नीचे प्राचीन शहर के अवशेष हैं। इसकी खुदाई वर्ष 1978 में शुरू हुई थी। तब लोगों को इस महान साम्राज्य के बारे में पता चला कि प्राचीन अग्रोहा नगर कुशाण राजवंश से कुछ सौ साल पहले अस्तित्व में था। एक समय में यह राज्य अपनी समृद्धि के लिए प्रसिद्ध था। समय के साथ यह ग्रीक, यवन और हूणों के आक्रमणों का सामना नहीं कर सका। इन आक्रमणों से आतंकित और परेशान होकर अधिकतर अग्रोहावासी यहां से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पलायन कर गए। वहां के लोगों ने उन्हें अग्रोहा–वाला कहा जो बाद में धीरे धीरे अग्रवाल कहलाए। खुदाई से ज्ञात हुआ है कि यहां एक सुनियोजित और प्रगतिशील शहर मौजूद था। उत्खनन स्थल से बड़ी संख्या में विभिन्न आकारों के चांदी और कांस्य सिक्के मिले हैं। सिक्कों पर लिपियों से साबित होता है कि वे विभिन्न कालावधियों से संबंधित हैं। मिट्टी और पत्थर से बनी मूर्तियों के साथ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से संबंधित कई बर्तन भी मिले हैं।

हिसार किले में लगी अशोक (234 ईसा पूर्व) की लाट मूल रूप से अग्रोहा के समय की है।

यमुनानगर

आदि बद्री हरियाणा के यमुनानगर जिले में स्थित वनक्षेत्र है। यह स्थान पौराणिक काल की महत्वपूर्ण सरस्वती नदी का उद्गम स्थल माना जाता है, जो अब लुप्त हो चुकी है। यहां आदि बद्री मठ होता था। बुद्ध और उनके शिष्य आनंद मथुरा और तक्षशिला के प्राचीन मार्ग से हरियाणा के रास्ते कई बार यात्रा करते थे। इस दौरान वह यमुनागर के आदि बद्री मठ में भी रूकते थे। आज इस स्थान पर आदि बद्री मंदिर है। लेकिन इस मंदिर की दीवारों पर आज भी बुद्ध की छोटी–छोटी मूर्तियां मौजूद हैं। पुरानी दीवारों को देखने से लगता है कि यह कभी बौद्ध मठ रहा था।

आदि बद्री का प्राचीन मठ, जो अब आदि बद्री मंदिर में नाम से जाना जाता है।

सुघ -श्रुग्ना मठ

यमुना नगर में सुघ गांव में श्रुग्ना मठ है। कहा जाता है कि स्वयं महात्मा बुद्ध कुछ दिन यहां ठहरे थे। चीनी यात्री ह्युएन त्सांग ने एक विकसित स्थान के रूप में इस स्थल की महिमा का वर्णन किया है और बताया है कि यहां पांच हीनयान मठों में 1000 भिक्षुओं के आवास की व्युवस्था थी। उस समय श्रुग्ना में एक विद्यापीठ तथा व्यापार केंद्र था।

संस्कृत व्याकरणिक पाणिनी द्वारा लिखे गए अष्टाध्याय में इस शहर के सबसे शुरुआती संदर्भ पाए जाते हैं। उन्होंने इस स्थान को तुर्गना कहा है, जिसे इतिहासकारों द्वारा आधुनिक श्रुग्ना, जो बिगड़ कर सुघ के रूप में जाना जाता है।

सुघ के प्राचीन खंडहर (साभार ट्रिब्यून, चंडीगढ़ में दिनांक 14 मई, 2017)

इतिहास के पूर्व प्रोफेसर डॉ. राजपाल सिंह के अनुसार, चीनी यात्री ह्युएंग्त्सांग ने उल्लेख किया था कि श्रुग्ना (आधुनिक सुघ का मूल नाम) भारतीय उपमहाद्वीप में श्रेष्ठ विद्यापीठ और दार्शनिक बहस का केन्द्र था। उनका मानना है कि यह भारत में एकमात्र ऐसा स्थान है जहां सुंग काल (187–78 ईसा पूर्व) के वानर की टेराकोटा की आकृतियां यहां पाई गई हैं।

1970 के दशक में, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सूरजभान को 2100 वर्ष पुराने टेराकोटा की एक बालक की मूर्ति मिली थी, जिसमें बच्चे को कुछ लिखते हुए दिखाया गया है। यह मूर्ति राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में सुरक्षित है। इससे ज्ञात होता है कि सुंग काल में बाल शिक्षा व्यापक थी। डॉ सिंह का मानना है कि सुघ को पहली बार भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के प्रथम महानिदेशक, सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने ही पहचाना था।

यह माना जाता है कि बुद्ध की यात्रा के बाद सम्राट अशोक ने इस स्थान पर बौद्ध स्तूप और अन्य मठों की स्थापना कराई थी। उनके बाद के अन्य राजाओं ने वाणिज्य के केंद्र के साथ–साथ यहां एक विद्यापीठ बनाने में भी मदद की। उनका कहना है कि चीनी यात्री ह्युएंग त्सांग ने इस क्षेत्र के आस पास 100 हिंदू मंदिर,10 स्तूप और पांच मठों को रिकॉर्ड किया था। डॉ शर्मा कहते हैं, ''सुघ गांव में, टीले से तीन कि.मी. चिन्हेती गांव में केवल एक स्तूप मौजूद है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित स्तूप और एक टीला सरकारी उपेक्षा का शिकार है।

चिन्हेती स्तूप

यमुनानगर में स्थित, चिन्हेती स्तूप की ऊंचाई आठ मीटर है। चीनी यात्री ह्युएन त्सांग के अनुसार, सम्राट अशोक ने धर्म के प्रचार के लिए इस स्तूप का निर्माण कराया था।

यमुना नगर में चिनहेती का स्तूप

lMd ekx%: दिल्ली तथा चंडीगढ़ से हरियाणा रोडवेज और अन्य राज्य निगमों की बसों से यमुना नगर पहुंचा जा सकता है ।

jy ekx%: यमुना नगर का निकटतम रेलवे स्टेशन जगाधरी है।

dgk Bgj%: यमुना नगर में अच्छे बजट तथा और होटल उपलब्ध है ।

2010 से, यमुनागर स्थित एक गैर–धार्मिक संगठन "तुर्गना बौद्ध फोरम" (टीबीएफ) इस बारे में लोगों में जागरूकता अभियान चला रहा है। फोरम के अध्यक्ष सिद्धार्थ गौरी का कहना है कि प्राचील काल में आक्रमणकारियों ने और अब स्थानीय अतिक्रमणकारियों ने हमारी विरासत को क्षतिग्रस्त कर दिया है। उनका संगठन यमुनागर में बौद्ध स्थलों को बचाने के लिए काम कर रहा है। उनका यह भी कहना है कि आज हरियाणा में शायद ही कोई बुद्धिस्ट पाएंगे। पिछले पांच सालों से प्रति वर्ष बुद्ध पूर्णिमा के दिन आसपास के बच्चों और कुछ मित्रों को एकत्र कर बड़े जुलूस का आयोजन करने के साथ एक धार्मिक कार्यक्रम के पश्चात भंडारे आदि का अयोजन करते हैं। उनका यह भी कहना है कि यमुनागर से 10 कि. मी. उत्तर–पूर्व में सुघ गांव को देश में कोई नहीं जानता। अतिक्रमणियों ने इस स्थल को बुरी तरह ध्वस्त कर दिया है। सुघ के टीले और चिन्हेती में टीले के खंडहर भी दिन प्रति दिन क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। स्तूप पर पशु घूमते रहते हैं। फिर भी, हरियाणा पर्यटन विभाग गर्व से अपनी वेबसाइट पर गांव को चीनी यात्री ह्युएंग्त्सांग द्वारा विशेष रूप में उल्लिखित भूमि, जहां प्राचीन काल में विद्वान एकत्र होते थे और एक ऐसे स्थान के रूप में बताता है जहां बुद्ध ने प्रचार किया था। सुघ टीले का शेष हिस्सा अमादलपुर के सरकारी स्कूल के पास है। राज्य सरकार ने संरक्षित स्मारक के लिए कोई संरक्षण उपाय नहीं किया है। कोई सुरक्षात्मक दीवार नहीं है और न ही कोई साइन बोर्ड है। दलाई लामा समेत कई शीर्ष बौद्ध नेताओं ने इस क्षेत्र के सम्मानित स्थानों की उपेक्षा पर लोगों को संवेदनशील बनाने के टीबीएफ के प्रयास की सराहना की है।

सिद्धार्थ गौरी आगे कहते हैं कि बिहार और गुजरात की राज्य सरकारों ने बौद्ध पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बौद्ध पर्यटन पर्यटन को विकसित करने के अपने प्रयासों को तेज कर दिया है। जबकि हमारे यहां ऐसे समृद्ध बौद्धस्थल हैं, जहां महात्मा बुद्ध ने अपने कुछ सबसे महत्वपूर्ण उपदेश दिए थे का महत्व बताने के लिए कुछ अधिक नहीं किया जा सका है।

(ट्रिब्यून, चंडीगढ़ में 14 मई, 2017 को प्रकाशित श्री शिव कुमार शर्मा के लेख पर साभार आधारित)

नीलमपरूरः भगवती मंदिर

केरल में भी मुस्कुराए थे बुद्ध

–प्रो.के.के. नम्बूदिरी

केरल में बौद्ध धर्म के उदय, विकास और उसके अनुयायियों की घटती संख्या के बारे में विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। इतिहास में इस क्षेत्र को 150ईस्वी तक चोल साम्राज्य के अंग के रूप में और बाद में भारत की आजादी से पहले तिरुनाल शासकों के तहत त्रावणकोर राज्य के नाम से प्रसिद्ध रहा है।

केरल में बौद्धमठों के विकास का चरण संघम काल माना जाता है। यही प्राचीन तमिल साहित्य के आविर्भाव का काल है। संघमकाल सन् 300 ई. से 800 ई. तक रहा। इसी काल में भारत के अन्य प्रान्तों से भी आकर लोग केरल में बसने लगे तथा बौद्ध और जैन धर्मों का प्रचार हुआ। इसी काल में ब्राह्मण आगमन भी हुआ। उन दिनों केरल के विभिन्न क्षेत्रों में ब्राह्मणों की कुल मिलाकर 64 बस्तियाँ थीं।

यह माना जाता है कि बौद्ध धर्म श्रीलंका से केरल में आया था। सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र ने श्रीलंका के लिए एक बौद्ध शांतिदल का नेतृत्व किया था। इसी कड़ी में राजकुमार महेन्द्र जब श्रीलंका के थेरावाड़ा से कोल्लम (जिसे क्विलोन भी कहा जाता है) के रास्ते केरल पहुंचे तो यहां के शासक वनवर्मा चेरमान पेरुमल ने एक संत के रूप में उनका आदर सत्कार किया और बाद में उनके प्रवचनों से इतना अधिक प्रभावित हुए कि उनसे दीक्षा लेकर बौद्ध बन गए । एक मत यह है कि केरल में बौद्ध धर्म का प्रभाव केवल 200 साल या उससे भी कम अवधि तक ही रह पाया ।

महेन्द्र और संघमित्रा बहुत कम समय ही केरल में रहे और उन्होंने इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का प्रचार कर इसे लोकप्रिय बनाया था। बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर बहुत लोग भगवान बुद्ध के अनुयायी बन गए थे ।

बाद में, केरल के शासक वनवर्मा चेरमान पेरुमल पर बौद्ध धर्म का अत्यधिक पक्ष लेने के आरोप लगे और दूसरे धर्मगुरूओं ने उनसे सहयोग करने से इंकार कर दिया था। धीरे–धीरे मामले ने तूल पकड़ा तो वनवर्मा इस विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिए सहमत हो गए और यह तय किया गया कि यदि वह सफल रहे तो उनसे शास्त्रार्थ करने वाले विद्वानों को बौद्ध धर्म स्वीकार करना होना और यदि वह असफल रहे तो वह स्वयं ही राजसिंहासन छोड़ देंगे। तदनुसार, दोनों धर्मों के विद्वानों ने इस शास्त्रार्थ में भाग लिया। धर्मगुरूओं ने शास्त्रार्थ करने हेतु दक्षिण भारत के छह सुप्रतिष्ठित विद्वानों को बुलाया था। शास्त्रार्थ में वनवर्मा उनके कुछ प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाए और अंततः उन्हें शस्त्रार्थ में असफल घोषित कर दिया गया ।

उसके बाद वनवर्मा ने, वचन के अनुसार, सिंहासन छोड़ दिया और महल का त्याग कर बौद्ध भिक्षु बन कर नीलमपरूर आ गए और बुद्ध विहार की स्थापना की। यह माना जाता है कि वनवर्मा ने जो केरल के एकमात्र सम्राट थे, एक बौद्ध भिक्षु के रूप में अपने अंतिम दिन नीलमपरूर में ही बिताए थे। कोट्टायम में नीलम परूर पल्ली भगवती मंदिर में

*सेवानिवृत प्रोफेसर केरल विश्वविद्यालय

बौद्ध धर्म के समृद्ध दिनों में कुछ प्राचीन अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं ।

अल्पुझा शहर से (चंगनस्सेरी होकर) लगभग 38 कि.मी. दूर ''नीलमपरूर पल्ली भगवती'' मंदिर लगभग 1700 साल पुराना है । यह केरल में बौद्ध संस्कृति के बचे कुछ ही अवशेषों में से एक है। इस मंदिर की मुख्य देवी वनदुर्गा (काली माता) है। गर्भगृह के पीछे दक्षिण पूर्व कोने पर नागदेवता का एक चित्रा है। मुख्य मंदिर के बाहर भगवान गणपति, शिव, और विष्णु मंदिर हैं।

नीलमपरूर के बारे में...

नीलमपरूर पल्ली भगवती मंदिर का निर्माणकाल सन् 250 से 300 के बीच माना जाता है। उस समय बौद्ध धर्म अपनी समृद्धि पर था। यह भी कहा जाता है कि मंदिर के निर्माण के बाद से ही त्रावणकोर के महाराजा समय समय पर यहां पूजा अर्चना करते थे। लेकिन राजशाही की समाप्ति के बाद धीरे–धीरे उनकी पूजा आराधना भी समाप्त हो गई। अब सदियों से आयुमकुडी से आए कन्नम्पल्ली के पुजारी ही यहां पूजा अर्चना कर रहे हैं। प्रतिदिन देवी को कच्चे नारियल के पानी से बनी खीर का भोग लगाया जाता है जो अन्य मंदिरों में दिए जाने वाले प्रसाद से अलग है। नीलमपरूर कोल्लापल्ली मंडल के अंतर्गत आता है।

चेरमान पेरुमल के यहां आने से पहले ही यहां एक नीलम शिवमंदिर था। शिव का एक नाम नीलकंठ भी है। इसलिए इस जगह को नीलमपरूर कहा जाता है। इस मंदिर का स्वामित्व 10 पोट्टिमर ब्राह्मण परिवारों के पास था। वह हिन्दू पुनर्जागरण का समय था। समय बीतने के साथ साथ बौद्ध धर्म ने केरल में अपनी शक्ति और प्रतिष्ठा खो दी। वहां कुछ लोगों ने देवी कात्यायनी के मंदिर का निर्माण कर लिया। ऐसा भी कहा जाता है कि पेरूमल के देहांत के बाद उनके परिजनों ने ही भगवती कात्यायनी की मूर्ति स्थापित की थी ।

पल्लीयम ताम्र लेख को देखने से ज्ञात होता है कि अशोक के शासनकाल में आए बौद्ध धर्म ने केरल में 700 से अधिक वर्षों तक विकास किया। अय राजा, वरगुना (885–925 ई0) की पल्लीयम में प्राप्त ताम्र पत्र शिलालेख से पता चलता है कि दक्षिण केरल में 1000 ईस्वी तक बौद्धों को राज्य का संरक्षण प्राप्त था ।

इस विषय पर डॉ. के. सुगथन की पुस्तक "बुद्धमतम् एवं जाति व्यावस्थयम" अच्छा प्रकाश डालती है। हालांकि, डॉ. के. सुगथन पेशे से हृदय रोग विशेषज्ञ थे परन्तु उनकी रुचि चिकित्सा विज्ञान के अलावा भाषा विज्ञान और सामाजशास्त्र में भी थी। उन्होंने मनुष्य के दिल से संबंधित पुस्तक, ''हार्ट रिव्यु" के बाद भाषा विज्ञान पर "मोजिया रिव्यु" और धर्म पर "बुद्धानुम नानू गुरुवम" (बुद्ध और नारायण गुरु) के द्वारा चिकित्सा विज्ञान के बाहर के क्षेत्रों में सिद्ध हस्त होने के पर्याप्त सबूत दिए हैं। यही कारण है कि अपनी चौथी पुस्तक "बुद्धमतम जाति व्यावस्थयम" में, डॉ. सुगथन ने केरल में बौद्ध धर्म के उदय तथा उसके अनुयायियों की घटती संख्या पर चर्चा की है जो इस विषय पर एकमात्र उपलब्ध पुस्तक है।

तीसरी शताब्दी के दौरान **''भगवान के अपने देश''** केरल में बौद्ध धर्म का मजबूत आधार था । इसके प्रभाव के बाद इतिहासकारों ने बौद्धों को उनके भाग्य पर छोड़ दिया गया और यही डॉ. सुगथन की पुस्तक में प्रमुख चिंता का एक विषय है। यह पुस्तक केरल में बौद्ध धर्म पर चर्चा करते हुए तत्कालीन व्यवस्था की जटिलताओं पर प्रकाश डालती है। उनके अनुसार, अल्लपुझा, त्रिश्शूर और कोल्लम के आस

पास के लोगों का बौद्ध धर्म पर विश्वास बढ़ गया था। लेकिन आठवीं शताब्दी में इस में कमी आने लगी ।

केरल में 16 वीं शताब्दी तक बौद्ध धर्मावलम्बियों की बड़ी जनसंख्या मौजूद थी । उसके बाद से बौद्ध आबादी में निरंतर कमी होने लगी। केरल राज्य सरकार के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार केरल की लगभग साढ़े तीन करोड़ की जनसंख्या में मात्र 0.1 प्रतिशत बौद्ध हैं।

अवलोकितेश्वर

लोग आश्चर्य करते हैं कि अवलोकितेश्वर, तारा और भिकुट्टी महायान में बोधिसत्व आदर्श का प्रतिनिधित्व है। उदाहरण हैं कि हमारे अपने मन की स्वाभाविक रूप से परिपूर्ण प्रकृति कैसे स्वयं और दूसरों के लाभ के लिए असंख्य तरीके से प्रकट हो सकती है, क्योंकि हम करुणा और ज्ञान के माध्यम से मन और मस्तिष्क की अस्पष्टता को शुद्ध करते हैं। अवलोकितेश्वर सभी प्राणियों के लिए करुणा की शक्ति है। तारा स्वाभाविक रूप से सभी के लाभ के लिए सब कुछ बदलकर डर को दूर कर हमारे अनुभवों को चमक प्रदान करती है। भिकुट्टी उस जगह की शक्ति **है** जो स्वाभाविक रूप से बिना किसी निशान के नकारात्मकता और बाधाओं को दूर करती है।

लगभग 1000 साल पहले तक, केरल में बौद्ध धर्म के महायान की शाखा समृद्ध थी। उस अवधि में केरल के दक्षिणी भाग पर जिन सम्राटों ने शासन किया उनकी राजधानी पहले अगत्स्यकुडम पोटालका थी इसे अवलोकितेश्वर बुद्ध का निवास माना जाता था । उसके बाद अयकुडी और बाद में तिरूवनंतपुरम को राजधानी बनाया गया था ।

केरल में समद्र से आकर वापस जाने वाली लहरों (बैकवाटर) और धान के मैदानों को मलयालम में 'कुट्टानुडू' कहा जाता है, केरल में मुख्य भाषा 'कुट्टान' शब्द से ली गई है, जो कि बुद्ध और 'नाडू' के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। केरल को बुद्ध की भूमि भी कहा जा सकता है।

केरल का सबसे प्रचीन मठ 'श्रीमूलवासम बौद्ध मठ' था। श्रीमूलवासम मठ का सही सही स्थान अब अज्ञात है, लेकिन कुछ विद्वान कई स्थानीय किंवदंतियों के कारण अलपुझा के निकट त्रिकुन्नापुझा के रूप में इसकी पहचान करते हैं क्योंकि इस क्षेत्र के आसपास महात्मा बुद्ध की प्राचीन प्रतिमाएं मिली थीं। हालांकि, यहां मिली मूर्तियों में से कोई भी श्रीमूलवासम की प्रसिद्ध अवलोकितेश्वर बुद्ध की मूर्ति के साथ मेल नहीं खाती है। इसकी खोज और रहस्य उजागर करने के लिए पुरातत्वविदों को इस पर सख्त मेहनत करनी पड़ेगी। श्रीमूलवासम महायान बौद्ध मठ में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर (लोकेश्वर/लोकनाथ) की प्रसिद्ध मूर्ति की चित्रित प्रतिकृति है। अवलोकितेश्वर को तारा (हरित) और भिकुट्टी (पीला) रंगो से बनाया गया था। आज इन मूर्तियों या मठों का कोई निशान नहीं है क्योंकि बौद्ध धर्म के बाद उससे संबंधित चीजें भी लुप्त होती चली गई। श्रीमूलवासम मठ के बारे में भी हम केवल तीन स्रोतों से ही जान पाते है। पहला है, 11 वीं

शताब्दी ईस्वी में बने आहा–सहस्रिका–प्रज्ञानपरमित –सूत्र की ताड़ के पत्तों पर लिखी पांडुलिपि, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप में लोकेश्वर के पवित्र स्थानों में से एक के रूप में दक्षिणी पथ श्रीमूलवासम लोकनाथ नामक चित्र शामिल है। यह पांडुलिपि न जाने कैसे नेपाल में पाई गई और एक अंग्रेज पुरातत्वविद इसे नेपाल से लेकर आए। आज यह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के संग्रहालय में संरक्षित है। दूसरा, दक्षिण केरल के अय राजा विक्रमादित्य वरगुना (9वीं –10 वीं शताब्दी) का पालीयम ताम्र शिलालेख और तीसरा है, 11वीं सदी में अतुल्य नामक कवि द्वारा रचित ''मुशिकावासम'' महाकाव्य।

अय राजाओं में से एक विक्रमादित्य वरगुना (9वीं –10वीं ई.) ने श्रीमूलवासम मठ के भट्टारक (मठाधीश) को बहुत सी भूमि दान में दी थी । पल्लीयम ताम्र शिलालेख इस अनुदान को प्रलेखित करता है। शिलालेख बुद्ध को श्रद्धांजलि के साथ शुरू होता है, जिसमें चंद्रमा की तरह चंद्रमा होता है और जिसकी कृपा का अमृत प्रबुद्ध रूप से बहता है और सब कुछ शुद्ध करता है, हर जगह समृद्धि का दान करता है। वह बुद्ध भगवान की प्रशंसा भी करता है जो स्वयं की प्रकृति के बारे में सभी धारणाओं को झुकाता है। वह बोधिसत्व अवलोकितेश्वर को श्रद्धांजलि देता है। बाद में, 11वीं शताब्दी ईस्वी में, अतुल्य द्वारा 'मुशिकवसम' नामक एक ऐतिहासिक महाकाव्य में इस मठ के साथ राजाओं के मजबूत संबंधों के बारे में बताया गया है।

केरल में सबसे पुराने बौद्ध...

केरल के एक छोटे से शहर मावेलक्कारा में 80 वर्षीय एन.गोपीनाथन पिल्लई, संभवतः केरल में सबसे पुराने जीवित बौद्ध अनुयायियों में से एक हैं। गोपीनाथन कहते हैं 'मैंने 1950 में स्वामी पिल्लई के प्रवचनों से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म अपना लिया था। आज यहां के लोग इस बात से अनजान हैं कि बौद्ध धर्म किसी समय दक्षिण भारत में प्रसिद्ध था।'

इस क्षेत्र में गोपीनाथन ही एकमात्र बौद्ध हैं जो प्रतिदिन मंदिर में स्थापित बुद्ध की मूर्ति को फूलों की माला पहना कर चंदन से उसका तिलक करते हैं और दीप प्रदान करते हैं। रात्रि मे भी पूरी रात मंदिर में दीपक जलाते हैं। गोपीनाथन दक्षिण भारत में बौद्ध की शिक्षाओं का प्रचार करते हैं और धार्मिक अनुष्ठान करते हैं।

वह कहते हैं, 'यह सोचकर बड़ा दुख होता है कि यह मेरे बाद यह मंदिर भी इतिहास बन कर रह जाएगा। भगवान की मूर्ति को फूलों की माला पहनाने और चंदन का तिलक करने और रात में दीप जलाने वाला शायद कोई भी नहीं होगा।' मेरे बचपन के दिनों में यहां के बहुत लोग बौद्ध थे। लेकिन समय के साथ साथ कई तो केरल छोड़ गए और ज्यादातर ने अन्य मत अपना लिए हैं।

गोपीनाथन इस मंदिर में दैनिक अनुष्ठानों में नियमित रूप से भाग लेते हैं।

● पद्मासन मुद्रा में चार फुट ऊंची यह बुद्ध प्रतिमा केरल में सबसे बड़ी और सबसे पुरानी है। यह 9वीं शताब्दी ईस्वी की बताई जाती है और केरल के पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

● दक्षिण त्रावणकोर में चित्रतिरुणाल के मंदिर को अनेक बिंदुओं और उदाहरणों से कहा जाता है कि यह पहले बौद्ध मंदिर था। इस मंदिर में जो मूर्तियां हम देखते हैं उन पर बौद्ध कालीन कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है ।

● अल्लपुझा के पास एक छोटा सा गांव है, कुरूमुदिकुट्टन जो अल्लपुझा में भगवान बुद्ध की काले ग्रेनाइट से बनी मूर्ति के लिए प्रसिद्ध है। इसे 9वीं और 10वीं शताब्दी के बीच निर्मित बताया जाता है। यह केरल में एक मात्र बौद्ध मंदिर है जहां राज्य में बौद्ध धर्म के अस्तित्व का निशान मिलता है । अल्लेप्पि में पुन्नामदा झील के किनारे स्थित यह मंदिर प्राचीन बौद्ध विश्वास का जीवंत प्रतीक है। बौद्ध धर्मगुरू दलाई लामा 1965 में यहां कुरूमुडी गांव में पधारे थे और उन्होंने इस मंदिर का नाम रखा कुरूमुदिकुट्टन (जिसका शाब्दिक अर्थ है कुरूमुडी का बालक) तब से यह इसी नाम से जाना जाता है। कुरूमुदिकुट्टन बुद्ध की मूर्ति का प्यारा नाम है।

● कोल्लम से 27 कि.मी. दूर एक करूणगप्पल्ली के तालाब से बुद्ध की एक मूर्ति मिली थी जो अब कृष्णपुरम महल के संग्रहालय में रखी गई है। कायकुल्लम के राजाओं के महल तिरूवनंतपुरम के नेपियर संग्रहालय में ऐतिहासिक कलाकृतियों का संग्रह है जिसमें 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व की बुद्ध की यह प्राचीन मूर्ति भी यहां संरक्षित की गई हैं।

● नीलमपरूर के पास करुणाट्टूवाला प्राचीन काल में एक मुख्य व्यापार केंद्र के रूप में कार्य करता था। भूमि परिवहन केवल करुणट्टूवाला तक था और इससे आगे लोग जल–परिवहन पर निर्भर थे। इस क्षेत्र में करमुडीथोर नामक नदी के पास के जंगलों में 1930 के दशक में, एक ब्रिटिश इंजीनियर सर रॉबर्ट ब्रिस्टो को काले ग्रेनाइट की यह तीन फीट लंबी, मूर्ति 9वीं शताब्दी की मानी जाती है, जिसे "करमुडी थोड़" नामक पास की नदी के पास के जंगलों में सदियों से त्याग दिया गया था। बाद में 1930 के दशक में,

एक ब्रिटिश इंजीनियर सर रॉबर्ट ब्रिस्टो को यह मूर्ति मिली जो बाईं तरफ से क्षतिग्रस्त थी। माना जाता है कि संभवतः किसी हाथी द्वारा नष्ट कर दी गई थी। उन्होंने इसके संरक्षण के लिए संग्रहालय में रखवा दिया । आजकल यह मूर्ति केरल राज्य सरकार की सुरक्षा में है।

काक्कायुर केरल के पलक्कड़ जिले में कोडुवायर, पल्लवुर और कुनीसेरी के बीच एक छोटा सा गांव कस्बा है। काक्कायुर पलक्कड़ शहर से लगभग 34 कि.मी. दूर पलक्कड़ निम्मार मार्ग पर कोडुवारूर ग्राम पंचायत का हिस्सा है। जनसंख्या लगभग 8500 है और गांव की साक्षरता 86.3% है। यहां का बुद्ध मंदिर एक बोधीवृक्ष (पीपल का पेड़) के नीचे बनाया गया है। किंवदंती यह है कि यह पेड़ बोधगया के उसी बोधीवृक्ष की कलम से उगाया गया है जिसके नीचे भगवान बुद्ध ने ध्यान किया था। इस गांव में देवकी मेमोरियल सीनियर स्कूल है जिसे 1895 में स्थापित किया गया था और साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए एक प्रसिद्ध केंद्र है। यह एक सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल है और निम्मार उप–जिले के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से एक माना जाता है। इसके कई पूर्व छात्र, आज भारत और विदेशों में सरकार और निजी क्षेत्रों में उच्च पदों पर हैं। इस लेख को लिखने में इस स्कूल के सेवानिवृत्त हैडमास्टर श्री बी. अनिलकुमार ने भी मेरी काफी सहायता की है।

पल्लीयम कॉपर प्लेट साबित करती है कि केरल में बौद्ध धर्म का प्रवेश सम्राट अशोक के शासनकाल में हुआ और 700 से अधिक वर्षों तक इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का विकास हुआ था। 792 ईस्वी में राजा उदय वर्मन ने उत्तरी भारत के ब्राह्मण विद्वानों को केरल में बसने के लिए आमंत्रित किया और 237 ब्राह्मण परिवारों को यहां बसाया था। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि इन अप्रवासियों के साथ छह विशिष्ट ब्राह्मण भी आए जिन्होंने यहां हिंदू धर्म की बौद्धिक सर्वोच्चता स्थापित की। उन्होंने सरल भाषा में समझाया कि सभी मनुष्य शस्त, विष्णु और शिव की संतानें हैं।

आज से एक शती पूर्व एस. रामानाथ अय्यर ने अपनी पुस्तक, 'ए ब्रीफ स्केच ऑफ त्रावणकोर' (1903 में मुद्रित इस संस्करण) में लिखा थाः 'भट्टाचार्य, भट्बाण, भट्विजय, भट्मयुखा, भट्गोपाला और भट्टनारायण प्रेरित थे और उन्होंने इस विषय पर सहन करने और हिंदू त्रिभुज के कारण सभी को आमंत्रित कर उन्हें अपनी बोलियों में समझाया और यह तर्क दिया कि बुद्ध को हिंदू धर्म में "शास्ता", एक हिंदू देवता के रूप में फिर से समेकित किया गया था। बाद में, गुरु प्रभाकर तथा शंकरचार्य (788–820 ईस्वी) जैसे विद्वानों का प्रभाव बढ़ा जिससे द्वितीय चेरा साम्राज्य के कुलशेखर राजाओं द्वारा शाश्वत संरक्षण और वैष्णववाद को बढ़ावा दिया। बौध और जैन मंदिर उपेक्षित से छोड़ दिए गए और लोगों ने उन पर अतिक्रमण कर लिए, लेकिन उस काल के कुछ न कुछ चिन्ह आज भी ऐसे मंदिरों में मौजूद हैं। दक्षिण त्रावणकोर तिरूचित्ताल का मंदिर ऐसा ही एक उदाहरण है। यह पहले बौद्ध मंदिर था। मंदिर में और उसके आसपास जो मूर्तियां हम देखते हैं उन पर बुद्ध कालीन मूर्तिकला का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समय में केवल में भी बौद्ध धर्म समृद्ध था।

रोचक तथ्य

विशेष लेख

जब देश में बुद्ध मुस्कुराए!

—मोहन सिंह

बात कुछ पुरानी है,1980 में जे.एन.यू में देर रात तक लायब्रेरी में बैठकर किताबें पढ़ने की आदत ही बन गई थी। एक दिन अचानक यूं ही मन में आया कि चीन की भाषा में स्वर्ग को क्या कहते हैं ? बस क्या था एक डिक्शनरी उठाई और देख कर हैरान रह गया कि वहां स्वर्ग का अर्थ लिखा था, 'Heaven' : इंडिया, अर्थात जहां भगवान बुद्ध का जन्म हुआ।" बड़ा ही अजीब सा लगा। फिर मन में ख्याल आया कि जापानी में स्वर्ग को क्या कहते हैं ? वहां भी स्वर्ग का अर्थ लिखा था, 'Heaven' : इंडिया अर्थात भारत। यहां भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था । सम्भवतः पहली बार स्वर्ग की, सबसे अलग, ऐसी व्याख्या पढ़ने को मिली थी। मुझे मसाला मिल गया और झटपट एक लेख तैयार कर लिया जो 'इंफा' के माध्यम से कई अखबारों में प्रकाशित हुआ था।

अब, अतुल्य भारत के बौद्ध विशेषांक पर काम करते हुए अचानक ही वह व्याख्या याद आ गई और मन में विचार आया कि पाठकों को चीन और जापान के शब्दकोषों में स्वर्ग के बारे में बताया जाए। सोचा था कि अब भी वही शब्दों का इस्तेमाल किया जा रहा होगा। एक बार फिर से पुष्टि करने के लिए शब्द कोष खंगाले, लेकिन अब तक नदियों में बहुत पानी बह गया है और चीन के विद्वानों को भी लगा होगा कि यह तो उचित नहीं है और उन्होंने 90 के दशक में इसकी परिभाषा बदल दी। अब वहां के शब्दकोष "स्वर्ग" का अर्थ बताते हैं 'आकाश : जिसे विशेष रूप से एक मेहराब की तरह माना जाता है और वहां सूर्य, चंद्रमा, दूसरे अन्य ग्रह और सितारे स्थित हैं। इसी प्रकार जापान के शब्दकोष "स्वर्ग" का अर्थ बताते हैं 'आकाश से भी आगे वह स्थान जहां अच्छी आत्माएं रहती है और वहां सूर्य, चंद्रमा का वास है। अब इसे आधुनिकता का प्रभाव ही कह सकते हैं। वर्षो पूर्व यह शब्द एक आस्था थी और आज केवल शब्द है।

स्माइलिंग बुद्धा (पोखरण-1)

एक और घटना है 1974 की। यह वह समय था जब टेलिविजन नहीं था। रेडियो के साथ ही तब तक ट्रांजिस्टर भी प्रचलन में आ गए थे। रात पौने नौ बजे के समाचार सुनना एक परम्परा सी थी। यहां तक कि पनवाड़ी और चाय की दुकानों पर भी तेज आवाज में रेडियो पर समाचार सुने और सुनाए जाते थे। कुछ ऐसे भी लोग थे जो रात पौने नौ बजे हिंदी के समाचार, नौ बजे अंग्रेजी के समाचार और फिर सवा नौ बजे उर्दू के सामचार नियमित रूप से सुनते थे । मैंने भी रात पौने नौ बजे के समाचार सुनने के लिए रेडियो

*कंसल्टेंट तथा अतुल्य भारत पत्रिका के प्रबंध सम्पादक, पर्यटन मंत्रालय

ऑन किया। रेडियो पर पहला समाचार था, "आज भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया है। यह परीक्षण सफल रहा है। इस ऑपरेशन को नाम दिया गया था स्माइलिंग बुद्धा (पोखरण–1) अभी तक संयुक्त राष्ट्र संघ के पांच स्थायी सदस्य देशों के पास ही परमाणु क्षमता थी।

18 मई,1974 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन भारतीय परमाणु आयोग ने अपना पहला भूमिगत परीक्षण किया था। सरकार ने घोषणा की थी कि भारत का परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण कार्यों के लिए होगा और यह परीक्षण भारत को उर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिये किया गया है।

थार रेगिस्तान परीक्षण से पहले

सन् 1998 : सेना के तत्कालीन जनरल वी.पी. मलिक ने अपनी एक पुस्तक भारतीय सैन्य शक्ति में लिखा है कि केंद्र में श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार बने सिर्फ तीन महीने ही हुए थे कि एक सुबह छः बजे ही प्रधानमंत्री के आवास पर तुरंत पहुंचने को कहा गया। वहां डॉ. अब्दुल कलाम साहब तथा कुछ अधिकारी पहले से मौजूद थे। प्रधानमंत्री जी ने देश को परमाणु सम्पन्न बनाने के निर्णय के बारे में बताया और उसके लिए सभी जरूरी उपाय करने के आदेश दिए। इसी समय कलाम साहब ने बताया कि यह कार्य इतना आसान नहीं था क्योंकि कई विदेशी एजेंसियां 1995 के बाद से ही भारत के परमाणु परीक्षण की तैयारियों का पता लगाने की निरंतर और अथक कोशिशें कर रही थीं।

इन उपग्रहों के बारे में जाने माने लेखक खुशवंत सिंह ने एक बार दुनिया में हुई वैज्ञानिक प्रगति के बारे में अपने कॉलम में लिखा था कि दूसरे देशों पर नजर रखने के लिए अब एजेंट रखने की जरूरत नहीं रह गई थी। विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि कुछ देश अब इस काम के लिए उपग्रह बनाने लगे हैं। कुछ उपग्रह तो इतने शक्तिशाली होते हैं जो यह तक देख सकते हैं कि आप अपने आंगन में बैठे कौन सा अखबार पढ़ रहे हैं ।

निश्चित रूप से ऐसी गुप्त सूचनाएं भी मिल रही थी कि कुछ जासूसी उपग्रह हमारे क्षेत्र, खास तौर पर पश्चिमी राजस्थान पर मंडराते पाए गए थे। इसमें बहुत हद तक सत्यता भी थी। यह उपग्रह भारत की प्रत्येक गतिविधि पर गहरी नजर रखे हुए थे। पोखरण के आस पास घूम रहे ऐसे चार शक्ति शाली सैटेलाइट्स का पता भी लग चुका था, जिनके बारे में कहा जाता था कि यह जमीन पर खड़े सैनिकों की घड़ी में समय भी देख सकते थे। उधर भारत पोखरण में अपनी गतिविधियों को छिपा सकने में असमर्थ था क्यों कि इस रेगिस्तान में कहीं–कहीं झाड़ियाँ और रेत के टीले ही थे।

राजस्थान के इस रेगिस्तान पर घूम रहे उपग्रहों से बचना मुश्किल था। परन्तु भारतीय खुफिया एजेन्सी इन जासूसी उपग्रहों से पूरी तरह सतर्क थीं। इस व्यापक योजना को कुछ वैज्ञानिकों, वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों और वरिष्ठ नेताओं तक ही सीमित रखा गया था ताकि परीक्षण की तैयारी की पूर्ण गोपनीयता

और रहस्य सुनिश्चित किए जा सके। मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के निदेशक, डॉ. अब्दुल कलाम और परमाणु ऊर्जा विभाग के निदेशक, डॉ. आर. चिदंबरम को परीक्षण की इस योजना का मुख्य समन्वयक बनाया गया था।

इस परीक्षण को सफल बनाने के लिए भारतीय सेना की मदद ली गई और सेना की 58वीं इंजीनियरिंग रेजीमेंट को यह कार्य सौंपा गया। चूंकि यह एक गोपनीय मिशन था, इसके लिए सेना के इंजीनियर्स कोर की इस रेजिमेंट को परीक्षण साइटें तैयार करने के लिए तैनात किया गया और अति गोपनीयता सुनिश्चित करने के निदेश दिए गए कि किसी भी प्रकार से इन उपग्रहों की नजर में नही आएं। रेजीमेंट के कमांडर कर्नल गोपाल कौशिक ने अपनी देखरेख में गोपनीय तरीके से परीक्षण की तैयारी शुरू कर दी ।

जब विदेशी ताकतों को भारत ने दिया चकमा....

विश्व की परमाणु शक्तियों को वर्ष 1980 से ही इस बात का अंदेशा हो गया था कि भारत किसी भी समय दोबारा परमाणु परीक्षण को अंजाम दे सकता है। इसलिए भारत के परमाणु वैज्ञानिकों पर विशेष रूप से हर कदम पर नजर रखी जा रही थी। इस मिशन के मुखिया थे डॉ. कलाम और वह भारत के परमाणु परीक्षण की किसी भी देश को जरा भी भनक नहीं लगने देना चाहते थे। दिल्ली से जाते समय अवकाश लेकर अपने गांव जाने की अनुमति लेते थे ताकि मीडिया अथवा किसी और को पता भी न लग पाएं कि कहां गए हैं। इस मिशन के दौरान, परीक्षण स्थल के आस पास डॉ. अब्दुल कलाम सेना की वर्दी में रहते थे उनका नाम भी बदल कर कर्नल पृथ्वीराज रख दिया गया था। इससे खुद सेना के लोगों को उनके बारे में पता नहीं था। वह हमेशा अकेले ही सफर करते ताकि किसी को भी उन पर शक न हो। इसी प्रकार उनके दूसरे सहयोगी वरिष्ठ वैज्ञानिकों के नाम भी बदल दिए गए और वह भी परीक्षण स्थल पर सेना की वर्दी में अलग अलग जाते थे। सेना की वर्दी ने उनका काम आसान कर दिया था। जासूसों को लगा कि ये सभी सेना के अधिकारी हैं और इनका परमाणु वैज्ञानिकों से कोई ताल्लुक नहीं हो सकता है। इस प्रकार डॉ अब्दुल कलाम ने कर्नल गोपाल कौशिक के साथ मिलकर पूरी प्लानिंग को अंजाम दिया और उनकी इस तकनीक से भारत ने जासूस उपग्रहों को ही नहीं, क्षेत्र के आस पास रहने वाले इंसानी जासूसों को भी अंधेरे में रखा था।

इस पूरे मिशन को 'ऑपरेशन शक्ति' नाम दिया गया था। इस मिशन के और भी कई कोड्स थे जैसे व्हाइट हाउस, ताज महल और कुंभकरण। डीआरडीओ, एमडीईआर और भाभा ऑटोमिक रिसर्च सेंटर (बार्क) के वैज्ञानिक देश के इस गोपनीय मिशन में लगे हुए थे। परीक्षण से संबंधित उपकरणों और दूसरे सामान को ट्रकों में ऐसे ले जाया गया जैसे कि आम दिनों में ले जाए जाते हैं। कई बार तो इस सामान को छुपाकर इस तरह लाया गया जैसे कि कोई बारात जा रही हो ।

पहले वायुसेना के एएन–32 विमान से मुंबई से जैसलमेर बेस लाया जाता और वहां से 170 कि. मी. सेना के ट्रकों में साधारण रूप से भेजा जाता कि सामान ले जाने वाले सैनिकों को भी पता नहीं होता था कि इनमें क्या था। अधिकतर सामान रात में ही लाया जाता। इसी प्रकार रात से तीन बजे परमाणु बमों को सेना के चार ट्रकों के जरिए ट्रांसफर किया गया। इन ट्रकों को कर्नल उमंग कपूर कमांड कर रहे थे। 10 मई की रात को काम पूरा किया गया।

11 मई 1998, संयोगवश बुद्ध पूर्णिमा, एक ऐसी तारीख, जब दुनिया में कोहराम मच गया और दुनिया की महाशक्तियों को यह पता लग गया कि राजस्थान के पोखरण में हाइड्रोजन बम के दो सफल परीक्षण कर भारत भी परमाणु ताकत से पूरी तरह से लैस हो चुका है और किसी भी देश को इस परीक्षण की भनक तक नहीं लगने दी। विश्व में भारत की निंदा होने लगी। महाशक्तियों के नेता जब तक कुछ सोच पाते, भारत ने 13 मई 1998 को और तीन भूमिगत परमाणु परीक्षण कर डाले । तीन परमाणु विस्फोट होने से सारे दुनिया में तहलका मच गया था। अब भारत भी परमाणु शक्ति से संपन्न था ।

कहा जाता है कि परीक्षण स्थल के आस–पास 50 कि.मी. तक के मकानो में दरारें पड़ गई थी। परन्तु देश की इस महान उपलब्धि के सामने लोगों को अपने घरों के टूटने की कोई चिंता नहीं थी, जितनी प्रसन्नता इस महान सफलता से हुई।

20 मई को प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी बुद्ध–स्थल पर पहुंचे। वही प्रधानमंत्री ने देश को एक नया नारा दिया 'जय जवान–जय किसान–जय विज्ञान'। सभी देशवासी गर्व से भर उठे। भारत ने स्वयं को परमाणु शक्ति संपन्न देश घोषित कर दिया। इन परीक्षणों का मुख्य उद्देश्य विश्व को यह बताना था कि अपनी सुरक्षा और बचाव करने में हम आत्मनिर्भर हैं। लेकिन हमारा परमाणु कार्यक्रम शांति और विकास के लिए है । भारत के 'मिसाइलमैन' डॉ. अब्दुल कलाम 1974 में भारत के पहले परीक्षण में भी सहयोगी थे और दूसरे परीक्षण के मुखिया थे ।

अब हम असली बात पर आते हैं....

विश्व में जहां भी परमाणु परीक्षण किए गए वहां विनाश ही हुआ है। अमेरिका ने जिस द्वीप पर अपना परमाणु परीक्षण किया था, परीक्षण के दौरान ही वह द्वीप पूरी तरह बर्बाद हो गया था। फ्रांस ने जिस द्वीप पर परमाणु परीक्षण किया था वह सदा के लिए पृथ्वी के नक्शे से गायब हो गया कुछ ऐसी ही बातें और स्थानों के बारे में भी सुनने में आई थीं ।

थार रेगिस्तान में परमाणु परीक्षण के बाद हरियाली

लेकिन भारत में पोखरण में किए गए परमाणु परीक्षण से एक नया अध्याय लिखा गया है। पहले परीक्षण का असर कुछ कम हुआ था। लेकिन पहले परीक्षण ने ही रेगिस्तान की सूरत बदलनी शुरू कर दी थी। कहा जाता है कि रेत के टिब्बे कुछ सख्त होने लगे थे। दूसरे परीक्षण से तो रेगिस्तान में नए जीवन का संचार हुआ, जो परमाणु विकिरण दुनिया में विनाश कर रहा था, वही परमाणु विकिरण रेगिस्तान के लिए वरदान साबित होने लगा। सन् 2000 में वहां कुछ कुछ बदलाव देखने को मिला था। सन् 2003 और फिर 2005 में मुझे बाड़मेर से जैसलमेर होते हुए जोधपुर आने का अवसर मिला और यह देखकर दंग था कि जहां कभी इन जगहों पर दूर दूर तक सिर्फ और सिर्फ रेत के टीले दिखाई देते थे, वहां अब हरियाली ने पांव पसारने शुरू कर दिए हैं । पूरे क्षेत्र में छोटे मझोले आकार के पेड़ उगने लगे हैं जिससे मवेशियों को चारा मिलने लगा है। कुछ लोग तो यहां तक बताते है कि 1974 से पहले रेगिस्तान में पानी एक दुर्लभ चीज थी। दूसरे परीक्षण के बाद, जो पानी 300 फुट नीचे था, उठकर 200 फुट और कई स्थानों पर 150 फुट तक आ गया है। इससे बोरवैल लगाने में बहुत कुछ सुविधा हुई है। राजस्थान जो कभी पूरी तरह सूखा था, वहां रेत में कहीं कहीं कंटीली झाड़ियां ही दिखती थीं, 2003 में हरी घास उगने लगी है। शायद आपने भी पढ़ा होगा कि 2006 में राजस्थान के बाड़मेर में बाढ़ आई थी और इस बाढ़ में बाड़मेर के दो गाँव मलवा और कवास गाँव तो लगभग डूब ही गए थे। पश्चिमी राजस्थान में स्थित बाड़मेर ज़िला रेतीला और सूखा है, जहाँ पूरे साल बहने वाली कोई नदी भी नहीं है। आमतौर पर वहाँ सूखे की स्थिति बनी रहती है और इस क्षेत्र में बाढ़ तो शायद कभी सुनने में नहीं आई थी ।

इतना ही नहीं, पहले परीक्षण के बाद भारत में परमाणु उर्जा संयंत्र लगाए गए और इस समय देश में सात संयंत्र कार्यरत हैं, जो देश की उर्जा क्षमता में 6780 मेगावॉट का योगदान कर रहे हैं। चार संयंत्र निमाणाधीन हैं और 11 और संयंत्र लगाने पर विचार किया जा रहा है।

इस प्रकार हम गर्व से कह सकते हैं कि यह परीक्षण रेगिस्तान के लिए ही नहीं पूरे देश के लिए वरदान ही साबित हुआ है।

और इस तरह वास्तव में ही देश में बुद्ध मुस्कराए हैं।

शुभकामनाएँ

अप्रैल–जून, 2018 के दौरान पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए अधिकारी एवं कर्मचारी

Ø-l-	uke	in	ekg
1.	श्री दशरथ मौर्य, नई दिल्ली	एमटीएस	मई 2018
2.	श्री वी. अन्नपूर्णी, चेन्नई	पर्यटन सूचना अधिकारी	जून 2018

पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं। –अतुल्य भारत

कुछ तथ्य

भगवान बुद्ध और कुशीनगर

–विश्वरंजन

भगवान बुद्ध का नाम सुनते ही दिल और दिमाग में शांति, त्याग,एकाग्रता का ख्याल आता है। महात्मा बुद्ध समता के महान उपदेष्टा थे। महात्मा बुद्ध ने कहा कि कभी भी बल से किसी भी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता है, यह आधार ही भगवान बुद्ध के धर्म का मुख्य आधार था। इस प्रकार महात्मा बुद्ध समता के महान उपदेष्टा थे। उनका कहना था कि प्रत्येक स्त्री पुरूष को आध्यात्मिकता प्राप्त करने का अधिकार है। मानव की समता उनके महान संदेशों में से एक है।

महात्मा बुद्ध ने क्रोध पर विजय प्राप्त करने के नुकसान और उपाय बताए, क्रोध करने से मनुष्य का चेहरा कुरूप हो जाता है, उसे पीड़ा होती है और वह गलत काम करता है जिससे उसकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है, उसकी बदनामी होती है, उसके मित्र और सगे–सबंधीं उसे छोड़ देते हैं जिससे उस पर तरह–तरह के संकट आते है।

कविवर हरिवंश राय बच्चन ने एक कविता लिखी थी "बुद्धं शरणम गच्छामि"। जिसमें उन्होंने बताया कि बुद्ध कैसे बुद्ध बने थे। उनकी कविता की कुछ पंक्तियां यहां प्रस्तुत हैं :

बड़े बड़े पंडितों को तुमने लिया थाह,
मोटे–मोटे ग्रंथों को लिया अवगाह,
सुखाया जंगलों में तन,
साधा साधना से मन,
सफल हुआ श्रम,
सफल हुआ तप,
आया प्रकाश का क्षण,
पाया तुमने ज्ञान शुद्ध,
हो गए प्रबुद्ध"

कुशीनगर एवं कसिया बाजार उत्तर प्रदेश के उत्तर–पूर्वी सीमान्त इलाके में स्थित एक क़स्बा तथा ऐतिहासिक स्थल है। कसिया बाजार नाम कुशीनगर में बदल गया है और उसके बाद कसिया बाजार अधिकारिक तौर पर कुशीनगर नाम के साथ नगर पालिका बन गया है। यह बौद्ध तीर्थ है जहाँ गौतम बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था। कुशीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग–28 पर गोरखपुर से लगभग 50 कि.मी. पूरब में स्थित है। यहाँ अनेक बौद्ध मंदिर हैं। इस कारण से यह एक अन्तर्राष्ट्रीय पयर्टन स्थल भी है जहाँ विश्व भर से बौद्ध तीर्थयात्री दर्शन और भ्रमण के लिए आते हैं।

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर कुशीनगर में एक माह का मेला लगता है। यद्यपि यह तीर्थ महात्मा बुद्ध

*सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर, पर्यटन मंत्रालय

से संबंधित है लेकिन आसपास का क्षेत्र हिन्दु बहुल है। इस मेले में आसपास की जनता पूर्ण श्रद्धा भाव से भाग लेती है और विभिन्न मंदिरों में पूजा अर्चना एवं दर्शन करती है। किसी को संदेह नहीं कि बुद्ध उनके भगवान हैं।

धार्मिक तथा ऐतिहासिक परिचय

हिमालय के तराई क्षेत्र में स्थित कुशीनगर का अत्यंत ही प्राचीन व गौरवशाली इतिहास है। वर्ष 1876 ई. में अंग्रेज पुरातत्वविद ए.कनिंघम ने आज के कुशीनगर की खोज की थी। यहां की गई खुदाई में छठी शताब्दी की बनी भगवान बुद्ध की लेटी अवस्था में प्रतिमा मिली थी । इसके अलावा रामाभार स्तूप और माथाकुंवर मंदिर का भी पता चला था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार यह स्थान त्रेता युग में भी आबाद था और यह मर्यादा पुरूष भगवान राम के पुत्र कुश की राजधानी थी जिसके कारण इसे 'कुशावती' के नाम से भी जाना गया। पालि साहित्य के ग्रंथ ''त्रिपिटक'' के अनुसार बौद्ध काल में यह स्थान षोड़श महाजनपदों में से एक था। मल्ल राजाओं की यह राजधानी तब 'कुशीनारा' के नाम से जानी जाती थी। पांचवीं शताब्दी के अंत या छठी शताब्दी के आरम्भ में यहां भगवान बुद्ध का आगमन हुआ था। कुशीनगर में ही अपना अंतिम उपदेश देने के बाद यहीं उन्हें महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था ।

कुशीनगर से 16 कि.मी. दूर दक्षिण–पश्चिम में मल्लों का एक और गणराज्य था पावा, जिसे पावापुरी भी कहा जाता है। यहाँ बौद्ध धर्म के समानान्तर ही जैन धर्म का प्रभाव था। माना जाता है कि जैन धर्म के 24वें तीथंकर महावीर स्वामी (जो बुद्ध के समकालीन थे) ने पावानगर (वर्तमान में फाजिल नगर) में ही परिनिर्वाण प्राप्त किया था। इन दो धर्मों के अलावा भी प्राचीन काल से ही यह स्थल हिंदु धर्मावलम्बियों के लिए भी काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। इस जिले में गुप्त काल के तमाम भग्नावशेष आज भी बिखरे पड़े हैं। लगभग डेढ दर्जन प्राचीन टीले हैं जिन्हें पुरातत्व महत्व का मानते हुए पुरातत्व विभाग ने संरक्षित घोषित कर रखा है । उत्तर भारत का इकलौता सूर्य मंदिर भी इसी जिले के तुर्कपट्टी में स्थित है। यहां खुदाई के दौरान पहली बार भगवान सूर्य की प्रतिमा मिली थी, जिसे गुप्त काल की माना जाता है । इसके अलावा भी जनपद के विभिन्न हिस्सों में अक्सर ही जमीन के नीचे से पुरातन वस्तुएं तथा अन्य अवशेष मिलते ही रहते हैं।

कुशीनगर गोरखपुर से 50 कि.मी. की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 28 पर स्थित है। यहां पहुंचने के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन गोरखपुर जंक्शन है। गोरखपुर से हर घंटे कुशीनगर के लिए बसें मिलती हैं। गोरखपुर के लिए दिल्ली, कोलकाता और मुम्बई से वायुसेवाएं भी उपलब्ध हैं। पूर्व सूचना पर दिल्ली और लखनऊ से राज्य पर्यटन विभाग की ओर से विदेशी और घरेलू पर्यटकों के लिए आवास और रहने की सुविधा भी की जाती है।

कुशीनगर जनपद जिला मुख्यालय पडरौना है जिसके नाम के बारे में कहा जाता है कि में यह माना जाता है कि भगवान राम से विवाह के उपरांत पत्नी सीता व अन्य सगे–संबंधी इसी रास्ते से जनकपुर से अयोध्या लौटे थे। उनके पैरों से रमित धरती पहले पदरामा कहलाई और कालांतर में इसे पडरौना के नाम से जाना गया। जनकपुर से अयोध्या लौटने के लिए भगवान राम और उनके साथियों ने पडरौना से 10 कि.मी. दूर पूरब में बह रही बांसी नदी को पार किया था । आज भी बांसी नदी के इस स्थान को 'रामघाट' के नाम से जाना जाता है। यहां प्रति वर्ष एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है, जहां उत्तर प्रदेश और बिहार के लाखों श्रद्धालु आते हैं। बांसी नदी के इस घाट को स्थानीय लोग इतना महत्व देते है कि हैं 'सौ काशी, एक बांसी' की कहावत ही बन गई है। मुगल काल में भी यह जनपद खास पहचान रखता था।

कहानी कुशीनगर की.....

कुशीनगर का नाम कुशीनगर कैसे पड़ा इसकी एक रोचक कथा पालि साहित्य में मिलती है। यह कथा अपने पाठकों की जानकारी के लिए विस्तार पूर्वक प्रस्तुत है : –

मल्लदेश के राजा की कोई संतान नहीं थी। अतः उसने सपत्नी भगवान इन्द्रदेव की तपस्या की और उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर इन्द्र ने उनकी पटरानी शीलवती को दो पुत्रों का वरदान दिया। पहला पुत्र बिल्कुल कुरूप था परन्तु समस्त विद्याओं का ज्ञाता था। दूसरा पुत्र बहुत ही खूबसूरत था किन्तु बुद्धिहीन था। कुरूप होने के कारण पहले पुत्र का नाम कुश रखा गया ।

कुश एक कुशाग्र बुद्धि का व्यक्ति था। वह जानता था कि उसकी कुरूपता के कारण कोई भी कन्या उससे विवाह करना नहीं चाहेगी। फिर भी माता शीलवती के बार बार आग्रह करने पर उसने विवाह के लिए हां कर दी और शीलवती ने सांगल देश की अत्यंत रूपवती राजकुमारी प्रभावती से उसका विवाह करवा दिया। लेकिन कुश के वास्तविक रूप को छुपाने के लिए शीलवती ने प्रभावती से झूठ कहा कि उनके परिवार की यह परम्परा है कि पति पत्नी एक दूसरे को तब तक प्रकाश में नहीं देखते हैं जब तक उनका बच्चा गर्भस्थ न हो जाए।

कुछ दिनों के बाद कुश के मन में अपनी पत्नी प्रभावती को देखने की इच्छा हुई। उसने अपने मन की बात अपनी माता को बताई। माता ने उसे घोड़ों के अस्तबल में प्रभावती को दिखाने की योजना बनाई। अस्तबल में एक सारथी के वेष में बैठे कुश ने जब प्रभावती को देखा तो उसे एक शरारत सूझी और उसने पीछे से प्रभावती पर घोड़े की लीद फैंकी। प्रभावती ने पीछे मुड़ कर देखा और बहुत क्रोधित हुई, लेकिन शीलवती के कहने पर वह आगे बढ़ गई।

इस प्रकार कुश ने अपनी माता की सहायता से तीन बार प्रभावती को देखा और जितना ही वह उसे देखता उतना ही उसे और देखना चाहता। एक बार माता शीलवती प्रभावती को कमल के जलाशय में स्नान कराने ले गई और स्वयं दूसरे कुण्ड में स्नान करने चली गई। वहीं कुछ दूरी पर कुश छुपा बैठा था जब प्रभावती जलाशय में उतरी तो एकान्त में कुश का धैर्य छूट गया और वह तैरता हुआ प्रभावती के निकट आ गया और उसका हाथ पकड़ कर बताया कि वह ही उसका पति है। ऐसे कुरूप और प्रेत जैसे मुख वाले कुश को देखकर प्रभावती मुर्छित हो गई। जब उसे होश आया तो वह तत्काल अपने मायके चली गई।

कुश भी उसके पीछे–पीछे उसे मनाने गया और लेकिन प्रहरियों ने ऐसे कुरूप व्यक्ति को महल के पास से ही भगा दिया। अब कुश ने सांगल देश में कई प्रकार की नौकरियां की। सबसे पहले उसने टोकरी बनाने का काम किया। वह कलात्मक टोकरी पर अपना प्रेम संदेश लिख कर प्रभावती को भेजता, कभी कुम्हार बनता तो मिट्टी के कलात्मक बर्तनों पर अपने संदेश भेजता। लेकिन प्रभावती उससे घृणा करती रही।

एक दिन आठ देशों राजाओं ने मिलकर सांगल पर आक्रमण कर दिया। तब कुश ने अपने ससुर के सामने प्रकट होकर सांगल को बचाने का प्रस्ताव रखा। संकट के समय अपने दामाद को वहां उपस्थित देख सांगलराज बहुत प्रसन्न और आश्चर्यचकित हुए। जब उन्हें कुश को अपनी पुत्री के प्रेम में इस प्रकार संघर्ष करते देखा तो बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने प्रभावती को फटकार लगाते हुए कुश की प्रशंसा की ।

फिर कुश ने साथ आठ राजाओं के साथ लड़ाई की और सभी को पराजित कर उनसे प्रभावती की आठ बहनों का विवाह करवा दिया। प्रभावती ने संकट की घड़ी में कुश के गुणों को स्वीकार किया। फिर खुशी खुशी प्रभावती के साथ मल्लदेश को लौट गया। तभी से मल्लदेश का नाम उसी पराक्रमी राजा कुश के नाम पर पड़ा । इस बात का ज्ञान बहुत कम भारतवासियों को है क्योंकि वे पालि साहित्य नहीं पढ़ते हैं।

मेरे सपने में अतुल्य भारत

–विश्वरंजन

स्वप्न की अगवानी में हम ज्ञान भूषण[1] से संवर रहे हैं।
सत्यजीत का संकल्प लेकर अतुल्य भारत
हम गढ़ रहे हैं ।
भारत की नई दिशा में रश्मि जो बिखर रही है,
आओ.. हम सब साथ मिलकर रश्मि की
नई राह चलें।
भारत सजे ज्ञान भूषण से सत्यजीत[2] सिरमौर चढ़े।
पर्यटन क्षेत्र में हुनर जो हम तराश रहे,
चक्रवर्ती की तरह हम परचम लहरा रहे हैं,
हरेक युवा अतुल्य भारत में योगदान कर रहा है,
हुनर को बढ़ावा देकर रश्मि फैला रहा है,
आवभगत की परंपरा को पूरे विश्व ने माना हैं
हमें बस इतना कहते जाना हैं–
साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम्ब समाय,
मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाय।।

[1]ज्ञान से ओतप्रोत
[2]सत्य की विजय

सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर, पयर्टन मंत्रालय
सम्पर्क–9852583535

''बौद्धधर्म को केवल दो शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है अभ्यास और जागरूकता'' – दलाई लामा

कविताएं

तुम्हारी याद में

—जी. डी. बैरवा

खुद ही खत लिखते हैं तुम्हें
खुद ही पढ लेते हैं
तन्हा में दिल के, छालो पर हाथ रखकर
खुद ही हंस लेते हैं, खुद ही रो लेते हैं
तुम्हारी यादों की
आसूओं की कश्ती में
सूखे दरख्तों
की पतवार लिए
दर्द के दरिया में, रवां – दवां
तन्हा जी लेते हैं, तन्हा मर लेते हैं

सहायक निदेशक (प्रशा. 1),
पर्यटन मंत्रालय

चाकरी

—रेखा द्विवेदी

बादलों के पंख लेकर इंतजारे इश्क में
हसरतों की वादियों में तैर जाना जश्न है
बकरियों के झुंड लेकर घूम आना जश्न है
बारिशों में मेढकों से जूझ जाना जश्न है
या खुदा ये जुल्फ तेरी अब तलाक ये दिन कटे
इंतजारे इश्क में अब बैठ सोना जश्न है
तितलियों को छेड़कर फिर भाग जाना जश्न है
बैठ सरिता तीर पर फिर गुनगुनाना जश्न है
चीटियों के काफिलों को मधु खिलाना जश्न है
सर्दियों की धूप में फिर सैर करना जश्न है
जश्न जिंदगी से परे है इक अदद ये चाकरी
जश्न सारे इक तरफ और इक तरफ ये चाकरी

वरिष्ठ अनुवादक, पर्यटन मंत्रालय

बीस बरस पहले की फोटो

... सुशांत सुप्रिय

क्या तुम्हें याद है हमारी
बीस बरस पहले की वह फ़ोटो

आज भी सुरक्षित है
वह फ़ोटो मेरे ऐल्बम में
उस फ़ोटो में आज भी जवाँ हैं
बीस बरस पहले की हमारी हसरतें
हमें अपने होनेपन की सुगंध में भिगोती हुई

इस फ़ोटो में नहीं ढले हैं हम
वक् त के निर्मम हाथों से हम हैं दूर
लगातार फैलती झुर्रियों और
निरंतर बढ़ते चश्मे के नम्बर
यहाँ नहीं कर पाए हैं खुद पर गुरूर
मैं इस फ़ोटो से जलता हूँ
मैं इस फ़ोटो को चाहता हूँ
मैं इस फ़ोटो को देख मचलता हूँ
मैं इस फ़ोटो पर रीझता हूँ

बीस बरस पहले की खो गई दुनिया में
जाने का चोर.द्वार है यह फ़ोटो
तन की सूखती नदियों और पिघलते ग्लेशियरों को
स्मृतियों में फिर से जिलाने का
एक अध–सच्चा क़रार है यह फ़ोटो

कथा

जातक कथा

—प्रस्तुतिः रेखा द्विवेदी

विश्व की प्राचीनतम लिखित कहानियाँ जातक कथाएँ हैं जिसमें लगभग 600 कहानियाँ संग्रह की गयी है। जातक कथाए बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक के सुत्तपिटक अंतर्गत खुद्दक निकाय 10वां भाग हैं। ऐसी मान्यता है कि यह गौतमबुद्ध जी के प्रवचनों से ली गई हैं। प्रवचन के बीच–बीच में वह इन कथाओं के माध्यम से जातकों को समझाते थे। कुछ विद्वानों का मानना है कि कुछ जातक कथाएँ, गौतमबुद्ध के निर्वाण के बाद उनके शिष्यों द्वारा कही गयी हैं। यह ईसवी संवत से 300 वर्ष पूर्व की घटना है। इन कथाओं में मनोरंजन के माध्यम से नीति और धर्म को समझाने का प्रयास किया गया है।

एक बार देश में अकाल पड़ा। पानी की कमी से सारी फसलें मारी गईं। देशवासी अपने लिए एक वक्त की रोटी भी नहीं जुटा पाते थे। ऐसे समय कौवों को रोटी के टुकड़े मिलने बंद हो गए। वे जंगल की ओर उड़ चले।

उनमें से एक कौवा–कौवी ने पेड़ पर अपना बसेरा कर लिया। उस पेड़ के नीचे एक तालाब था जिसमें जलकौवा रहता था। वह सारे दिन पानी में खड़े रहकर कभी मछलियां पकड़ता, कभी पानी की सतह पर पंख फैलाकर लहरों के साथ नाचता नजर आता।

पेड़ पर बैठे कौए ने सोचा– मैं तो भूख से भटक रहा हूं और यह चार–चार मछलियां एक साथ गटक कर आनंद में है। यदि इससे दोस्ती कर लूं तो मुझे मछलियां खाने को जरूर मिलेंगी।

वह उड़कर तालाब के किनारे गया और शहद–सी मीठी बोली में जलकौवे कहने लगा– मित्र, तुम तो बहुत चुस्त–दुरुस्त हो। एक ही झटके में मछली को अपनी चोंच में फंसा लेते हो, मुझे भी यह कला सिखा दो। जलकौवा ने ध्यान से देखा और कहा, 'मित्र, तुम सीखकर क्या करोगे? तुम्हें मछलियां ही तो खानी हैं। मैं तुम्हारे लिए पकड़ दिया करूंगा।'

उस दिन के बाद से जलकौवा ढेर सारी मछलियां पकड़ता, कुछ खुद खाता और कुछ अपने मित्र के लिए किनारे पर रख देता। कौवा उन्हें चोंच में दबाकर पेड़ पर जा बैठता और कौवी के साथ स्वाद ले लेकर खाता।

कुछ दिनों के बाद उसने सोचा– मछली पकड़ने में है ही क्या? मैं भी पकड़ सकता हूं। जलकौवे की कृपा पर पलना ज्यादा ठीक नहीं। ऐसा मन में ठानकर वह पानी में उतरने लगा। जलकौवा ने देखा और चिल्लाया, –अरे दोस्त! यह क्या कर रहे हो? तुम पानी में मत जाओ। तुम थल कौवा हो, जल कौवा नहीं। तुम जल में मछली पकड़ने के दांवपेंच नहीं जानते, मुसीबत में पड़ जाओगे।

यह तुम नहीं, तुम्हारा अभिमान बोल रहा है। मैं अभी मछली पकड़कर दिखाता हूं। कौवे ने अकड़ कर कहा। कौवा छपाक से पानी में घुस गया, पर ऊपर न निकल सका। तालाब में काई जमी हुई थी। काई में छेद करने का उसे अनुभव न था। उस बेचारे ने उसमें छेद

*वरिष्ठ अनुवादक, पर्यटन मंत्रालय

करने की कोशिश भी की, ऊपर से थोड़ी–सी चोंच दिखाई दे रही थी, पर निकलने के लिए बड़ा–सा छेद होना था। नतीजतन उसका अंदर ही अंदर दम घुटने लगा और वह मर गया।

कौवी कौवे को ढूंढती हुई जलकौवे के पास आई और अपने पति के बारे में पूछने लगी।

–बहन, कौवा मेरी नकल करता हुआ पानी में मछली पकड़ने उतर पड़ा और प्राणों से हाथ धो बैठा। उसने यह नहीं सोचा कि मैं जलवासी हूं और जमीन पर भी चल सकता हूं, पर वह केवल थलवासी है। मैंने उसे बहुत समझाया, पर उसने एक न सुनी।

कहानी की सीख :नकल के लिए भी तो अक्ल चाहिए।

अतुल्य भारत' पत्रिका में प्रकाशन हेतु पर्यटन क्षेत्र के लेखकों, अनुसंधानकर्ताओं, तकनीकी विशेषज्ञों, उद्यमियों आदि से लेख आमंत्रित हैं।

- लेख का विषय पर्यटन और उससे संबंधित क्षेत्र में किसी सामयिक विषय एवं विकास कार्यों पर आधारित हो।
- साधारणतया लेख अधिकतम लगभग 3,000 शब्दों का हो वस्तुस्थति के अनुसार अधिक भी हो सकता है। किसी विशेष अवसर अथवा स्तंभ के लिए भेजे गए लेख में लगभग 1500 शब्दों अथवा अधिकतम का भी स्वागत है। लेख को बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण बनाने हेतु कृपया लेख के साथ उपयुक्त फोटोचित्र/रेखाचित्रा (प्रिंट करने योग्य क्वालिटी के) भी संलग्न करें।
- लेख सरल हिंदी भाषा में लिखा हो।
- ई–मेल से भेजे जाने वाले लेख OPEN FILE में तथा फोटोग्राफ यदि कोई हो, . jpg अथवा .png में ही भेजें। कोई भी लेख/सामग्री pdf. में भेजने का कष्ट नहीं करें। कागज के एक ओर टाइप किया हुआ या स्पष्ट रूप से हस्तलिखित हो। टाइप किया लेख (फोन्ट सहित) ई–मेल माध्यम से भेजें।
- लेखक द्वारा भेजे गए लेख एवं फोटोचित्रों/रेखाचित्रों के संदर्भ में कॉपीराइट संबंधी उत्तरदायित्व स्वयं लेखक का होगा।
- लेख इस पते पर भेजें : प्रबंध संपादक, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय,कमरा नं0 18, सी–1 हटमेंट्स, दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com है।

बुद्ध परिपथ

भारत की एक अनोखी पहचान

प्रस्तुति – श्रीमती स्नेहल पाटील तूपे

हमारे देश ने दुनिया को अनेकविध शोध, नई विचारधारा, नई शिल्पकला से अवगत कराया हैं। भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, आदि शंकराचार्य, महात्मा बसवेश्वर इनमे महत्वपूर्ण हैं।

भगवान बुद्ध का प्रभाव तो भारतवर्ष से शुरू होकर पूरे विश्व में फैला हैं। हजारों वर्षों से दुनिया भर से सैलानी बुद्ध की इस भूमि को देखने आते हैं।

भगवान बुद्ध के विचारों का प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप के हर क्षेत्र पर पड़ा हैं। पूरब से लेकर पश्चिम और उत्तर से लेकर दक्षिण जहां कहीं भी जाएंगे वहां भगवान शिव और भगवान बुद्ध के मंदिर, स्तूप आदि जरूर मिलेंगे।

भगवान बुद्ध के क्रांतिकारी विचारों का प्रभाव दुनिया भर के दार्शनिकों पर पड़ा हैं। धार्मिक एवं लोकसंस्कृति के विद्वान **डॉ. रा. चि. ढेरे कहते** है कि भगवान के विचार महाराष्ट्र के प्राचीन वारकरी संप्रदाय पर भी देखे जा सकते है।

यही वजह से दुनियाभर के सैलानी बुद्ध की इस भूमि कों देखने बड़ी संख्या मे आते हैं। भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़े स्थल, उनके धर्म प्रसार कार्य से जुड़े स्थल, उनके पश्चात उनके अनेक शिष्यों द्वारा निर्मित सांस्कृतिक धरोहर इन बातों का विदेशी पर्यटकों पर भारी प्रभाव देखा जा सकता है।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुये पर्यटन के दृष्टि से बुद्ध परिपथ का निर्माण और नियोजन काफी महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

देश में बुद्ध परिपथ कुछ महत्वपूर्ण स्थल निम्नलिखित हैं।

धर्मयात्रा/पवित्र परिपथ

इसके अंतर्गत आने वाले पर्यटन स्थलों को देखने मे पांच से सात दिन लग सकते है। भगवान बुद्ध के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण कर्म यहां घटित हुए थे। इस परिपथ में बौद्धगया, वाराणसी (सारनाथ), कुशीनगर, कपिलवस्तु (पिपरवा) आते हैं।

विस्तारित धर्मयात्रा अथवा या बुद्ध के चरणचिन्ह

इस बौद्ध परिपथ मे बौद्ध गया, (नालंदा, राजगीर, बराबर गुफाएं, प्रागबोधी गया), पटना (वैशाली, लवरिया, पटना संग्रहालय), वाराणसी(सारनाथ), कुशीनगर, पिपरवा (कपिलवस्तु, श्रावस्ती, सांकिसा) जैसे महत्वपूर्ण स्थानों का समावेश है।यह परिपथ क्षेत्र के दृष्टि से बड़ा होने के कारण इसे देखने मे 13 के 15 दिन लग सकते हैं।

*पर्यटक सूचना अधिकारी, भारत पर्यटन, औरंगाबाद

श्रावस्ती में महेथ एम लोकप्रिय बौद्धग्रस्त है। इतिहासकारों के अनुसार वास्तव में महेथ ही प्राचीन श्रावस्ती स्पूत है

श्रावस्ती में कोरिया द्वारा बनवाई गई भगवान बुद्ध की मूर्ति

बुद्धिस्ट हेरिटेज ट्रेल (राज्य परिपथ)

इसके अंतर्गत आने वाले महत्वपूर्ण परिपथ निम्नलिखित है।

1. जम्मू कश्मीर – लद्दाख, श्रीनगर (हरवान, परिहास पोरा) और जम्मू (अंबारन)

श्रीनगर के हरवाना क्षेत्र में बुद्ध टीले के अवशेष

श्रीनगर के परिहासपुरा क्षेत्र में बुद्ध मंदिर के अवशेष

2. हिमाचल प्रदेश के कुछ स्थलों में धर्मशाला, किन्नौर और लाहोल स्पिती।

धर्मशाला स्थित बुद्ध मंदिर में प्रवचन देने माननीय धर्मगुरू दलाईदामा

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर स्थित बौद्ध मंदिर

3. पंजाब संघोल

संघोल पंजाब के फतेहगढ़ साहिब जिले में स्थित एक ऐतिहासिक गांव है। यहां हड़प्पा कालीन अवशेष पाए गए हैं। इसे ऊंचा पिंड संघोल भी कहा जाता है। 1968 में किए गये उत्खनन में एक बौद्ध स्तूप मिला था इसके अलावा 1985 में की गई खुदाई में 117 खूबसूरत नक्काशीदार पत्थर और 69 खंभे, 35 क्रासबार, आकृति और मूर्तियां शामिल है।

4. हरियाणा में जींद (असंध), यमुनानगर (सुध) कुरूक्षेत्र में बौद्ध स्थलों के अवशेष पाए गए है।
5. महाराष्ट्र, औरंगाबाद (अजंता, एलोरा, पितलखोरा गुफ़ाए), पुणे (कार्ला गुफ़ाएं), नासिक (पांडव लेणी) आज भी पर्यटकों का स्वर्ग है।

अजंता की गुफाओं में बना चैत्य

विदेशी पर्यटकों को जो बुद्ध परिपथ पंसद आते हैं उनमें अजंता और एलोरा की गुफाएं सबसे महत्वपूर्ण है। यहां के शिल्प, विहार, मंदिर, चित्रकारी अपने आप में अद्भूत है। कई देशी–विदेशी विद्यवान इस पर शोध कर रहे हैं। भारत में बौद्ध धर्म से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण स्थल में अजंता, एलोरा का स्थान अव्वल माना जा सकता है।

महाराष्ट्र के नासिक में पांडव लेणी बौद्ध गुफा मंदिर

6. आंध्रप्रदेश, अमरावती, नागार्जुनकोंडा, विशाखापट्नम में बोरा गुफ़ाएं और सलहिंदूम गुफ़ाएं प्रसिद्ध बौद्ध स्थल है।

आंध्र प्रदेश के अमरावती में बुद्धपार्क

7. मध्य प्रदेश, सांची, सातधरा, अंधेर, सोनारी, मुरुलकुर्द

मध्य प्रदेश में विश्व बौद्ध विरासतः सांची का स्पूत

मध्य प्रदेश में सतघरा (सत्य का घर) में बौद्धकालीन अवशेष

मध्य प्रदेश के अंधेर में बौद्धकालीन प्राचीन टीला

8. ओड़ीसा, धौलागिरी, रत्नागिरी, ललितगिरी, उदयगिरी, खोंडागिरी

धौलागिरी, ओड़ीसा

ललितगिरी, ओडिशा

9. छतीसगढ़ भी महात्मा बुद्ध से अछूता नहीं रहा हैं। यहां का अतिप्रसिद्ध बौद्ध स्थल है सीरपुर

सीरपुर के बौद्ध मंदिर का भव्य प्रवेश द्वार

सीरपुर के स्तूप

10. पश्चिम बंगाल में कोलकाता का इंडियन म्यूज़ियम जहां देश भर से लाई गई भगवान बुद्ध की प्राचीन मूर्तियां आदि संग्रहित है।

11. सिक्किम में रूमटेक, इंचे और अन्य बौद्ध मठ प्रसिद्ध है।

बुद्ध पार्क का एक महत्वपूर्ण अंग है सिक्किम का तथागत त्साल मंदिर

12. अरुणाचल प्रदेश तवांग और बोमड़ीला

अरूणाचल प्रदेश के तवांग में बौद्ध विहार

अरूणाचल प्रदेश के बोडमिला में बौद्ध विहार का एक भव्य दृश्य

देश की हर जगह जो भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़ी है वह हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है।

अजंता और एलोरा को यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल में स्थान तो पहले ही मिला है।

अभी भारत सरकार द्वारा आइकॉनिक गंतव्य में स्थान दिया गया है। अजंता और एलोरा में जितना ज्यादा पर्यटन होगा, व्यापार में उतनी ही वृद्धि होगी और वह क्षेत्र विकास की दौड़ में आगे रहेगा। यहां रोजगार में वृद्धि होंगी।

हमारे देश ने हमारी संस्कृति ने पूरे विश्व को हर क्षेत्र में नयी विचारधाराएं दी हैं। हमारे संस्कृति की झलक पूरे विश्व में देखी जा सकती है। नेल्सन मंडेला, मार्टिन ल्युथर किंग, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर इन सब विद्वानों के विचारों में हमें महात्मा बुद्ध के विचारों की झलक देखने को मिलती है। पूरा विश्व जिसके विचारों को मानता है उन भगवान बुद्ध और उनके विचारों को गहराई से जानने की कोशिश विद्वान व्यक्ति आज भी करते है।

बुद्ध परिपथ की बनाने की अवधारणा यही है कि देशी और विदेशी दोनों पर्यटक भगवान बुद्ध को समझे और भारतीय संस्कृति को नजदीक से जाने। बुद्ध परिपथ यह संकल्पना भारत के पर्यटन क्षेत्र के इतिहास मे एक मिल का पत्थर है।

सरकारी कर्मचारी, सामान्य नागरिक, विद्यार्थी जो भी इस क्षेत्र से जुड़े है उन्हे सरकार के इस महत्वपूर्ण योजना मे अपना जो भी योगदान दे सकते है वह देना चाहिए।

यह था हमारा बौद्ध परिपथ का सफर!

बौद्ध स्थल

कौआ डोल पहाड़ी के प्राचीन मंदिर अवशेष

– शंकर शर्मा

एक कदम इतिहास की ओरः बराबर गुफाएँ हम हमेशा से ही ऐतिहासिक और प्रेरणा दायक गुफाओं की सराहना करते आये हैं और उनकी रचना से आश्चर्य चकित होते रहे हैं, पर आपने कभी यह जाना है कि इनकी उत्पत्ति के कारण क्या हैं, ये पहले कैसे आये? जी हाँ,चट्टानों को काट कर की गई इन वास्तुशैलियों के निर्माण की भी शुरुआत कहीं से हुई होगी। ऐसे ही कई सारे प्रश्नों और तथ्यों के साथ भारत में जटिल वास्तुशैली के साथ स्थित हैं कई ऐसी ही गुफाएँ। भारत के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक बिहार का मुंडेश्वरी देवी मंदिर। इसके अलावा और भी ऐसी ही प्राचीन जटिल रचनाओं में से एक है बिहार की बराबर गुफाएँ जो अब तक समय की मार के कई पहलुओं का सामना करते हुए शांति से खड़ी हैं। मौर्य काल से सम्बन्ध रखने वाली ये गुफाएँ लगभग 322–185 ईसा पूर्व पुरानी है।

बिहार में गया के उत्तर में लगभग 16 मील की दूरी पर बेलागंज के निकट, ग्रेनाइट पहाड़ियों के कई समूह हैं। इन्हें, कौवा डोल, बराबर, नागार्जुनी और धारवत कहते हैं। ये सभी प्राचीन काल के अवशेष हैं। पहाड़ी के मुख्य समूह से अलग एक पहाड़ी है कौवा–डोल और यह काफी दुर्गम है पूरी तरह से ग्रेनाइट के पत्थ रों से एक दूसरे के ऊपर इस प्रकार बनी हें कि लगता है कि पहाड़ी को एक ताज पहना दिया गया हो। कहा जाता है कि पहले इस शिखर के सबसे ऊपर एक और चट्टान थी। वहां तक किसी का जाना बड़ा कठिन था मगर कोई कौवा उस पर बैठ जाता तो वह हिलने–डोलने लगती थी। इसी कारण लोगों ने उसका नाम कौवा डोल रख दिया। कौवा डोल की उत्तरी तलहटी में पूर्व दिशा में ग्रेनाइट की पहाड़ियों को काट कर बनाया हुआ एक मंदिर था। पहाड़ी की तलहटी में प्राचीन काल की टूटी हुई ईंटें, पत्थर और बर्तनों के टुकड़े आज भी बिखरे हुए हैं। कनिंघम द्वारा यहां कई ऐसी कब्रें भी देखी गईं, जिन्होंने विभिन्न प्रकार के वर्गाकार सजावटी पत्थरों से बनाया गया था।

यहां अनियमितरूप से इधर उधर कुछ खम्भे जैसे टुकड़े पड़े दिखाई देते हैं। इन खम्भों में कई आकृतियां भी देखी जा सकती हैं। इनमें से एक गणेश, साथ ही शिवलिंग, गौरी शंकर जैसे चित्र दिखते हैं। लेकिन इन मूर्तियों में महत्वपूर्ण है, महिषासुर मर्दिनि दुर्गा की आकृति है। यहां गौतम बुद्ध की भी एक आकृति है जिसे पहाड़ी पर भूमि स्पर्श मुद्रा में बोधि वृक्ष के नीचे ध्यानलीन दिखाया गया है । अब इस मूर्ति को पीपल के पेड़ के नीचे बने एक बाड़े से सुरक्षित किया गया है ताकि इसे मवेशियों से बचाया जा सके ।

अदभूत प्राकृतिक छटा से भरा आग्नेकय चट्टानों से युक्त कौआ डोल पहाड़ी के प्राचीन भग्नावशेष एवं शैलोत्कृत मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं। इन अवशेषों को प्रकाश में लाने वाले फ्रांसिस बुकानन पहले व्यक्ति थे। उसके बाद में मेजर किट्टो ए. कनिंघम, बेगलर तथा टीव ब्लोच ने भी इन अवशेषों का वर्णन किया है।

*सहायक पुरातत्ववेत्ता पटना

पहाड़ी के पूर्वी भाग में स्थित कुरीसराय ग्राम का महत्व इस स्थल के एक प्राचीन मंदिर के अवशेष तथा एक विशालकाय काले बसाल्ट प्रस्तर निर्मित बुद्ध की प्रतिमा के कारण है। ईंट तथा प्रस्तर निर्मित इस मंदिर की योजना में मूलतः दक्षिणी भाग में उतराभिमुख आयताकार मुख्य गर्भगृह बनाए गए हैं, जो अंतराल, मंडप, अर्धमंडप तथा महामंडप से जुड़े हैं। आज भी यहां ग्रेनाइट प्रस्तर से बने तेरह स्तम्भों के अवशेष देखे जा सकते हैं। मुख्य गर्भगृह में एक ऊँची प्रस्तर पीठिका पर बुद्ध भूमिस्पर्श मुद्रा में बैठे हैं। पीठिका के निचले भाग में बुद्ध के विभिन्न मुद्राओं की लघु मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। पृष्ठ भाग की अलंकृत प्रभामंडल आंशिक रूप में खंडित है जिसके बायीं ओर हाथी एवं सिंह पर आसीन दो अन्य मानव प्रतिमाएँ भी अंकित हैं। यह सभी अवशेष पाल कालीन 8वीं से 12वीं शती ईस्वीं के है।

बराबर गुफाओं की ओर जाने के लिए सड़क चक्करदार होने के कारण काफी घूम कर जाना पड़ता है। यह स्थान कुछ समय पहले तक लगभग उपेक्षित सा ही था। अब पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इसकी देखभाल की जाती है । इस क्षेत्र में कई प्राचीन और कुछ अधूरी मूर्तियां देखी जा सकती हैं। ऐसी महत्वपूर्ण मूर्तियों को ठीक से प्रलेखित करने का काम धीमी गति से चल रहा है।

यह स्थान प्राचीन इतिहास में एक धार्मिक स्थल के रूप में बेहद महत्वपूर्ण था। ग्रेनाइट पर ऐसे खूबसूरत चित्रों को मूर्त रूप देने वाले कलाकारों के बारे में भी कुछ नहीं पता है। इन सारे विषयों पर पुनः बहुत सारे शोध किए जाने की आवश्यकता है क्योंकि ह्यूएन त्सांग इन प्रसिद्ध गुफाओं के बारे में मौन है ।

बराबर गुफाएँ

बराबर गुफाएं भारत में चट्टानों को काटकर बनायी गयी सबसे पुरानी गुफाएं हैं जिनमें से ज्यादातर मौर्य काल की हैं और कुछ में अशोक के शिलालेखों को देखा जा सकता है। यह गुफाएं भी बिहार के जहानाबाद जिले में गया से 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। बराबर गुफाएं (चार गुफाएं) और नागार्जुनी (तीन गुफाएं) एक जुड़वां पहाड़ियों में स्थित हैं और इनकी दूरी मात्र 1.6 कि.मी. होने के कारण कभी–कभी इन्हें नागार्जुनी गुफाएं ही मान लिया जाता है। चट्टानों को काटकर बनाए गए यह कक्ष सम्राट अशोक और उनके पुत्र दशरथ मौर्य के काल तीसरी सदी ईसा पूर्व के हैं। यद्यपि वह स्वयं बौद्ध थे लेकिन उन्होंने विभिन्न जैन संप्रदायों को भी विकास करने का अवसर दिया। इन गुफाओं का उपयोग आजीविका संप्रदाय के संन्यासियों द्वारा किया गया था जिनकी स्थापना मक्खाली गोसाला द्वारा की गयी थी, वे बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ गौतम और जैन धर्म के अंतिम एवं 24वें तीर्थंकर महावीर के समकालीन थे। इसके अलावा इस स्थान पर चट्टानों से निर्मित कई बौद्ध और हिंदू मूर्तियां भी पायी गयी हैं।

ई.एम. फोस्टर की पुस्तक, ''ए पैसेज टू इंडिया'' वास्तव में इसी क्षेत्र को आधारित कर लिखी गयी है, जबकि स्वयं पुस्तक के सांकेतिक मूल में गुफाओं को एक महत्वपूर्ण स्थल के रूप बताया गया है। लेखक ने इस स्थल का दौरा किया था और बाद में अपनी पुस्तक में मारबार गुफाओं के रूप में इनका उल्लेख किया है। उनकी पुस्तक के अनुसार, बराबर में ज्यादातर गुफाएं दो कक्षों की बनी थीं जिन्हें पूरी तरह से ग्रेनाईट को तराश कर बनाया गया था। पहला कक्ष उपासकों के लिए एक बड़े आयताकार हॉल में एकत्र होने के इरादे से बनाया गया होगा और दूसरा एक छोटा, गोलाकार,

गुम्बदयुक्त कक्ष पूजा के लिए था। इस अंदरूनी कक्ष की संरचना कुछ स्थानों पर संभवतः एक छोटे स्तूप की तरह थी। इनमें एक उच्च–स्तरीय पॉलिश युक्त आतंरिक सतह और गूंज का रोमांचक प्रभाव मौजूद है।

बराबर पहाड़ी, (बिहार) में गुफा मंदिरों का सामान्य दृश्य

बराबर पहाड़ों में मौर्य वास्तुकला. लोमस ऋषि की कुटी. तीसरी शताब्दी ईसापूर्व.

बराबर पहाड़ी में चार गुफाएं शामिल हैं – करण चौपड़, लोमस ऋषि, सुदामा और विश्व झोंपड़ी सुदामा और लोमस ऋषि गुफाएं भारत में चट्टानों को काटकर बनायी जाने वाली गुफाओं की वास्तुकला के सबसे आरंभिक उदाहरण हैं, जिनमें मौर्य काल की वास्तुकला से संबंधित विवरण मौजूद हैं ।

1 लोमस ऋषि गुफाः बराबर गुफाओं में लोमस ऋषि गुफा की एक विशेषता है, इसका चाप (आर्क)। इसके प्रवेश द्वार पर भी हाथियों के डिजाइन की नक्काशी की गई है। लोमस ऋषि गुफा का सामने का यह भाग काफी आकर्षक और खूबसूरत है। मेहराब की तरह के आकार वाली ऋषि गुफाएं लकड़ी की तत्कालीन वास्तुकला की नकल के रूप में हैं। द्वार के मार्ग पर हाथियों की एक पंक्ति स्तूप की ओर घुमावदार दरवाजे के साथ आगे बढ़ती है। लोमस ऋषि की इस विख्यात गुफा का निर्माण भी अशोक ने कराया था। इन गुफाओं का निर्माण मिश्रित शैली में किया गया है तथा उस समय के भारतीय कारीगरों की उत्कृष्ट कलाकारी एवं वास्तु विशेषज्ञता का परिचायक है। यहां कई गुफाओं के अंदर भी गुफाएं है जहां तक जाना मुश्किल है। लोमस ऋषि गुफा में सामने का भाग चाप के आकार का है और इसमें लकड़ी की वास्तुकला भी शामिल है।

2 सुदामा गुफाः यह गुफा 261 ईसा पूर्व में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा समर्पित की गयी थी और इस गुफा में एक आयताकार मण्डप के साथ गोलाकार कक्ष बना हुआ है। इस गुफा का निर्माण सम्राट अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 12वें वर्ष में आजीवक साधुओं के लिए करवाया था। इसके चाप धनुष के आकार के हैं।

3 करण चौपड़ (कर्ण चौपर): यह पॉलिश युक्त सतहों के साथ एक एकल आयताकार कमरे के रूप में बनी हुई है जिसमें ऐसे शिलालेख मौजूद हैं जो 245 ई.पू. के हो सकते हैं। इस गुफा को सुप्रिया गुफा भी कहा जाता था। अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 19वें वर्ष में इसका निर्माण कराया था। शिलालेखों के अनुसार इस पहाड़ी को सलाटिका के नाम से भी जाना जाता था। इन गुफाओं का निर्माण भी मिश्रित शैली में किया गया है।

विश्व झोंपड़ी : इसमें दो आयताकार कमरे हैं जो चट्टानों में काटकर बनाए गए हैं। यहां चिकनी सतहों के साथ एकल आयातकार कमरे का रूप बना हुआ है और यह 245 ईसा पूर्व का है। इस गुफा में प्रवेश के लिए सीढियों द्वारा पहुंचा जा सकता है।

नागार्जुनी गुफाएं

नागार्जुन के आसपास की गुफाएं बराबर गुफाओं से छोटी और बाद में बनाई गई थीं । गोपी (गोपी–का–कुंभा) शिलालेख के अनुसार यह तीन गुफाएं लगभग 232 ई.पूर्व में राजा दशरथ द्वारा आजीविका संप्रदाय के अनुयायियों को समर्पित की गई थीं ।

धर्म और इतिहास के साक्षी बराबर के पहाड़

वैसे तो पूरे देश में अनेक प्राचीन शिव मंदिर हैं। परन्तु जब बात प्राचीनतम शिव मंदिर की होती है तो मगध के बराबर पहाड़ पर स्थित सिद्धेश्वर नाथ महादेव मंदिर का नाम सर्वप्रथम आता है। श्रृद्धालु इसे सिद्धनाथ तीर्थ भी कहते हैं । महाभारत कालीन जीवंत कृतियों में से एक, यह मंदिर आज भी पुरातन शिल्पकृतियों में प्राचीन आदर्शों से युक्त पूजन परंपरा को जीवित रखे हुए है। बराबर पहाड़ के शिखर पर अवस्थित सिद्धेश्वरनाथ को नौ स्वयंभू नाथों में प्रथम कहा जाता है। इसे 'वाणेश्वर महादेव भी कहा जाता है। मंदिर तक जाने के लिए सीढीयां बनी हुई है।

बराबर पर्वत भारतवर्ष के ऐतिहासिक पर्वतों में एक है। 1100 फुट ऊंचे बराबर पर्वत को मगध का हिमालय भी कहा जाता है। यह पर्वत सैरगाह के रूप में प्राचीन काल से ही चर्चित है। यहां सात अद्भुत गुफाएं भी बनी हुई है। किंवदंतियों के अनुसार पर्वत पर बनी गुफाएं प्राचीन काल में ऋषि–मुनियों के ध्यान साधना करते समय सुरक्षा की दृष्टि से बनाई गई थीं। जिनका पता अंग्रेजों के कार्यकाल में चला। इनमें से चार गुफाएं बराबर गुफाएं एवं बाकी तीन नागार्जुन गुफाएं कहलाती है। भारत में पहाड़ों को काट कर बनाई गयी ये सबसे प्राचीन गुफाएं है। पर्यटन की दृष्टि से यह काफी उपयुक्त स्थान है।

हालांकि इस क्षेत्र मे कुल सात गुफाएं हैं लेकिन विशेष बात यह है कि कर्ण चौपड़, सुदामा और लोमस ऋषि गुफा एक ही चट्टान को काटकर बनाई गई हैं। देखने में अद्भुत लगने वाली ये गुफाएं प्राचीन समय की कलाकारी को दर्शाती हैं। गुफा के भीतर तेज आवाज में चिल्लाने पर काफी देर तक प्रतिध्वनियों को सुनकर आने वाले पर्यटक काफी रोमांचित होते हैं।

लोमस गुफा

ऐतिहासिक सप्त गुफाओं में बनी वापिक गुफा में अंकित तथ्यों से ज्ञात होता है कि इसकी स्थापना योगानंद नामक ब्राह्मण ने की थी। मंदिर परिक्षेत्र में पाषाण खंडों पर उत्कीर्ण कलाकृति इस पूरे क्षेत्र को प्राचीन शिव अराधना क्षेत्र के रूप में स्थापित करती है। एक अन्य मत के अनुसार आदिकाल में जब मगध पर कौल संप्रदाय का आधिपत्यक था, उसका केन्द्र इसी पर्वत को बताया जाता है। इसकी उत्पत्ति ई.पू. 600 के लगभग मानी जाती है। बाद में इन्हें दशरथ द्वारा आजीविका सम्प्रादाय के अनुयायियों को समर्पित किया गया था।

नागार्जुनी गुफाएं

बारबर पहाड़ी में स्थित इन गुफाओं को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया

है। जिस विशाल चट्टान को काट कर गुफाएं बनाई गई है उस पर लोगों की आवाजाही बनी रहती है। अक्सर पर्यटक यहां पिकनिक मनाने आते हैं । वैसे यहां साल भर भक्तगण व पर्यटक आते रहते हैं लेकिन श्रावण मास, बसंत पंचमी एवं महाशिवरात्रि अनंत चतुदर्शी में भक्तों व पर्यटकों का आगमन बड़ी संख्या में होता है।

बराबर अलौकिक शक्ति का केन्द्र है। प्राकृतिक वादियां, कल–कल झरने, नौकाविहार, ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्व वाले गुफाएं पर्यटकों को खूब आकर्षित करती हैं। बराबर पहाड़ी की चोटी पर स्थित बाबा सिद्धेश्वर नाथ मंदिर आकर्षक का केंद्र है। सावन में पूरे माह श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। शिवपुराण के अनुसार भगवान शिव के नवरूपों में बाबा सिद्धनाथ का सर्वोच्य स्थान है। मान्यता है कि यहां आने वाले श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

जहानाबाद के मखदुमपुर स्टेशन के पास 'बराबर' की पहाड़ी अपनी ऐतिहासिकता के लिए प्रसिद्ध है। स्थानीय लोग इसे 'सतघरवा' कहते हैं। एक मान्यता यह भी है कि बराबर पहाड़ी में सात गुफाएं वही हैं, जिसे पुराणों के साथ ही महाभारत में 'सतघर' कहा गया है। इसलिए कुछ लोग इनके बारे में यह भी बताते हैं :

1. कर्ण चौपट या कर्ण की गुफा: ऐसा कहा जाता है कि कुंती पुत्र दानवीर कर्ण अंग देश का राजा होने के बाद यहां आए थे।

2. सुदामा की गुफा : कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण अपने मित्र के लिए यह आवास बनवाया था।

3. लोमश ऋषि गुफा: मान्यता है कि लोमश ऋषि घुमंतू थे। भगवान श्रीकृष्ण ने इसी स्थान पर लोमश ऋषि से अर्जुन का परिचय कराया था।

4. विश्वामित्र की गुफा : वाल्मिकी रामायण के अनुसार भगवान राम, लक्ष्मण के साथ ऋषि विश्वामित्र यहां पधारे थे। राम, लक्ष्मण धनुष यज्ञ में भाग लेने मिथिला जा रहे थे। तीनों ने इस गुफा में रात्रि विश्राम किया था।

5. नागार्जुनी गुफा: नागार्जुन बौद्ध धर्म के एक गुरु थे और वे यहां रहा करते थे। उनकी याद में सम्राट अशोक ने स्तूप निर्मित कराया था।

6. **गोपी गुफा :** गोपी का गुफा और वापिया का गुफा लगभग 232 ईसा पूर्व में राजा दशरथ द्वारा आजीविका संप्रदाय के अनुयायियों को समर्पित की गई थी।

7. वैदिक गुफा: राजा शार्दूल बर्मन और आनंद बर्मन ने गुफा के अंदर हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियां स्थापित की थी। बौद्ध साहित्य में इस पर्वत को शीलभद्र विहार कहा गया है। शीलभद्र बंगाल के एक कुलीन परिवार से थे और बौद्ध धर्म के बड़े विद्व ान और प्रचारक थे। यहां शीलभद्र का निवास स्थल तथा बौद्ध स्तूप भी था।

सातों गुफाएं बराबर के दक्षिण भाग से मात्र बीस फुट की ऊंचाई पर है। गुफा के पूरब में पाताल गंगा जलाशय नाम से एक बड़ा तालाब और गुफा के दक्षिण में दस एकड़ से अधिक क्षेत्र में समतल मैदान है। मैदान और गुफा से लगभग दो कि.मी. दूर पूरब में फल्गू नदी बहती है, जो यहां आने वाले पर्यटकों को आकर्षित करती है।

बराबर की गुफ़ाएँ बिहार के गया ज़िले में स्थित है। इस पहाड़ी में सात प्राचीन गुफ़ाएँ विस्तृत प्रकोष्ठों के रूप में बनी हैं। इन सात गुफ़ाओं में से तीन में

अशोक के अभिलेख अंकित हैं। इनसे विदित होता है कि मूलतः इनका निर्माण अशोक के समय आजीवक सम्प्रदाय के भिक्षुओं के निवास के लिए करवाया गया था। मौर्य काल की बराबर गुफ़ाएँ देश की सबसे पुराने पत्थरों से काटी गई गुफ़ाएँ हैं, जो आज भी विद्यमान हैं। बराबर की ज़्यादातर गुफ़ाओं में दो कक्ष हैं, जो पूरी तरह से ग्रेनाइट से काटे गये हैं। इनकी भीतरी सतह बहुत ही चमकदार होने के कारण आवाज़ की गूँज बहुत शानदार होती है

यह गुफाएँ पत्थरों की कटाई वाली वास्तुकला शैली के शानदार उदाहरण हैं। इन गुफाओं में परिवर्ती काल के कुछ अन्य अभिलेख भी हैं, जिनमें मौखरिवंशीय नरेश अनंतवर्मन का एक अभिलेख उल्लेखनीय है। बराबर गुफाओं का निर्माण अशोक द्वारा तीसरी शताब्दी ई.पू. में बराबर व नागार्जुनी चट्टानों को काटकर करवाया गया था। बराबर पहाड़ी पर स्थित सात में से तीन गुफाओं में अशोक के शिलालेख होने से यह ज्ञात होता है कि दो गुफाएँ अशोक द्वारा अपने शासन के 12वें वर्ष और क्रमशः 19 वें वर्ष में भिक्षुओं को दान में दी गयीं।

चट्टानों को काट कर बनाई गई यह प्राचीन गुफाएं हमें सीधे मौर्य वंश के काल में ले जाती है। बराबर गुफाओं की ओर वैसे तो यहाँ की लगभग सारी गुफाएं बौद्ध बौद्धिक गुफाएँ हैं पर आप यहाँ जैन और हिन्दू धर्म से भी जुड़ी कई मूर्तियां देख सकते हैं। बराबर गुफाओं की कुछ दिलचस्प बातें बराबर पहाड़ी पर मुख्यतः 4 गुफाएँ हैं, लोमस ऋषि गुफा, सुदामा गुफा, करण चौपर और विश्व झोंपड़ी । बराबर गुफाएँ बौद्ध भिक्षुओं के साथ–साथ जैन भिक्षुओं का भी वासस्थल रही थीं। यहाँ बनी सारी गुफाओं को विशाल ग्रेनाइट चट्टानों को काटकर बनाया गया है। गुफाओं में दो कक्ष हैं: एक आयताकार कक्ष जो धार्मिक सभा और मंडलियों के आयोजन के उद्देश्य से बनाया गया था और दूसरा छोटा सा कक्ष जो एक स्तूप की तरह है, प्रार्थना घर के रूप में बनवाया गया था। हालाँकि अब ये कक्ष खली पड़े हैं। इन गुफाओं की एक अन्य विशेषताएं है कि यहाँ की अंदरूनी दीवारें चिकनी और पॉलिश की हुई हैं। शायद इसलिए भी इस गुफा ने अपनी वही पुरानी चमक अब तक खोई नहीं है।

बराबर गुफाओं का निर्माण कार्य सम्राट अशोक के शासनकाल के समय में हमें ले जाता है। इसलिए आप यहाँ सम्राट अशोक से जुड़े कई शिलालेख भी देख सकते हैं। बराबर गुफाओं की कुछ दिलचस्प बातें बराबर गुफा के पास एक और अन्य गुफा भी स्थित है, नागार्जुनी गुफा जो बराबर गुफा से लगभग दो कि.मी. की दूरी पर स्थित है। दोनों ही गुफाएं एक ही समय की हैं ।

बराबर गुफा पहुँचें कैसे?

आप यहाँ अपने किसी निजी वाहन से ही पहुँच सकते हैं क्योंकि यहाँ तक के लिए सरकारी बस आदि की सुविधा उपलब्ध नहीं है। चूंकि बराबर गुफाएँ पहाड़ी की ऊंचाई पर स्थित है इसलिए पर्यटकों को सीढ़ियों द्वारा चढ़कर इस धरोहर तक पहुँचना होगा।

बराबर गुफा बिहार में पटना से बोध गया जाने के रास्ते पर ही पड़ता है। यह जहानाबाद जिले में आता है। यह बोधगया से लगभग 24 कि.मी. की दूरी पर स्थित है और पटना के नजदीक ही स्थित दिलचस्प पर्यटक स्थलों में से एक है।

आप अब जब भी कभी पटना या गया की यात्रा पर जाएँ इस सबसे पुरानी चट्टानों को काट कर बनाई गई गुफाओं को देखने जरूर जाएँ।

महात्मा बुद्ध के शिक्षाप्रद वचन

—प्रस्तुति : राम बाबू

हम जो कुछ भी हैं वो हमने आज तक क्या सोचा इस बात का परिणाम है। यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है। यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो उसकी परछाई की तरह खुशी उसका साथ कभी नहीं छोड़ती।

किसी जंगली जानवर की अपेक्षा एक कपटी और दुष्ट मित्र से अधिक डरना चाहिए, जानवर तो बस आपके शरीर को नुक्सान पहुंचा सकता है, पर एक बुरा मित्र आपकी बुद्धि को नुक्सान पहुंचा सकता है।

आपके पास जो कुछ भी है है उसे बढ़ा—चढ़ा कर मत बताइए, और ना ही दूसरों से ईर्ष्या कीजिये, जो दूसरों से ईर्ष्या करता है उसे मन की शांति नहीं मिलती।

मन और शरीर दोनों के लिए स्वास्थय का रहस्य है— अतीत पर शोक मत करो, ना ही भविष्य की चिंता करो, बल्कि बुद्धिमानी और ईमानदारी से वर्तमान में जियो।

शक की आदत से भयावह कुछ भी नहीं है। शक लोगों को अलग करता है। यह एक ऐसा ज़हर है जो मित्रता ख़त्म करता है और अच्छे रिश्तों को तोड़ता है। यह एक काँटा है जो चोटिल करता है, एक तलवार है जो वध करती है।

कोई व्यक्ति इसलिए ज्ञानी नहीं कहलाता क्योंकि वह सिर्फ बोलता रहता है; लेकिन अगर वह शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्ण और निर्भय है तो वह वास्तव में ज्ञानी कहलाता है।

आप पूरे ब्रह्माण्ड में किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर सकते हैं जो आपसे अधिक आपके प्रेम और स्नेह के लायक है और वह व्यक्ति आपको कहीं नहीं मिलेगा। जितना इस ब्रह्माण्ड में कोई और आपके प्रेम और स्नेह का अधिकारी है, उतना ही आप खुद हैं।

---

*कनिष्ठ अनुवादक, पर्यटन मंत्रालय

अभ्यारण्य पर्यटन

रणथम्भौर नेशनल पार्क

—विनीत सोनी

रणथम्भौर राजस्थान के सवाई माधोपुर में स्थित है और यह नेशनल पार्क भारत के प्रमुख टाइगर रिज़र्व में से एक है। लगभग 300 वर्ग कि.मी. में फैला यह पार्क एक पठार पर स्थित है जिसके एक ओर उत्तर में बनास और दक्षिण में चम्बल नदी बहती है और पार्क के बीचों बीच रणथम्भौर का किला है जो यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साईट है।

इस बार फरवरी में अचानक प्लान बना वो भी होली के ठीक पहले और मैं 28 फरवरी को पश्चिम एक्सप्रेस से रात 10 बजे सवाई माधोपुर पहुँच गया। सवाई माधोपुर जयपुर से 140 कि.मी. दक्षिण पूर्व तथा कोटा से 110 कि.मी. उत्तर पूर्व में है और यहाँ लगभग सभी प्रमुख रेलगाड़ियों का स्टॉप है। आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व भी मैं यहाँ आया था, पर तब से इस शहर में बहुत परिर्वतन हो चुका है। एक नया शिल्प ग्राम बस गया है और फारेस्ट ऑफिस भी शिफ्ट हो गया है इसके साथ ही बहुत से नए होटल भी खुल गए हैं।

यहाँ आने से पहले ऑनलाइन सफारी बुक कर ली थी, जोन–3 में टाइगर दिखने की सबसे अधिक सम्भावना रहती है तो मैंने यही जोन बुक की। मेरी किस्मत ने भी साथ दिया क्योंकि यह जोन महीनों पहले बुक हो जाती है और जिप्सियां भी सारी बुक हो गयी थीं पर कैंटर में एक जगह थी जो मुझे मिल गयी।

यहाँ के सारे प्रमुख होटल्स रणथम्भौर रोड पर ही हैं। नेशनल पार्क रेलवे स्टेशन से 12 कि.मी. दूर है और रोड के दोनों ओर हर प्रकार के होटल्स हैं। मैंने पहले ही एक होटल बुक कर लिया था और अपनी टिकट मेल कर दी थी, जिससे होटल मैनेजर ने फारेस्ट बुकिंग ऑफिस से मेरे लिए एंट्री पास निकलवा लिया था। असल में बुकिंग ऑफिस स्टेशन से छः कि.मी. मेन रोड से थोड़ा हटकर है। आपके पास दो विकल्प होते हैं, अगर आपकी सफारी सुबह की है जिसका समय 6–6:30 का है तो उसी दिन सुबह पांच बजे या एक दिन पहले और शाम की सफारी 2:30 की है तो उसी दिन 12 से 2 बजे के बीच पास ले सकते हैं। जिसके लिये 750 रुपए प्रति व्यक्ति शुल्क लिया जाता है। लेकिन इसके लिए आपको पहले फारेस्ट बुकिंग ऑफिस जाना पड़ता है। यदि आपने पहले ही कोई होटल बुक करा लिया हो तो यह बहुत आसान हो जाता है। बस आपको अपना टिकट और एक 'आई डी प्रूफ' होटल को मेल करना है और कैंटर या जिप्सी आपके होटल से ही आपको 'पिक' कर लेती है केंटर (20 व्यक्ति बैठ सकते है) 500 रुपये प्रति व्यक्ति तथा जिप्सी 750 (6–8 व्यक्ति बैठ सकते है) रुपये प्रति व्यक्ति लेती है और सफारी के बाद होटल में ही 'ड्राप' कर देती है।

मेरा होटल स्टेशन से दो कि.मी. दूर मुख्य रणथम्भौर रोड पर ही था, ऑटो ने 10 मिनट लिए और मैं साढ़े दस बजे होटल पहुँच गया, खाना खाया और सुबह पाँच का अलार्म लगा कर सो गया। सुबह साढ़े छह बजे तक तैयार हो गया, कुछ देर बाद ही कैंटर आ गया और 15 मिनट में हम सफारी के मुख्य गेट पर पहुँच गए। पहाड़ी और पठारी क्षेत्र होने के

*स्वतंत्र लेखक, लखनऊ (उ.प्र.), अतुल्य भारत में निरंतर योगदान कर रहे हैं

कारण हवा ठण्डी थी और कैंटर थोड़ी देर में ही मुख्य सड़क को छोड़कर, घुमावदार और कच्ची जंगल की सड़कों पर मुड़ गया।

इस पार्क में 10 जोन बनाए गए हैं और इसके बीचों–बीच से किले के लिए सड़क जाती है जो कि पब्लिक रोड है और कई बार इस पर भी जंगली जानवर आ जाते हैं, किला प्रवेश द्वार से पांच कि. मी. है और लगभग 500 फीट की ऊँचाई पर है। वैसे तो सभी 10 ज़ोन में टाइगर हैं पर इनका दिखना पूरी तरह से भाग्य पर निर्भर करता है। जोन–3 और जोन–4 में दिखने के अधिक अवसर हैं और इनमे से भी जोन–3 सबसे ज्यादा आकर्षक और लोकप्रिय है। जोन–3 के ज्यादा पापुलर होने के अपने कारण हैं जैसे बहुत सी झीलों का होना, इनमे से मुख्य हैं; पदम् तालाब, राज बाग और मलिक तालाब। इसके अलावा किले के निकट होने से इसका आकर्षण और भी बढ़ जाता है। जंगल में घुसते ही बहुत से चीतल दिखने शुरू हो जाते हैं, यह हिरण की ही एक किस्म है और यहाँ इनकी बहुतायत है इसके अलावा इनकी एक और किस्म सांभर भी यहाँ बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

कहीं जंगल बहुत घना है तो कहीं दूर तक फैले मैदान और बीच में पहाड़ और पठार इसे एक अलग ही छटा प्रदान करते हैं। पतझड़ का मौसम होने के कारण पूरा पार्क पीले रंग में रंगा था और कुछ समय बाद उगते सूरज ने इसमें नारंगी रंग भर दिया। मोर, लंगूर, किंगफ़िशर, बुलबुल, चीतल, सांभर आदि के झुंड से होता हुआ कैंटर थोड़ी देर बाद पदम् तालाब के पास पहुँच गया। पदम् तालाब शेरों का पसंदीदा स्थान है और गर्मी के समय आपको आसानी से इसके आस पास शेर, तेंदुए, लोमड़ी, भालू और दूसरे जंगली जीव दिख जाएंगे। जब हम इसके पास पहुँचे तो हमें विचरते हिरण और पानी में लेटा मगरमच्छ दिखा पर शेर नहीं।

इसी से लगा हुआ है जोगी महल जो कभी महाराजाओं की आरामगाह हुआ करता था और बाद में इसे फारेस्ट रेस्ट हाउस में बदल दिया गया था, भारत का दूसरा सबसे बड़ा वट वृक्ष भी यहीं है और अब इसे टूरिस्टों के लिए बंद कर दिया गया है। यहाँ हल्के फुल्के नाश्ते आदि मिल जाते हैं। साथ ही, यहां टॉयलेट आदि की व्यवस्था है। जगह जगह फैले पुराने महल और किले के खँडहर इस नेशनल पार्क को भारत के अन्य पार्कों से अलग करते हैं, इनमें से बहुतों में अभी जंगली जानवरों ने अपना अड्डा बनाया हुआ है और इन्हीं में कभी कभी यहाँ शेर भी आराम फरमाते

दिख जाते हैं।

अब तक हमें पार्क में दो घंटे हो चुके थे और हम वापस उसी मार्ग से लौट रहे थे, गाइड के आंकड़ो के हिसाब से इस जोन में 3 से 4 शेर होने चाहिए। लेकिन हमें अभी तक एक भी शेर खान के दर्शन नहीं हुए थे। कैंटर में मैं अकेला भारतीय था और साथ बैठे विदेशी शैलानी भी निराश होने लगे थे। गाइड बीच–बीच में दूरबीन से इधर उधर देख रहा था और जैसे किसी आवाज को सुनने का प्रयास कर रहा था। जंगल में शेर दिखने से आस – पास लंगूर आदि सतर्क हो जाते हैं और चिल्ला कर बाकी जीवों को सचेत कर देते हैं। पर अभी तक कोई ऐसी आवाज सुनाई नहीं दी थी, जाते और लौटते दूसरी जिप्सी और कैंटर वालों को भी कोई संकेत नहीं मिला था।

जंगल में शांति थी और हम लगभग लगभग जोन से बाहर निकलने ही वाले थे कि गाइड ने एक अजीब सी आवाज लगाई और आगे निकल चुके कैंटर जिप्सी वापस मुड़ने लगे, कुछ ही सेकंड में एक शानदार बाघ सामने से आता हुआ नज़र आया।

आने जाने वाले वाहनों से अनजान और निर्भीक वह बस अपनी राह बढ़ा चला जा रहा था और कैंटर से बस 2 फीट की दूरी से गुज़रा। लोगों में तो फोटो लेने की जैसे होड़ सी मच गयी, बाघ बिल्कुल हमारे सामने आकर कुछ सेकंड रुका और फिर कच्ची सड़क पार कर बैठ गया। गाइड ने बताया कि यह एक शेरनी है जिसने 15 दिन पहले ही दो शावकों को जन्म दिया है और ये शिकार की तलाश में बाहर आयी है। शावकों को जन्म देने के कुछ समय तक शेरनी बच्चों के आस पास ही रहती है और प्रायः तीन से चार हफ़्तों के बाद ही बाहर निकलती है पर शायद आस पास शिकार न मिलने के कारण इसे शावकों को छोड़कर दूर आना पड़ा।

रॉयल बंगाल टाइगर को वैसे तो बहुत बार चिड़ियाघर में देखा है पर इस प्रकार इन्हें इनके

प्राकृतिक माहौल में विचरते देखने का एक अलग ही रोमांच है जो आपको ऐसे ही किसी पार्क में आकर मिल सकता है।

कुछ समय तक ये शानदार जानवर यूँ ही बैठा रहा और लोगों ने जमकर फोटो लीं और फिर ये उठकर आगे बढ़ गया और देखते ही देखते आँखों से ओझल हो गया। बाघ की इस एक झलक ने थोड़ी देर पहले उपजे निराशा के माहौल को एकदम उल्लास और उमंग में भर दिया और लोग खुशी खुशी अपने गंतव्य को वापस पहुंचे। लौटते समय कैंटर एक एक कर सबको उनके होटल के सामने छोड़ता हुआ चला गया, वापस होटल आकर मैंने नाश्ता किया और फिर किला देखने के लिए निकल पड़ा।

स्टेशन से किले के लिए 'शेयर्ड जीप' चलती हैं जो इसी रोड से गुज़रती हैं, कुछ देर इंतज़ार के बाद एक जीप में बैठने की जगह मिली और मैं वापस उसी मार्ग पर चल पड़ा। नेशनल पार्क के गेट से जीप आगे बढ़ी और मेन रोड से होती हुई सीधी किले के प्रवेश द्वार पर रुकी।

इस स्थान (फोर्ट में) पर मैं पिछली बार भी आया था और इसका एक कारण यहाँ का प्रसिद्ध श्री गणेश मंदिर है। मंदिर लगभग एक हजार साल पुराना है और गणेश जी की प्रतिमा स्वयंभू है। इसके साथ ही साथ ये दुनिया का एक मात्र त्रिनेत्र गणेश मंदिर है जहाँ गणेश जी अपने पूरे परिवार रिद्धि–सिद्धि और पुत्र शुभ–लाभ के साथ विराजते हैं।

फिलहाल पूरे किले में लंगूरों का राज है और टॉप तक के 20–25 मिनट के रास्ते में आपको हर जगह मौजूद मिलते हैं। लंगूरों की एक विशेषता है इनका कम उत्पाती होना, बन्दर जहाँ जबर्दस्त उत्पाती होते हैं वहीं लंगूर काफी संयत प्रकृति के होते हैं और आपके हाथ से कुछ छीना–झपटी नहीं करते हैं। फोर्ट में चढ़ते हुए कई जगहों से आपको इस पार्क का शानदार नजारा मिलता है और कई कि.मी. दूर तक

के इलाके के सुंदर दर्शन होते हैं। पदम् तालाब, जोगी महल दूर तक फैले पहाड़ और पठार और चारों ओर पसरा घना जंगल, अगर आप इस पार्क में सफारी पर आयें तो किला देखने जरूर आएं ।

आज बुद्धवार है, जो गणेश जी का दिन है और किले और मंदिर परिसर में ठीक ठाक भीड़ थी। बाहर प्रसाद लेकर मंदिर परिसर में प्रवेश किया, अभी आरती चल रही थी और भोग लगाया जा रहा था। ज्यादा बड़ी लाइन नहीं थी और सब मिलाकर 20–25 लोग थे, परिसर काफी बड़ा है इसलिए कोई समस्या नहीं होती है। पांच मिनट बाद ही दर्शन शुरू हो जाते हैं और बाबा की भव्य प्रतिमा के दर्शन होते हैं, बाबा पूरे परिवार के साथ विराजमान हैं। दर्शन कर सामने बैठने का स्थान भी है जहाँ आप आराम से पूजा आरती कर सकते हैं, कुछ समय शांति से भगवान के दरबार में बिताने के बाद मैं बाहर आया और थोड़ी ही दूर पर स्थित प्राचीन काली मंदिर के दर्शनों के लिए निकल पड़ा।

रणथम्भौर दुर्ग का निर्माण नागिल जाट ने 944 में करवाया था इसका निर्माण हुआ था और बहुत समय तक इस दुर्ग पर जाट राजाओं का शासन रहा। सत्ता के लिए इस दुर्ग ने अनेक युद्ध देखे हैं। यह समय–समय पर मुगलों के अलावा आमेर के राजाओं के नियंत्रण में रहा लेकिन इस दुर्ग की सबसे ज्यादा ख्याति हम्मीर देव (1282–1301) के शासन काल में रही। हम्मीर देव का 19 वर्षो का शासन इस दुर्ग का स्वर्णिम युग माना जाता है। कई ऐतिहासिक घटनाओं व हम्मीर देव चौहान के हम्मीर हठ और शौर्य के प्रतीक इस दुर्ग का जीर्णोद्धार जयपुर के राजा पृथ्वी सिंह और सवाई जगत सिंह ने कराया। महाराजा मान सिंह ने इस दुर्ग को शिकारगाह के रूप में परिवर्तित कराया। आजादी के बाद यह दुर्ग सरकार के अधीन हो गया जो 1964 के बाद भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के नियंत्रण में है।

कैसे पहुंचे—रणथम्भौर जयपुर से 140 किमी, तथा कोटा से 110 किमी। दिल्ली और दूसरे बड़े शहरों से यहाँ के लिए सीधी ट्रेन है। निकटतम हवाई अड्डा—जयपुर।

तापमान और मौसम—पार्क मानसून छोड़कर अक्टूबर से मई तक खुला रहता है। अगर सर्दी के समय जाएं तो शाम की सफारी प्लान करें और गर्मियों के समय सुबह की। तापमान सर्दियों में 5—25 डिग्री, गर्मियों में 30—45 डिग्री रहता है।

राजस्थान का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। रणथम्भौर दिल्ली—मुंबई रेल मार्ग के सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन से 13 कि.मी. दूर रण और थंभ नाम की पहाडियों के बीच समुद्रतल से 480 मीटर ऊंचाई पर 12 कि.मी. की परिधि में बना एक दुर्ग है। दुर्ग के तीनो और पहाडों में प्राकृतिक खाई बनी है जो इस किले की सुरक्षा को मजबूत कर इसे अजेय बनाती है। यूनेस्को की विरासत संबंधी वैश्विक समिति की 36वीं बैठक में 21 जून 2013 को रणथम्भौर को विश्व धरोहर घोषित किया गया था।

चम्बल और बनास के बीच में बसे इस शहर में एक अलग ही राजपुताना आकर्षण है, वैसे तो यहाँ और कुछ घूमने के लिए नहीं है पर सफारी और फोर्ट अपने आप में एक अनुभव है जो आपको यहाँ आकर ही मिल सकता है और राजस्थानी संस्कृति की जो झलक मिलती है सो अलग। वैसे यहाँ हैंडीक्राफ्ट की बहुत दुकानें हैं और अभी एक नया शिल्प ग्राम भी बसाया गया है जो फारेस्ट बुकिंग ऑफिस के पास ही है तो आप वहाँ भी जा सकते हैं।

माता के दर्शनों के उपरांत कुछ दूर आगे भगवान लक्ष्मी नारायण मंदिर में दर्शन किये और देर तक किले में घूमता रहा। वैसे तो यह जगह अब लगभग खँडहर हो चुकी है पर इसका अपना आकर्षण है और जो नज़ारे आपको यहाँ से देखने को मिलते हैं वह अविस्मरणीय हैं। यह एक यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साईट भी है। कुछ समय यहाँ वहां घूमने के बाद मैं वापस नीचे आ गया, जीप पकड़कर होटल आया और खाना खाकर सो गया। मेरी वापसी की ट्रेन साढ़े चार बजे की थी और इस बार मैं स्टेशन वापस पैदल ही चहल कदमी करते पहुँच गया।

ऐतिहासिक जानकारी

रसगुल्ला बंगाल का

–संतोष सिल्पोकर

क्या आप जानते हैं कि ज्यादातर लोगों को पसंद आने वाली मिठाई यानी रसगुल्ला कितने साल का हो गया है? अगर नहीं जानते तो आपकी जानकारी के लिए बता दें कि रसगुल्ले का आविष्कार हुए 150 साल हो गए हैं। एक मिठाई के एकाधिकार को लेकर दो राज्यों के बीच चल रही लम्बी लड़ाई कुछ दिनों पहले ही खत्म हुई है। इस लड़ाई में ओडिशा को हराकर पश्चिम बंगाल की जीत हुई है। उसे इस बात का प्रमाणपत्रा मिल गया है कि रसगुल्ला बंगाल की ही मिठाई है यानी बंगाल से इस मिठाई के बनने की शुरूआत हुई थी। इसे बनाने वाले थे बंगाल के दिवंगत हलवाई श्री नोबिन चन्द्र दास और वहीं से यह देश–दुनिया तक पहुंचा। उन्होंने 19वीं शताब्दी में रसगुल्ले का आविष्कार किया था। यह रसगुल्ले के आविष्कार का 150वां वर्ष है।

बंगाली रसगुल्ला के 150 साल पूरा होने पर डाक विभाग ने सर्वप्रथम रसगुल्ले का आविष्कार करने वाले बंगाल के हलवाई स्वर्गीय नोबिन चन्द्र दास पर एक विशेष डाक टिकट प्रकाशित करने का फैसला किया है।

इसी तरह कई उत्पाद हैं, जिनकी पहचान किसी भौगोलिक क्षेत्र उदाहरण के लिए –शहर, राज्य या देश से जुड़ी होती है। इस पहचान को प्रमाणित करने के लिए भौगोलिक पहचान (GI-Tag) टैग दिया जाता है। इससे पहले दार्जिलिंग को दार्जिलिंग की चाय, वाराणसी को बनारसी साड़ी और तिरुपति को लड्डू के लिए जीआई टैग मिले हुए हैं। अब पश्चिम बंगाल को भी रसगुल्ला के लिए जीआई टैग मिल गया है। जीआई टैग का अर्थ है कि अब कोई कम्पनी अथवा उपयोगकर्ता रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क अथवा किसी अन्य रूप में उस उत्पाद के मशहूर नाम का इस्तेमाल नहीं कर सकता। अब वह केवल उस अधिकृत राज्य/स्थान की सम्पत्तिक पहचान हैं जिसे जीआई टैग दिया गया है।

नबीन चन्द्र दास (1845–1925)

WTO ने 1999 में इससे जुड़ा एक अधिनियम बनाया था जिसका नाम – जियोग्रैफिकल इंडिकेशंस ऑफ गुड्स (रजिस्ट्रेशन एंड प्रोटेक्शन) एक्ट 1999 है। भारत ने 15 सितम्बर 2003 को इस अधिनियम को अंगीकार किया था। WTO किसी भी जगह को GI-Tag देने से पहले संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) की एजेंसी विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन (World Intellectual Property Organization) की इजाजत भी लेता है। WIPO के मुताबिक जीआई

*संयुक्त निदेशक (रा.भा.), पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

टैग वो साइन है जो किसी उत्पाद के लिए दिया जाता है और यह बताता है कि उसका एक खास क्षेत्र से ताल्लुक है। इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी की तरह किसी संस्थान या व्यक्ति से इस प्रॉडक्ट का सम्बन्ध नहीं है।

भारत में जीआई टैग के रजिस्ट्रार का कार्यालय चेन्नै में है। भारत सरकार के इंडियन पेटेंट ऑफिस के साथ मिलकर यह किसी विशेष स्थान और वहां की वस्तु को जीआई टैग देता है। अगर किसी मामले में विवाद होता है, जैसे रसगुल्ला को लेकर ओडिशा और पश्चिम बंगाल में हुआ था, तब वाणिज्य एवं उद्योग मंत्राालय के औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (DIPP) के तहत आने वाले 'सेल फॉर आईपीआर प्रमोशन एंड मैनेजमेंट (सीआईपीएएम) में शिकायत करनी होती है। सीआईपीएएस और इंडियन पेटेंट ऑफिस मिलकर दोनों पक्ष को अपने–अपने दावे प्रस्तुत करने के लिए बुलाते हैं। उन पर सुनवाई होती है और फिर फैसला होता है कि किसके दावे सही है अर्थात् जीआई टैग किसे मिलना चाहिए। इसी तरह डब्ल्यूटीओ हर देश की स्थानीय सरकार के विभागों के निर्देश पर जीआई टैग देता है।

उल्लेखनीय है कि भौगोलिक पहचान का टैग किसी उत्पाद के विशेष स्थान या क्षेत्र को लेकर होता है जो उस स्थान से जुड़ी उसकी विशेष गुणवत्ता को तय करता है। इसमे सबसे अहम बात यह है कि उत्पाद उस स्थान से अपनी गुणवत्ता और ख्याति पाता है।

पिछले वर्ष नवंबर में ही इस लोकप्रिय मिठाई के लिए पश्चिम बंगाल को भौगिलिक पहचान (GI) का टैग हासिल हुआ है। बंगाल की इस उपलब्धि पर डाक विभाग ने नोबिन चंद्र दास पर एक विशेष डाक टिकट प्रकाशित करने की योजना बनाई है।

नोबिन चंद्र दास के परपोते और मिठाई निर्माता कंपनी "के.सी. दास ग्रैंडसंस प्राइवेट लिमिटेड" के निदेशक धीमन दास ने इस कदम का स्वागत किया है।

प्रतीकात्मक तस्वीर

रसगुल्ले की शुरुआत

नोबिन चन्द्र दास के पूर्वज चीनी के व्यापारी थे। 19वीं शताब्दी के आरंभ के दिनों तक उनकी सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी थी। मूल रूप से बर्दवान जिले के रहने वाले उनके परदादा ने कलकत्ता में घर बना लिया था। हुगली नदी के तट पर सूतानाट्टी में बना उनका घर लगभग एक सदी से पहले का माना जाता है। अब काशी मित्रा–घाट स्ट्रीट पर बाग बाजार में है।

चीनी के इस व्यापार में धीरे–धीरे कुछ और बड़े लोगों के आने के कारण 1846 तक उनका यह कारोबार लगभग बंद सा हो गया था। परिवार का आर्थिक संकट बढ़ता ही गया। आखिर में नबीन चंद्र

अपनी शिक्षा अधूरी छोड़ कर नदिया जिले के शांतिपुर में रहने वाले अपने मामा इंद्र के परिवार के साथ उनकी मिठाई की दुकान पर काम करने लगे। उनकी एक दुकान कोलकाता के बागबाजार में चितपुर रोड पर भी थी। एक दिन मामा इंद्र ने बिक्री कम होने पर नोबिन चंद्रा को बहुत अपमानित किया और नोबीन ने खुद ही कुछ शुरू करने के लिए नौकरी छोड़ दी थी। इसके बाद, 18 वर्ष की आयु में, उन्होंने एक करीबी दोस्त से कुछ पैसा लेकर जोड़ासाँको में एक मिठाई की दुकान शुरू की। चीनी–व्यापार के एक प्रतिष्ठित परिवार का होने के नाते आसपास के व्यापारी उन्हें "मोइड़ा" (यानि नकारा और बेकार) कहने लगे क्योंकि उस समय हलवाई के काम को अच्छा नहीं माना जाता था। लेकिन नोबिन अपने घर की स्थिति को देखते हुए, सब कुछ अनसुना कर मिठाई का काम करते रहे।

नोबिन चंद्र को इस व्यवसाय में घाटा होने लगा क्योंकि उन दिनों में, मिठाई की दुकानों का कारोबार काफी हद तक उधारी पर चलता था और नोबिन के पास अपने ग्राहकों को उधार देने और फिर उधारी वसूली के लिए साधन नहीं थे। लेकिन उन्होंने भी हार नहीं मानी और कोई ऐसी मिठाई बनाने पर विचार किया जो अब तक कहीं न बनी हो।

उस समय की सबसे लोकप्रिय मिठाईयों में 'सोंदेश' और 'दाली' थी। "सोंदेश / संदेश" जिसे भीम चंद्र नाग द्वारा बनाया गया था और अपनी मुलायमियत (softness) के कारण खासकर अमीर लोगों में प्रिय थी। इस जैसी कोई मिठाई बनाना आसान नहीं था।

"दाल" मिठाई, चने की दाल के साथ और दूसरे अनाजों को पीस कर बनाई जाती थी। इस मिठाई में विकल्प भी सीमित थे और नवीनता लाना मुश्किल लगा।

नोबिन चंद्र ने इनसे अलग खुद की कोई मिष्टि बनाने पर विचार किया और घर के बने पनीर के छैने से कुछ नया करने का मन बनाया। उन्होंने छैने को मसल कर उसके गोले बनाए और उन्हें चाश्नी में उबालने के बाद ठंडा कर उसी रस के साथ परोस दिया और इसे नाम दिया 'रशोगोला' यानि रस से भरा गोला। यह मिठाई संदेश से भी ज्यादा कोमल थी। बस क्या था देखते ही देखते उनकी दुकान ऐसी चली कि आस–पास के घमंडी व्यापारी जो उन्हें "मोइड़ा" कहते थे इस नए प्रकार की मिठाई से इतने प्रभावित हुए कि वही उन्हें 'रसगुल्ला कोलम्बस' यानि रसगुल्ले की खोज करने वाला कहने लगे। 1866 में ही नबीन चंद्र ने बागबाजार में चितपुर रोड पर ही अपने मामा इंद्र की दुकान के सामने एक दुकान में रशोगोला बनाने और बेचने का हलवाई का काम शुरू किया था।

इस तरह एक नवीनता लाकर नोबिन चंद्र को बंगाल की किंवदंतियों के बीच एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है। आज पूरे बंगाल में मिठाई के क्षेत्र में 'नोबिन मोइडा दी कोलम्बस ऑफ रॉसोगोला' के रूप में याद करते हैं।

इतना ही नहीं, बंगाल के हलवाईयों की पीढ़ियों ने उनकी उपलब्धि के कारण सामाजिक स्वीकृति, सम्मान और मान्यता मिलनी शुरु हुई और उसके बाद तो रसगुल्ला ही रसगुल्ला है।

बिहार

देव का सूर्य मंदिर

—कप्तान प्राण रंजन

आपने देश में कई सूर्य मंदिरों के बारे में सुना और देखा होगा, लेकिन बिहार के औरंगाबाद जिले में देव स्थित प्राचीन सूर्य मंदिर अनोखा है। मंदिर की एक और विशेषता है कि पूरे देश में मंदिरों का प्रवेश द्वार पूरब दिशा की ओर होता है लेकिन यह देश का एकमात्र ऐसा सूर्य मंदिर है, जिसका द्वार पश्चिम की ओर है। देव का सूर्य मंदिर बिहार में सबसे लोकप्रिय मंदिरों में है।

देव का सूर्य मंदिर बिहार का एक उल्लेखनीय धार्मिक स्थल है। सूर्य भगवान की पूजा करने और यहां स्थित ब्रह्म कुंड में स्नान करने की परम्परा युगों पुरानी बताई जाती है। मंदिर बहुत पुराना है और बहुत ही सुव्यिवस्थित रूप से बनाया गया है। इसके डिजाइन को देखने से ज्ञात होता है कि नागा कला के साथ–साथ तत्कालीन अन्य कलाओं का मिश्रण है।

यद्यपि इसमें ओडिशा की स्वरूप नागर शैली का समायोजन किया गया है। मंदिर के निर्माण में नक्काशीदार पत्थरों को देखकर भारतीय पुरातत्व विभाग के अधिकारी इस मंदिर को नागर एवं द्रविड़ शैली के मिश्रित प्रभाव वाली वेसर शैली का समन्वय भी बताते है।

देव, औरंगाबाद के दक्षिण–पूर्व में दस कि.मी. दूर है । इसकी मुख्य संरचना में खूबसूरत नक्काशीदार, पत्थर से पिरामिड आकार का बनाया गया शिखर है।

*भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से सेवा निवृत्त मुख्य सुरक्षा अधिकारी तथा वर्तमान में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम, नई दिल्ली में सलाहकार

देव सूर्य मंदिर, औरंगाबाद

मंदिर का अग्र भाग और आंगन बाद में बनाया गया है। वर्तमान में गृर्भगृह में तीन मूर्तियां (विष्णु, सूर्य और अवलोकितेश्वर यानि बुद्ध) हैं लेकिन यह तीनों ही यहां के प्रधान देव नहीं हैं। मंदिर के बाहर के अग्र भाग में भी प्राचीनकाल की तीन खंडित अर्थात टूटी हुई मूर्तियां रखी हैं क्योंकि भारत में खंडित मूर्तियों की पूजा करना वर्जित है। इन खंडित मूर्तियों में एक सात घोड़ों पर आरूढ सूर्य भगवान की, दूसरी उमा–महेश्वर और तीसरी विष्णु जी की है । एक शिवलिंग और गणेशजी की मूर्ति भी है। मंदिर के भीतरी भाग में एक प्राचीन शिलालेख स्थापित है।

मंदिर का स्वरूप

मंदिर का शिल्प उड़ीसा के कोणार्क सूर्य मंदिर से मिलता है। देव सूर्य मंदिर दो भागों में बना है। पहला गर्भ गृह जिसके ऊपर कमल के आकार का शिखर है और शिखर के ऊपर सोने का कलश है। दूसरा भाग मुखमंडप है जिसके ऊपर पिरामिडनुमा छत और छत को सहारा देने के लिए नक्काशीदार पत्थरों का बना स्तम्भ है।

यहां ऐतिहासिक साक्ष्यों से माना गया है कि उमगा के चंद्रवंशी राजा भैरेंद्र सिंह ने इस मंदिर का निर्माण कराया गया था। देव की इस पवित्र सूर्यभूमि को ऐतिहासिक महत्व का स्थान भी माना जाता है। खंडहरों को देखने से पता चलता है कि यह प्राचीनकाल के राजाओं के समय में मुख्य रूप से राजा जगन्नाथ सिंह के युग में बनाया गया था। उनका साम्राज्य समृद्धि के शिखर पर था। उनका मुख्य प्रशासन केंद्र 'कंचनपुर' गांव में स्थित था, जो देव से लगभग 3–4 किलोमीटर दक्षिण में था ।

मंदिर के आसपास दूसरी जगहें यहां के जंगल और बारा खुर्द गांव के पास बोडला चोटी पर स्थित बाबा सिद्धनाथ का मंदिर पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण हैं। निकट के जंगल में अच्छी हरियाली है और मंदिर ट्रस्ट द्वारा जंगल की देखभाल की जाती है ।

कैसे पहुंचे

हवा मार्ग: निकटम हवा अड्डा गया है, जो वहां से मंदिर 55 कि.मी. दूर है।

रेल यात्रा : औरंगाबाद निकटतम रेलवे स्टेशन है।

सड़क मार्ग : औरंगाबाद के लिए राजमार्ग सहित अच्छा सड़क सम्पर्क है।

कहां ठहरें : औरंगाबाद में अच्छे् बजट होटल मिल जाते हैं। इसके अलावा देव में भी कुछ अच्छे अतिथि गृह हैं।

औरंगाबाद से 18 किलोमिटर दूर देव स्थित सूर्य मंदिर देश की धरोहर एवं अनूठी विरासत है। इसका शिखर करीब सौ फुट ऊंचा है। मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण भगवान विश्वकर्मा ने किया था। छठ पर्व के अवसर पर यहां लाखों लोग भगवान भास्कर की अराधना के लिए जुटते हैं।

इस मंदिर के निर्माण का कोई स्पष्ट प्रमाण तो नहीं मिलता है, मगर ज्ञात होता है कि इस मंदिर का निर्माण डेढ़ लाख वर्ष पूर्व किया गया होगा।

सूर्य मंदिर की नायाब शिल्पकारी

ऐतिहासिक त्रेतायुगीन पश्चिमाभिमुखी सूर्य मंदिर अपनी विशिष्ट कलात्मक भव्यता के साथ–साथ अपने इतिहास के लिए भी विख्यात है। सूर्य मंदिर का शिखर करीब सौ फीट ऊंचा है। इस मंदिर की अभूतपूर्व स्थापत्य कला, शिल्प, कलात्मक भव्यता और धार्मिक महत्ता के कारण ही जनमानस में यह किंवदति प्रसिद्ध है कि इसका निर्माण देवशिल्पी भगवान विश्वकर्मा ने स्वयं अपने हाथों से किया है क्योंकि इतना सुंदर मंदिर कोई साधारण शिल्पी बना ही नहीं सकता। काले और भूरे पत्थरों की अति सुंदर कृति जिस तरह उड़ीसा प्रदेश के पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर का शिल्प है, ठीक उसी से मिलता–जुलता शिल्प देव के प्राचीन सूर्य मंदिर का भी है। देव स्थित भगवान भास्कर का विशाल मंदिर अपने अप्रतिम सौंदर्य और शिल्प के कारण सदियों से पर्यटकों, श्रद्धालुओं, वैज्ञानिकों ही नहीं आम लोगों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है।

मंदिर के निर्माणकाल के संबंध में मंदिर के बाहर लगे एक शिलालेख पर ब्राह्मी लिपि में लिखित और संस्कृत में अनूदित एक श्लोक के मुताबिक, इस मंदिर का निर्माण 12 लाख 16 हजार वर्ष त्रेता युग के बीत जाने के बाद इला–पुत्र पुरुरवा ने आरंभ करवाया था। इस शिलालेख के अनुसार सन् 2017 ईस्वीं में इस पौराणिक मंदिर के निर्माण काल को एक लाख पचास हजार सत्रह वर्ष पूरे हो गए हैं।

पुरातत्वविद इस मंदिर का निर्माण काल आठवीं नौवीं सदी के बीच का मानते हैं। रविवार के दिन चर्तुपूजा करना तथा आद्रा नक्षत्र की तिथि पर इस मंदिर में दर्शन करना बहुत शुभ माना जाता है। यहां से लगभग एक कि.मी. दूर सूर्य कुंड है, जहां अनुष्ठान किए जाते हैं। सड़क के दोनों तरफ दो तालाब बनाए गए हैं जिन्हें रुद्र कुंड (बाएं) और सूर्य कुंड (दाएं) के नाम से जाना जाता है। ऐसी भी मान्य ता है कि इसमें स्नांन करने से कुष्ठ रोग तथा शरीर की अन्य गंभीर बीमारियां दूर हो जाती हैं।

सूर्य की तीनों रूपों में मूर्तियां

देव मंदिर में सात रथों से सूर्य की उत्कीर्ण प्रस्तर मूर्तियां अपने तीनों रूपों अर्थात उदयाचल सूर्य (सुबह), मध्याचल सूर्य (दोपहर) और अस्ताचल सूर्य (संध्या) के रूप में विद्यमान है। पूरे देश में यही एकमात्र सूर्य मंदिर है जो पूर्वाभिमुखी न होकर पश्चिमाभिमुखी है। करीब एक सौ फीट ऊंचा यह सूर्य मंदिर स्थापत्य और वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण है। इसके निर्माण में सीमेंट या चूने–गारे का उपयोग नहीं किया गया है। इसके लिए आयताकार, वर्गाकार, आर्वाकार, गोलाकार, त्रिभुजाकार आदि कई रूपों और आकारों में काटे गए पत्थरों को जोड़कर अत्यंत आकर्षक एवं विस्मयकारी मंदिर बनाया गया है।

सूर्य की पूजा से पूरी होती हैं मनोकामनाएं

देव सूर्य मंदिर देश की धरोहर एवं अनूठी विरासत है। गौरतलब है कि कार्तिक छठ व्रत के दौरान सूर्य नगरी देव आकर छठ व्रत करने की विशिष्ट धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। कहा जाता है कि यहां प्रति वर्ष दो बार कार्तिक एवं चैत माह में छठ व्रत के दौरान छठव्रतियों एवं श्रद्धालुओं को सूर्यदेव की उपस्थिति की साक्षात अनुभूति होती है। यहां प्रति वर्ष छठ के अवसर पर बिहार के साथ–साथ उतरप्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश आदि राज्यों से लाखों श्रद्धालु छठ करने आते हैं।

एक किवदंती के अनुसार यहां छठ पूजा करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इसलिए कार्तिक एवं चैत महीने में छठ करने कई राज्यों से लाखों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। यहां मंदिर के समीप स्थित सूर्यकुंड तालाब का विशेष महत्व है। इस सूर्यकुंड में स्नान कर व्रती सूर्यदेव की आराधना करते हैं।

सूर्य मंदिर से जुड़ी एक कथा .....

सूर्य पुराण से सर्वाधिक प्रचारित जनश्रुति के अनुसार ऐल एक राजा थे, जो किसी ऋषि के शापवश श्वेत कुष्ठ से पीड़ित थे। वह एक बार शिकार करने देव के जंगलों में गए और राह भटक गए। राह भटकते भूखे–प्यासे राजा को एक छोटा–सा सरोवर दिखाई पड़ा जिसके किनारे वे पानी पीने गए और अंजुरी में भरकर पानी पिया। पानी पीने के क्रम में वे यह देखकर घोर आश्चर्य में पड़ गए कि उनके शरीर के जिन जगहों पर पानी का स्पर्श हुआ उन जगहों पर श्वेत कुष्ठ के दाग समाप्त हो गए। इससे आश्चर्यचकित होकर राजा अपने राजसी वस्त्रों समेत ही सरोवर के पानी में लेट गए और इससे उनका श्वेत कुष्ठ पूरी तरह समाप्त हो गया। अपने शरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन देख प्रसन्नचित राजा ऐल ने वहीं वन में रात्रि विश्राम करने लगे और रात्रि में राजा को स्वप्न आया कि इस सरोवर में भगवान भास्कर की प्रतिमा दबी है। कहा जाता है कि राजा ऐल ने सरोवर में दबी मूर्ति को निकालकर मंदिर में स्थापित कराया और सूर्य कुण्ड का निर्माण कराया। लेकिन मंदिर यथावत रहने के बावजूद उस मूर्ति का आज तक पता नहीं है और जो मूर्ति वर्तमान में स्थापित है वह प्राचीन अवश्य है परन्तु ऐसा लगता है मानो इसे बाद में स्थापित किया गया हो। मंदिर परिसर के बाहर जो मूर्तियां हैं, वे खंडित तथा जीर्ण–शीर्ण अवस्था में हैं।

सूर्य भगवान की सबसे अलग तरीके से होती है पूजा.....

मंदिर के मुख्य पुजारी बताते हैं कि प्रत्येक दिन प्रातःकाल ठीक चार बजे भगवान को घंटी बजाकर जगाया जाता है। उसके बाद भगवान को नहलाया जाता है,नए वस्त्र पहनाने के बाद ललाट पर चंदन लगाया जाता है। भगवान को आदित्य हृदय स्त्रेत का पाठ सुनाया जाता है और फिर आरती की जाती है। यह परंपरा आदि काल से चली आ रही है।

मंदिर 6 बजे से शाम 8 बजे तक खोला जाता

है। मंदिर में फोटो लेने की मनाही है ।

बिहार का सूर्य मंदिर है देशी-विदेशी पर्यटकों की आस्था का केंद्र...

बिहार के औरंगाबाद जिले में देव स्थित ऐतिहासिक त्रेतायुगीन पश्चिमाभिमुखी सूर्य मंदिर अपनी कलात्मक भव्यता के लिए सर्वविदित और प्रख्यात होने के साथ ही सदियों से देशी–विदेशी पर्यटकों, श्रद्धालुओं और छठव्रतियों की अटूट आस्था का केंद्र बना हुआ है।

इसके काले पत्थरों की नक्काशी अप्रतिम है और देश में जहां भी सूर्य मंदिर है, उनका मुंह पूर्व की ओर है, लेकिन यही एक मंदिर है जो सूर्य मंदिर होते हुए भी ऊषाकालीन सूर्य की रश्मियों का अभिषेक नहीं कर पाता वरन अस्ताचलगामी सूर्य की किरणें मंदिर का अभिषेक करती हैं।

पूरे देश में देव का मंदिर ही एकमात्र ऐसा सूर्य मंदिर है जो पूर्वाभिमुख न होकर पश्चिमाभिमुख है। करीब एक सौ फीट ऊंचा यह सूर्य मंदिर स्थापत्य और वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण है। बिना सीमेंट अथवा चूना–गारा का प्रयोग किए आयताकार, वर्गाकार, अर्द्धवृत्ताकार, गोलाकार, त्रिभुजाकार आदि कई रूपों और आकारों में काटे गए पत्थरों को जोड़कर बनाया गया यह मंदिर अत्यंत आकर्षक व विस्मयकारी है।

जनश्रुतियों के आधार पर इस मंदिर के निर्माण के संबंध में कई किंवदतियां प्रसिद्ध है जिससे मंदिर के अति प्राचीन होने का स्पष्ट पता तो चलता है लेकिन इसके निर्माण के संबंध में अभी भी भ्रामक स्थिति बनी हुई है। निर्माण के मुद्दे को लेकर इतिहासकारों और पुरातत्व विशेषज्ञों के बीच चली बहस से भी इस संबंध में ठोस परिणाम प्राप्त नहीं हो सका है।

कहा जाता है कि सूर्य मंदिर के पत्थरों में विजय चिन्ह व कलश अंकित हैं। विजय चिन्ह यह दर्शाता है कि शिल्प के कलाकार ने सूर्य मंदिर का निर्माण कर के ही शिल्प कला पर विजय प्राप्त की थी। देव सूर्य मंदिर के स्थापत्य कला के बारे में कई तरह की किंवदंतियाँ है।

प्रतिमाएँ

मंदिर के प्रांगण में सात रथों से सूर्य की तीनों रूपों उदयाचल, मध्याचल तथा अस्ताचल के रूप में उत्कीर्ण प्रस्तर मूर्तियों के साथ ही वहाँ अद्भुत शिल्प कला वाली दर्जनों प्रतिमाएं विद्यमान हैं। मंदिर में शिव के जांघ पर बैठी पार्वती की प्रतिमा है। सभी मंदिरों में शिवलिंग की पूजा की जाती है। इसलिए शिव पार्वती की यह दुर्लभ प्रतिमा श्रद्धालुओं को खासी आकर्षित करती है।

तमाम हिन्दू मंदिरों के विपरीत पश्चिमाभिमुखी देव सूर्य मंदिर देवार्क माना जाता है जो श्रद्धालुओं के लिए सबसे ज्यादा फलदायी एवं मनोकामना पूर्ण करने वाला है।

जागृति हमारी प्रकृति में है

–महात्मा बुद्ध

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार

उड़े देश का आम नागरिक

'उड़ान' योजना के दायरे में अपर्याप्त हवाई सेवा वाले पर्यटन स्थलों के लिए बेहतर हवाई सम्पर्क

भारत में पर्यटक गंतव्यों के लिए बेहतर हवाई सम्पर्क सुविधा सुलभ कराने के लिए पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस ने 17 मई, 2018 को नागरिक उड्डयन मंत्री श्री सुरेश प्रभु और नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री श्री जयंत सिन्हा के साथ एक उच्चस्तरीय बैठक की। इस बैठक में दोनों ही मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

बैठक में यह निर्णय लिया गया कि नागरिक उड्डयन मंत्रालय घाटे वाले किसी भी रूट का आर्थिक उत्तरदायित्व (अंडरराइट) लेगा, बशर्ते कि वह उड़ान योजना के दायरे में नहीं आता हो। यह भी निर्णय लिया गया कि अपर्याप्त हवाई सेवा वाले समस्त गंतव्यों को जल्द ही उड़ान योजना के दायरे में लाया जा सकता है। बैठक के दौरान माननीय पर्यटन मंत्री जी ने खजुराहो के लिए एयर इंडिया की दैनिक उड़ानें शुरू करने, अजंता–एलोरा तक पहुंचने हेतु औरंगाबाद के लिए और अधिक बेहतर सम्पर्क सुनिश्चित करने, कोच्चि–गोवा–जयपुर मार्ग पर त्रिकोणीय उड़ान शुरू करने, कोझीकोड से और ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें आरंभ करने, गुवाहाटी हवाई अड्डे से दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों के लिए अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें शुरू करने, कन्नूर हवाई अड्डे को चालू करने, दिल्ली से कोझीकोड तक सीधी उड़ानें शुरू करने, कोलकाता से शिलांग तक और अधिक दैनिक उड़ानें शुरू करने, वाराणसी के लिए और ज्यादा उड़ानें शुरू करने, अहमदाबाद एवं कोलकाता से श्रीनगर तक सीधी उड़ानें शुरू करने और सिक्किम में नया हवाई अड्डा खोलने का अनुरोध किया। इसके साथ ही यह आग्रह भी किया गया कि जिंदल विजयनगर हवाई अड्डे के लिए और अधिक उड़ानें संचालित की जाएं, ताकि हम्पी तक बेहतर पहुंच संभव हो सके।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने बेहतर हवाई सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए एयरलाइन ऑपरेटरों के साथ सलाह–मशविरा कर इस दिशा में त्वरित कदम उठाने का आश्वासन दिया है ।

पर्यटन राज्य मंत्री एवं इलैक्ट्रोनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस, वाणिज्य एवं उद्योग तथा नागर विमानन मंत्री श्री सुरेश प्रभु और नागर विमानन राज्य मंत्री श्री जयन्त सिंहा तथा अन्य अधिकारीगण ।

भारतीय पाक कला संस्थान के नोएडा परिसर का उद्घाटन

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा इलैक्ट्रोनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के.जे. अल्फोंस ने 27 अप्रैल, 2018 को भारतीय पाक कला संस्थान (आईसीआई) के नोएडा (उत्तर प्रदेश) परिसर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा भी उपस्थित थे।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं इलैक्ट्रोनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री के. अल्फोंस, संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा तथा सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा 27 अप्रैल, 2018 को उत्तर प्रदेश में नोएडा में भारतीय पाक–कला (आईसीआई) परिसर के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्जवलित करते हुए

संस्थान का उद्घाटन करते हुए माननीय मंत्री जी ने कहा कि पिछले वर्षों में पर्यटन क्षेत्र का तेजी से विकास हुआ है। इसमें देश के विभिन्न तरह के खान–पान की बड़ी भूमिका रही है। यह संस्थान आतिथ्य क्षेत्र में मानव शक्ति को एक कुशल विशेषज्ञ बनाने तथा पाक कला में अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहन के संकल्प के अनुरूप है। विश्व के जाने माने शैफ्स के सुझावों के अनुरूप इस संस्थान की परिकल्पना की गई है और आशा है कि यह संस्थान विश्व के एक श्रेष्ठ संस्थान के रूप में उभरेगा।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस 27 अप्रैल, 2018 को उत्तर प्रदेश में नोएडा में भारतीय पाक–कला (आईसीआई) परिसर के उद्घाटन के अवसर पर सम्बोधित करते हुए

संस्थान के ढ़ाई वर्ष के रिकॉर्ड समय में तैयार हो जाने पर पर्यटन मंत्रालय को बधाई देते हुए डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि यह संस्थान अपने किस्म का पहला संस्थान है और यह राष्ट्र का गौरव साबित होगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि संस्थान में पढ़ने वाले विद्यार्थी देश का नाम रोशन करेंगे।

श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव (पर्यटन) ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि विश्व स्तरीय संस्थान के विचार को साकार करने में इस क्षेत्र के विशेषज्ञों, जाने–माने शैफ तथा अधिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि पर्यटन को बढ़ावा देने में पाक कला महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यह संस्थान पाक कला में प्रलेखन तथा अनुसंधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

नोएडा परिसर आईसीआई का दूसरा परिसर है, पहला परिसर तिरुपति, आंध्र प्रदेश में है। नोएडा

परिसर पांच एकड़ जमीन पर बनाया गया है और इस पर कुल 98 करोड़ रुपये की परियोजना लागत आई है। इस भवन को अकादमिक ब्लॉक, वाणिज्यिक क्षेत्र, लड़कों और लड़कियों के लिए अलग छात्रवास, संकाय के लिए गेस्ट हाउस और जल संचयन जैसी अन्य सुविधाओं, एसटीपी की सुविधा के साथ पूरी तरह से विकसित किया गया है। संस्थान ने डिप्लोमा, अंडर ग्रेजुएट, और पोस्ट ग्रेजुएट से लेकर पाककला में अनुसंधान के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम आरंभ किये है। संस्थान में सुसज्जित रसोई प्रयोगशालाएं, सूक्ष्मजीवविज्ञान प्रयोगशाला, व्यंजन थियेटर, प्रशिक्षण रेस्तरां, सुसज्जित कक्षा के कमरे, पुस्तकालय, 400 छात्रों के लिए आधुनिक छात्रवास सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं ।

भारतीय पाक संस्थान (आईसीआई) की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भारतीय व्यंजनों को संरक्षित, प्रलेखन, प्रचार और प्रसारित करने के प्रयासों का समर्थन करने के लिए एक संस्थागत तंत्र बनाना है, भारतीय व्यंजनों के लिए एक आला पर्यटन उत्पाद के रूप में, विशिष्ट विशेषज्ञों की क्षेत्रीय आवश्यकता को पूरा करना, साथ ही व्यंजनों को बढ़ावा देना है।

भारत में, वर्तमान में, अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शेफ बनाने के लिए अत्याधुनिक प्रशिक्षण की कमी है। इस शून्य को भरने के लिए, भारतीय पाक संस्थान संस्थान विकसित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में काम कर रहे उच्चकोटि के "शेफ स्कूल" के समान उपयुक्त प्रशिक्षण मंच प्रदान करेगा।

पहला भारतीय पाक कला संग्रहालय

भारतीय पाक कला संस्थान के नोएडा परिसर में उच्चतम कोटि का एक आधुनिक भारतीय पाक कला संग्रहालय भी बनाया गया है। इसमें ऐतिहासिक और समृद्ध पाक कला की विविध वस्तुएं तथा अन्य साहित्य प्रदर्शित किए जाएंगे। यह भारतीय पाक विरासत को संरक्षित करने के निमित्त एक अद्वितीय मंच प्रदान करेगा।

भारत सरकार ने भारतीय पाक कला संस्थान की इस परियोजना को चालू किया है जो एक अत्याधुनिक संस्थान है और सर्वोत्तम अंतर्राष्ट्रीय पाक संस्थानों के बराबर होने की उम्मीद है। युवा छात्रों के लिए, पाक उद्योग में नौकरियां और आकर्षक एवं संतोषजनक करियर के लिए शामिल होने का यही समय है। भारतीय पाक संस्थान, नोएडा को चालू करके भारत सरकार की इस पहल इस क्षेत्र में अपने करियर बनाने के सपनों को पूरा करेगी। भारतीय पाककला संस्थान पाक कला में डिप्लोमा, स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाता है। स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम जुलाई से शुरू होने वाले अकादमिक वर्ष से प्रारंभ होंगे।

उद्घाटन के समय क्षेत्र के गणमान्य अतिथि भी उपस्थित थे ।

23 से 27 मई 2018 तक

स्पेन के सेन सेबेस्टियन में आयोजित यूएनडब्ल्यूटीओ कार्यकारी परिषद की 108वीं बैठक

माननीय पर्यटन राज्यमंत्री जी मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के शिष्टमंडल के साथ 23 से 25 मई 2018 तक स्पेन के सेन सेबेस्टियन में आयोजित यूएनडब्ल्यूटीओ की कार्यकारी परिषद की 108वीं बैठक में शामिल हुए।

तीन दिन की कार्यकारी परिषद की बैठक में माननीय मंत्री जी ने यूएनडब्ल्यूटीओ की 'कार्यक्रम तथा बजट' समिति की बैठक की अध्यक्षता की। अपने प्रारंभिक संबोधन में माननीय मंत्री जी ने रोजगार सृजन, उद्यम, पर्यावरण विकास और विदेशी मुद्रा अर्जन के माध्यम से सामाजिक–आर्थिक विकास में पर्यटन की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने नवाचार तथा नई टेक्नोलॉजी के प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि पर्यटन सहित प्रत्येक आर्थिक क्षेत्र में नवाचार और प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण हो गए हैं।

माननीय मंत्री जी ने यूएनडब्ल्यूटीओ के महासचिव श्री जुराब पोलोलिकाश्विलि से मुलाकात कर पर्यटन नवाचार और डिजिटल परिवर्तन पर फोकस करने के साथ संयुक्त कार्य योजना विकसित करने के बारे में चर्चा की। इस विचार–विमर्श के दौरान यूएनडब्ल्यूटीओ की कार्य योजना पर भारत की स्थिति पर भी चर्चा की गई। पर्यटन विकास में यूएनडब्ल्यूटीओ को मजबूत एजेंट के रूप में शामिल करने और वैश्विक सार्वजनिक–निजी साझेदारी स्थापित करने के साथ साथ भारत और यूएनडब्ल्यूटीओ के संबंधों को मजबूत बनाने पर भी विचार–विमर्श किया गया। कार्यकारी परिषद ने निर्णय लिया कि संगठन नई चुनौतियों और प्रवृत्तियों से निपटने के लिए पर्यटन क्षेत्र में नवाचार और डिजिटीकरण बढ़ाने पर विशेष रूप से ध्यान देगा।

यूएनडब्ल्यूटीओ पर्यटन क्षेत्र में नवाचार और डिजिटल परिवर्तन पर फोकस करेगा

भारतीय शिष्टमंडल ने पर्यटन तथा डिजिटल परिवर्तन पर विचार–विमर्श में भाग लिया और भारत

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस 23 मई, 2018 को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के महासचिव श्री जुराब पोलोलिकाश्विलि के साथ

पृष्ठ. 85 पर जारी

18 जून से 22 जून 2018 तक

अमेरिका में 'अतुल्य भारत' रोड शो

भारत को "एक आवश्यक गंतव्य" के रूप में दिखाया जाना चाहिए, भारतीय सरकार ने अमेरिका के पर्यटकों को लुभाने और भारत में छुट्टियां बिताने के शानदार विकल्पों के बारे में जागरूक करने के लिए चार अमेरिकी शहरों में रोड शो आयोजित किए।

'अतुल्य भारत' रोड शो न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन, शिकागो और सेंट लुइस में 18 जून से 22 जून तक आयोजित किए गए थे, जिसके दौरान अमेरिका के उत्साही पर्यटकों को भारत के पर्यटन स्थलों के बारे में डिजिटल रूप में बताया गया और विशेषज्ञों और टूर ऑपरेटर के माध्यम से भारत में यात्रा विकल्पों के बारे में सूचित किया गया।

ह्यूस्टन में रोड शो में बोलते हुए माननीय पर्यटन राज्य मंत्री जी ने कहा कि अमेरिका से भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या अगले तीन वर्षों में दोगुनी हो सकती है क्योंकि भारत की यात्रा करना केवल छुट्टियां मनाना ही नहीं है बल्कि यह जीवनभर का एक ऐसा सांस्कृतिक अनुभव है जो तन–मन को तरोताजा करता है। पिछले साल 1.37 मिलियन अमेरिकियों ने भारत की यात्रा की थी और 1.25 मिलियन भारतीय अमेरिका आए थे, इसलिए भी हम इस संख्या को तीन साल में दोगुना करना चाहते हैं क्योंकि अमेरिका हमारा सबसे बड़ा पर्यटन भागीदार है।

भारत में वह सब कुछ है जो किसी भी उत्साही पर्यटक का सपना हो सकता है और यहां आने पर वह देख सकता है कि यहां हिमालय, शानदार वास्तुशिल्प स्मारक, रेगिस्तान, समुद्र तट, बैकवाटर, शाही ट्रेनों की यात्रा, उष्णकटिबंधीय जंगल, प्रदर्शन कला, चित्रकला, ट्रेकिंग, साइकिलिंग, रिवर राफ्टिंग, पैराग्लाइडिंग ही नहीं, चिकित्सा पर्यटन, विविध व्यंजन और जीवंत संस्कृति मौजूद है ।

भारत में पर्यटकों की सुरक्षा के बारे में आश्वस्त करते हुए मंत्री जी ने कहा, "भारत एक बहुत ही सुरक्षित देश है इसीलिए भारत में आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है और उनमें से कई महिलाएं अकेले यात्रा कर रही हैं। दुर्भाग्यवश कुछ मीडिया में कुछ लोगों की अतिरंजित करने की आदत है। भारत 1.3 बिलियन लोगों की 5,000 वर्षीय सभ्यता का देश है और हम देश की पांच हजार साल पुरानी सभ्यता के मूलतत्व की सुगंध दुनिया को दिखाना चाहते हैं। अब हम जो सोचते हैं उस पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, हमारे पास एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, जो बहुत ही बरकरार और जिंदा है, जैसे कि ताजमहल, जो निश्चित रूप से दुनिया का एक आश्चर्य और चमत्कार है। लेकिन हमारे पास ऐसे 35 अन्य शानदार स्मारक हैं, 9वीं शताब्दी के ऐसे मंदिर हैं, जो वास्तुशिल्प के चमत्कार हैं।

ह्यूस्टन रोड शो में, कई भारतीय–अमेरिकी ट्रैवल एजेंसियों के अधिकारियों ने इस अवसर का लाभ उठाया। भारत को "अवश्य आइए" पर्यटन स्थल दर्शाते हुए, इन चार शहरों में किए गए रोड शो ने भारत में निजी क्षेत्र की टूर एण्ड ट्रैवेल एजेंसियों

के लिए अमेरिका में अपने समकक्ष सहयोगियों के साथ 'बी 2 बी' व्यापारिक चर्चाएं आयोजित करने का अवसर प्रदान किया। साथ ही, प्रस्तुतियां देते हुए प्रेस ब्रीफिंग की गई थीं। रोड शो के दौरान, भारत आने वाली जानी–मानी अंतरराष्ट्रीय हस्तियों की विशेषता वाले वीडियो दिखाए गए थे, जिसमें उन्होंने भारत की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के साथ अपना आकर्षण व्यक्त किया है। इन में एम्मा पुट्टिक, जो एक फैशन डिजाइनर है और उन्होंने अपने कपड़ों के डिजाइन के लिए प्रेरणा पाने के लिए कई बार भारत का दौरा किया है। जाने माने पेशेवर गोल्फर कार्ली बूथ है, जिन्होंने भारत में कई गोल्फ कोर्स में गोल्फ खेला है और वह बड़ौदा के महाराजा गायकवाड़ के महल में निजी गोल्फ पाठ्यक्रम में भी शामिल हुए थे।

इस दौरान माननीय मंत्री जी ने 'अतुल्य भारत' वेबसाइट की पुनरावृत्ति का भी उल्लेख किया, जो भारत को एक समग्र गंतव्य के रूप में दिखाती है और उपयोगकर्ता को भारत के त्यौहारों–उत्सवों के साथ ही यहां के आध्यात्मिक अनुभव, विरासत, साहसी पर्यटन, संस्कृति और योग जैसे प्रमुख अनुभवों के बारे में विवरण प्रदान करती है। नई वेबसाइट के लिए आकर्षक चित्रों की एक श्रृंखला ऑनलाइन लाने में, Google कला और संस्कृति के साथ साझेदारी की गई है

पृष्ठ. 83 का शेष

स्पेन के सेन सेबेस्टियन में आयोजित यूएनडब्ल्यूटीओ.....

को डिजिटल रूप से सशक्त समाज, ज्ञान और अर्थव्यवस्था के रूप में परिवर्तित करने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की जानकारी दी। पर्यटन मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन क्षेत्र में टेक्नोलॉजी केवल बिक्री और वितरण के लिए नहीं अपनाई जानी चाहिए, बल्कि डिस्कवरी, प्लानिंग, बुकिंग, कार्रवाई, संचालन तथा यात्रा के बाद संबंध–प्रबंधन में भी इसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

माननीय मंत्री जी ने स्पेन के पर्यटन मंत्री श्री अल्वारो नडाल से भी मुलाकात की। दोनों मंत्रियों ने पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग विशेषकर भारत के प्रतिष्ठित गंतव्यों तथा स्पेन के स्मार्ट गंतव्यों के बीच मेल–मिलाप, पर्यटन टेक्नोलॉजी के लिए उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना, पर्यटन क्षेत्र के पेशेवरों (केन्द्रीय तथा राज्य कर्मचारियों) के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, तीर्थ यात्रा गंतव्यों का प्रबंधन तथा यूनेस्को विरासत स्थलों के प्रबंधन पर चर्चा की।

विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी है, जो सतत तथा सार्वभौमिक रूप से पहुंच योग्य पर्यटन के प्रोत्साहन के लिए उत्तरदायी है। यूएनडब्ल्यूटीओ की कार्यकारी समिति संगठन के गवर्निंग बॉडी का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका कार्य अपने निर्णयों को लागू करने और एसेम्बली की सिफारिशों को लागू करने के लिए महासचिव के साथ विचार–विमर्श करके सभी आवश्यक कदम उठाना है और फिर एसेम्बली को रिपोर्ट करना है। परिषद की बैठक वर्ष में कम से कम दो बार होती है। अगली बैठक बहरीन में होगी।

विरासत को अपनाने की परियोजना के तहत 22 स्मारकों के लिए नौ एजेंसियों को आशय पत्र प्रदान किए गए

पर्यटन मंत्रलय ने संस्कृति मंत्रालय तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा अन्य राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के सहयोग से 24 अप्रैल, 2018 को नई दिल्ली में विरासत को अपनाने की परियोजना के तहत आशय पत्र प्रदान करने के लिए एक समारोह का आयोजन किया। परियोजना के चौथे चरण के अंतर्गत चयन की गई नौ एजेंसियों को माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोन्स ने 22 स्मारकों के लिए आशय पत्र प्रदान किए ।

विरासत को अपनाने की परियोजना– अपनी धरोहर अपनी पहचान, 27 सितंबर, 2017 को शुरू की गई थी। इसका लक्ष्य समृद्ध संस्कृति और प्राकृतिक विरासत को संरक्षित रखना तथा पूरे देश में पर्यटन को बढावा देना है। परियोजना की वेबसाइट के अनुसार अब तक 195 पंजीकरण हुए, जो वास्तव में उत्साहवर्धक हैं। सरकारी, निजी, विद्यालय और यहां तक की व्यक्तिगत स्तर पर भी लोग इस योजना में शामिल होने की इच्छा रखते हैं। 95 स्मारकों में पर्यटक अनुकूल सुविधाओं के विकास के लिए ओवरसाइट एंड विजन समिति ने 31 संभावित स्मारक मित्रों का चयन किया है। प्रमुख विरासत स्थलों में लाल किला, कुतुबमीनार, हम्पी, सूर्य मंदिर, अजंता गुफाए, चार मीनार, कांजीरंगा नेशनल पार्क आदि शामिल हैं। कार्यक्रम में पर्यटन मंत्रालय की सचिव श्रीमती रश्मि वर्मा, महानिदेशक(पर्यटन) श्री सत्यजीत राजन, अपर महानिदेशक (पर्यटन), श्रीमती मीनाक्षी शर्मा तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस ने 24 अप्रैल, 2018 को नई दिल्ली में एक सादे समारोह में आशय पत्र प्रदान किए।

पर्यटन मंत्रालय ने द्वारा अतुल्य भारत पर 360 डिग्री वर्चुअल रियलिटी (वीआर) वीडियो का शुभारम्भ

पर्यटन मंत्रालय ने गूगल इंडिया के सहयोग से 26 अप्रैल, 2018 को अतुल्य भारत पर 360 डिग्री वर्चुअल रियलिटी (वीआर) अनुभव वीडियो लांच किया है। भारत को विविध अनुभवों का एक गंतव्य स्थल बताते हुए माननीय पर्यटन मंत्री जी ने कहा कि भारत पर्यटन का एक ऐसा गंतव्य स्थल है, जो जलवायु, भूगोल, संस्कृति, कला, साहित्य एवं खानपान के अनूठे अनुभव प्रस्तुत करता है। मंत्री महोदय ने आगे कहा कि सरकार भारत के घरेलू पर्यटकों तथा पूरी दुनिया के लोगों को हमारे देश की समृद्ध विरासत में तल्लीन हो जाने का एक अद्भूत अवसर देना चाहती है। गूगल के साथ साझेदारी के माध्यम से सरकार नए और दुनिया के अलग–अलग लोगों को इससे जोड़ कर उन्हें एक अभूतपूर्व तरीके से, भारत को एक अलग विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत करना चाहती है।

समारोह के दौरान बोलते हुए माननीय मंत्री जी ने कहा कि निःशुल्क/निम्न लागत पर आम आदमी तक आभासी वास्तविकता (वर्चुअल रियलिटी) को ले जाने से संग्रहालयों पर फोकस के साथ प्रतिष्ठित स्मारक स्थलों एवं अन्य पर्यटन गंतव्यों पर पर्यटकों की उपस्थिति में वृद्धि होगी। 360 डिग्री में अतुल्य भारत हम्पी, गोवा, दिल्ली एवं अमृतसर की यात्रा के जरिए एक अभूतपूर्व अनुभव प्रदान करता है और उन स्थानों के बारे में सूचना प्रदान करता है जो भारतीय पर्यटन स्थलों को अतुल्यनीय बना देते हैं। इससे संबंधित और अधिक वीडियो https://g.co/incredibleindia पर उपलब्ध होंगे।

वर्चुअल रियलिटी वीडियो के उद्घाटन समारोह में पर्यटन मंत्रालय की सचिव श्रीमती रश्मि वर्मा, गूगल इंडिया के निदेशक श्री चेतन कृष्णस्वामी, गूगल के प्रतिनिधि तथा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

जम्मू एवं कश्मीर की शिक्षा, तकनीकि शिक्षा, संस्कृति, पर्यटन, बागवानी और पुष्पकृषि तथा पार्क मंत्री श्रीमती प्रिया सेठी ने 23 अप्रैल, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस से भेंट की

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंरस 24 अप्रैल, 2018 को नई दिल्ली में भारतीय सांस्कृतिक संस्थान और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्रीमती रश्मि वर्मा, आर्थिक सलाहकार (पर्यटन) श्री ज्ञान भूषण तथा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

मेघालय के मुख्य मंत्री श्री कोनरॉड संगमा ने 3 मई, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस से भेंट की

पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोन्स 05 मई, 2018 को तिरुवनंतपुरम में वेंगानूर पंचायत में ग्राम स्वराज अभियान के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

9 मई,2018 को चीन के वुहान् में शंघाई सहयोग संगठन की बैठक के बाद अन्य प्रतिभागियों के साथ पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस

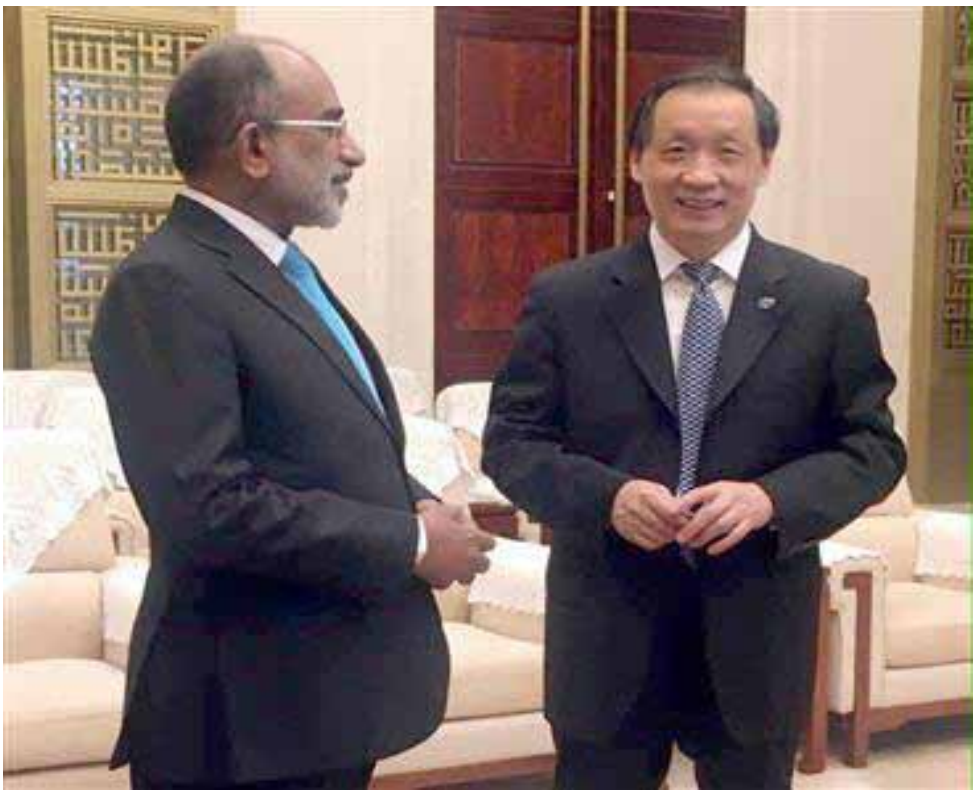

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस 8 मई, 2018 को चीन के संस्कृति एवं पर्यटन उप मंत्री श्री ली जिंझाओं के साथ से चीन के वुहान में भेंट की।

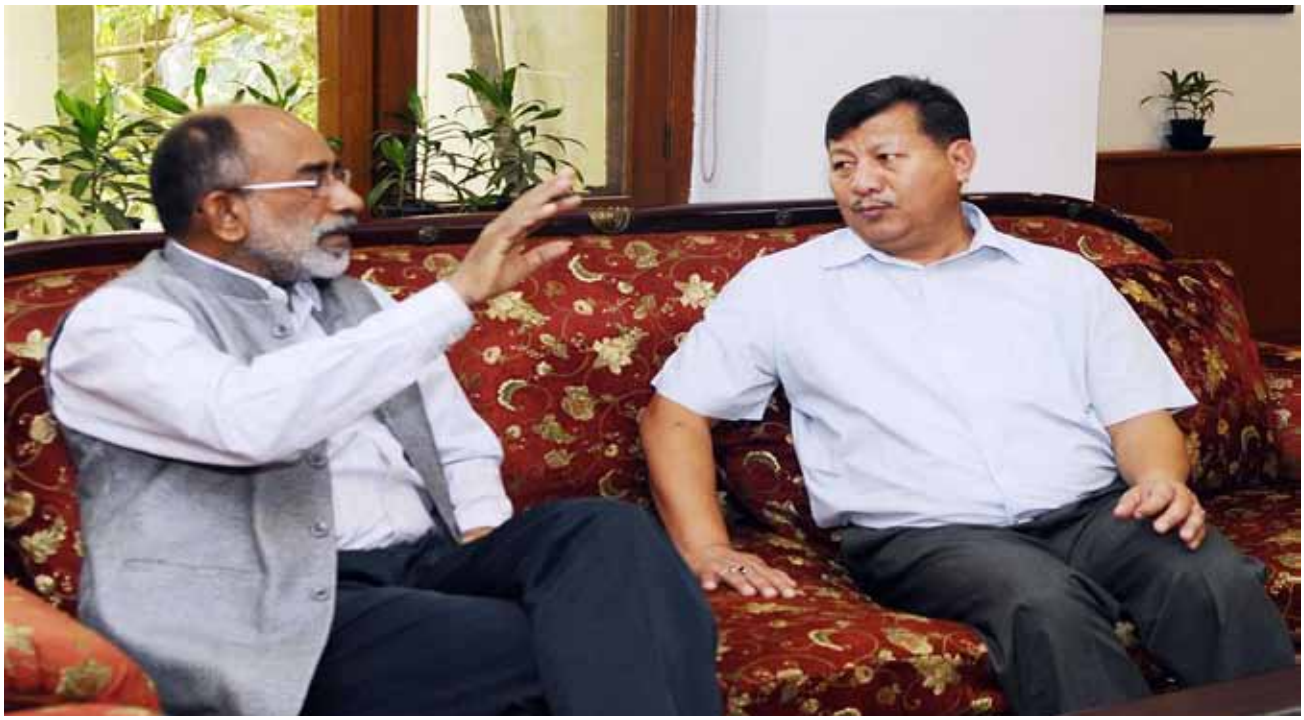

असम के जनजातिय कार्य मंत्री श्री चंदन ब्रह्मा ने 11 मई, 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस से भेंट की

मिजोरम के पर्यटन मंत्री श्री जॉन रोटुआंग्लियाना ने पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस से 29 मई, 2018 को नई दिल्ली में भेंट की ।

अरूणाचल प्रदेश के राज्यपाल ब्रिगेडियर बी.डी. मिश्रा ने पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. अल्फोंस से 30 मई, 2018 को नई दिल्ली में भेंट कर पर्यटन के मुद्दों पर चर्चा की

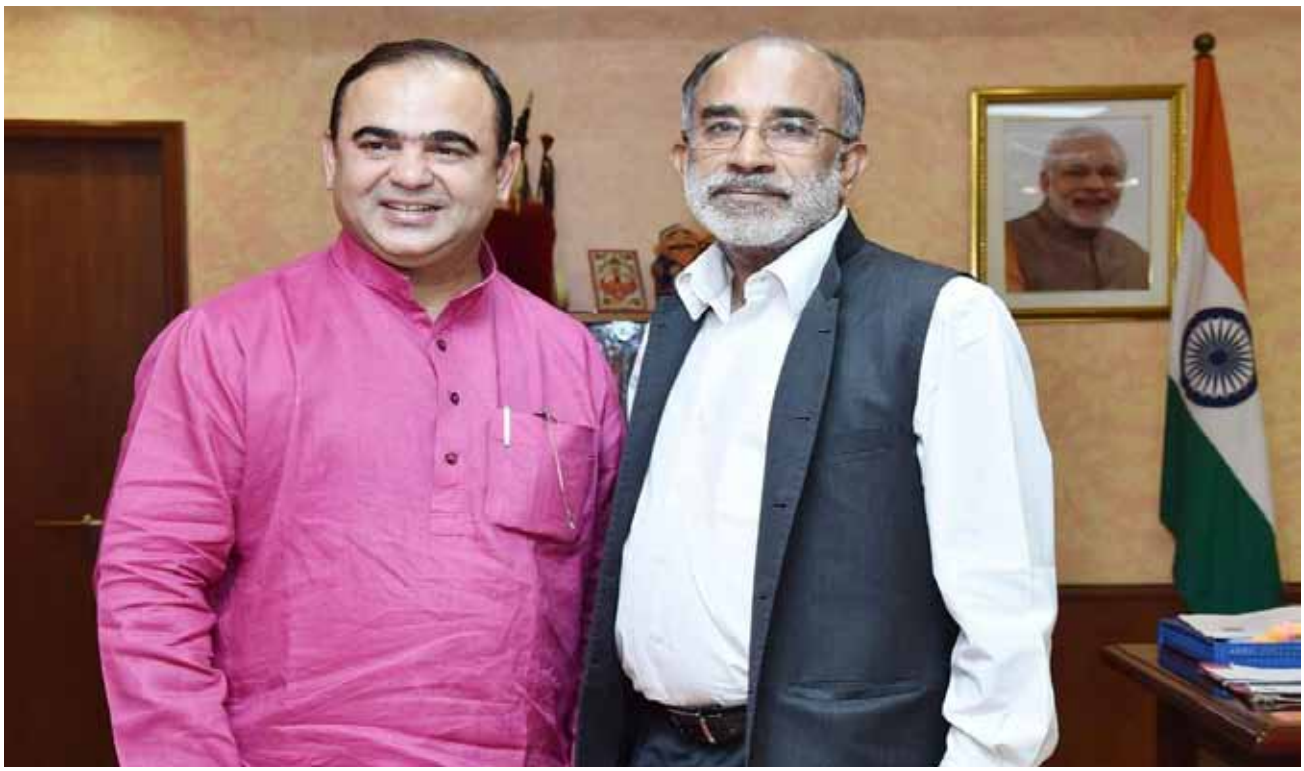

महाराष्ट्र के पर्यटन मंत्री श्री जयकुमार रावल ने पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस से 31 मई, 2018 को नई दिल्ली में भेंट की

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस ने 31 मई, 2018 को नई दिल्ली में एक समारोह में 'इंडियन एडवेंचर टूरिज्म गाईडलाइंस' जारी की। इस अवसर पर पर्यटन मंत्रालय की सचिव श्रीमती रश्मि वर्मा तथा अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित थे

उद्योग एवं लोक उद्यम विभाग में राज्य मंत्री श्री बाबुल सुप्रियो ने 6 जून, 2018 को पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के. जे. अल्फोंस से नई दिल्ली में भेंट की ।

स्वच्छता में योगदान दे

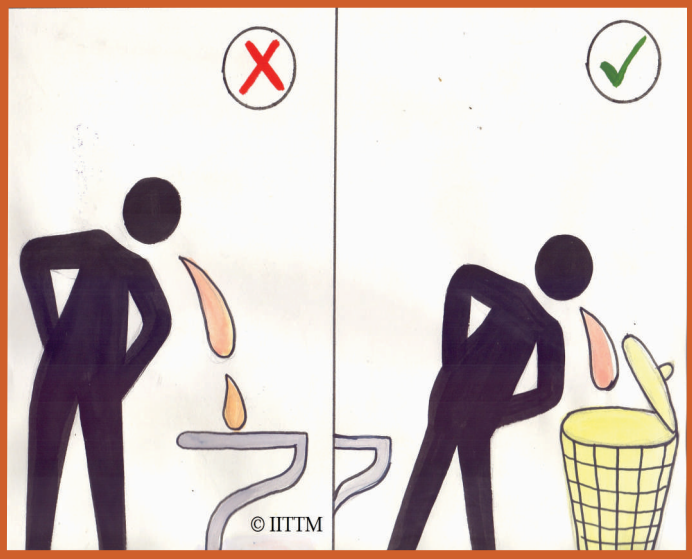

क्या करें

क्या न करें

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंटस,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363 24×7